मानतुंग राजा अने मानवती राणीको रास

नाना दादाजी गुंद,

श्रीमान सरदारचंदजी संतोषचंदजी
सिंघवी नागोर की ओरसे सादर भेट,
"सोजन्यामित्र" छापखाना माहे
छापिने प्रसिद्ध किनो

संवत १९४५

ओ पुस्तक पुना माहे पेठ नानाकी आठे
भाई भगवानदासजी केशरचदजी नाहर.
रकी दुकान उपर मिलसी.

किंमत ६ आणा.

नवीन पुस्तक छपावनीछे

श्रीपञ्चपरमेष्ठीभ्योनमः

श्री जैन धर्म सिध्धात सार पुस्तक

सर्वेश्र जैनधर्मी लोकनि जाहिर करूं छुं की ए पुस्तक छापवानी छे इणमे प्रथम चोविस तीर्थंकरनो दर्शन अनुपूरवनी नवकार मंत्र पंच मांगलीकरुप देवसी रायसी प्रतीक्रमण विधी पखी खामणा चैत्य वंदन विधी शक्र स्तव अरिहंत स्तुती जिन पु जा काउसग्ग करवानो विधी श्रावकमां मनोरथ भगवानमां म गळीक काव्य चोवीस तीर्थंकरनो चोविस ढाळाको स्तवन दान सीळनो चोढाळीयो जीवोत्पत्ती क्षमा छत्तीशी गौतम स्वामीको रास नवतत्त्व विचार इगीभार ढाळनो चोवीस दंडकनो विचार आठे कर्मनो उत्तर प्रकृती सहित नाम नवतत्त्वनो उत्तर भेद स हित नाम चौद मार्गणनो भेद बत्रीश अनंत कायना नाम सा मायाकिक कालमां संक्षेपक प्रमाण इत्यादिक अनेक जुदा जुदा बोल थोकडा तत्त्व ज्ञान रास चोढाळ स्तवन प्रभातीया मंगळीक काव्य छन्द होरीया लावणीया सज्झाउ सघु नव गीर नारनो स्तवन सिद्ध चक्रजीनो स्तवन श्रावकमा आचारनो भी त मिन्न भातनो स्तवन प्रतिबोध उपदेश इत्यादिक आ पुस्तक मा बधाममली १९० ग्रंथ सतावनी मां आवशे तेमाटे आ पुस्त कोने महारा श्रावक धर्म पाळणहार भाइऊ सारु उसेजन आपिने पहेलों आवश्य संग्रह करवा माटे एक एक पुस्तक लेवा सायकडे आपुस्तकोनी अगाऊ सही देणारानें फक्त किमत (सवा रुपया राखीछे)-पुस्तक तयार थया पछी वधी जोरी किंमत राखवामां आवशे

नाला दाद्रामी गुरु पुणे

श्रीकेशरीयानाथायनमः

॥ श्रीमानतुंगराजा अने मानवती राणीको रास लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥ ऋषभजिणंद पदांबुजे, मन मधुकर करि लीन ॥ आगमगुणसौरभ्यवर, अतिआदरथी कीन ॥ १ ॥ यानपात्रसम जिनवरू, तारण भवनिधितोय ॥ आपत रया तारे अवर, तेहनें प्रणिपाति होय ॥२॥ भावें प्रणमुं भारती, वरदाता सुविलास ॥ बावन अक्षरथी भरयो, अखय खजानो जास ॥ ३ ॥ शुक्र करया केई शनीथकी, एहवी जेहनी शक्ति ॥ किम मूकाए तेहना, पदनी कोविद भक्ति ॥ ४ ॥गुरु गुण अगणित कुण गिणे, तारक कवण गणंत ॥ कुण तर्जनीअंगुलिसिरें, धरणी अंबर ।

॥ ५ ॥ अद्वितीय दीपक सुगुरु, करता ज्ञा नप्रकास ॥ पिण हर्ता अज्ञानतम, सेवु त स थइ दास ॥ ६ ॥ जिनआगमवरदा सु गुरु, तेहना प्रणमी पाय ॥ धरमतणा अ धिकारथी, ऋद्धिवृद्धि नित थाय ॥ ७ ॥ द्विप्रभेद ते धर्म छे, आगारी अणगार ॥ व्रत पिण द्वादश पंच तिहां, तेहना विवि ध प्रकार ॥ ८ ॥ मृपावादव्रत द्वितीय ए, मृपातणो परिहार ॥ सत्यवचन आराधिये, तो वरिये शिवनार ॥ ९ ॥ कूट मृपा तज ता थका धरिये इम प्रतिबंध ॥ सत्यवच न ऊपर सुणो, मानवतीसंबंध ॥ १० ॥ अतिहि कौतुकनी कथा, सामलजो चित लाय ॥ मत करजो श्रोता सकल, बधिर गीतनो न्याय ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चापाईनी देशी ॥ मा

नांगुल जोयण एक लाख ॥ वट्टविष्कंभ जं
वूना भाख ॥ जगती आठ जोयण उच्चंत
॥ वार चार धुर ऊवरि दंत ॥ १ ॥ चार
अनुत्तर नामेद्वार ॥ उंचत आठ जोयण वि
स्तार ॥ पंचसयां धनु तिहां वेदिका ॥ ली
जे जोयण सवि देवका ॥ २ ॥ छ कुलगिं
री छे जंबूमझार ॥ सातमो मध्य मेरु वन
धार ॥ क्षेत्र सात वलि तिहां आद्यंत ॥भ
रततणी सीमा हिमवंत ॥ ३ ॥ तेह भर-
तनो जोयणमान ॥ पांचसे छाविस छकला
नाण ॥ बीजा क्षेत्रतणा अधिकार ॥लेजो
शास्त्रथकी सुविचार॥४॥दक्षणभरते मालव
देश॥नहि रौरव वली नही कलेश ॥ अवर दे
साजिम फाणि परखिये॥ एतो माणिसम करी
लेखिये ॥ ५ ॥ तिहां नगरी उज्झयणी ना
म ॥ अमरपुरीके लंका धाम ॥ ए आगल

टंका वापेंडी ॥ लङ्घइती जलनिधिमा प
डी ॥ ६ ॥ स्फटिकरतनतणा जिहा गेह॥
नममडल तजि लखता जेह ॥ नयरी ए
वीट्यो वप्रघट्ट, युवति भातिमनु धरयो
योगपट्ट ॥ ७ ॥ यह ग्रह केतु चपल थई
घणे ॥ मनु सुरग्रहने चपेटे हणे ॥ हाटे
हाटे क्रियाणा घणा ॥ पकपुंज तिहा कुंक
मतणा ॥ ८ ॥ दूढाला व्यवहारी वसे ॥
पकजसरिखा आनन हसे ॥ चन्द्राननी चा
ले चमकती ॥ नेपुर झाझर रमझमकती
॥ ९ ॥ हयगय रथ पायक परिवार ॥ ग
हमह अहनिम रहे दरवार ॥ मानतुगरा-
जा कर राज ॥ मकरध्वजरुपे वह लाज॥
॥ १० ॥ वाचे काछ निकलक नरेस ॥ ज
स भय सव शत्रुविन्श ॥ परिजनने अमृ
तसम जिम्या ॥ खल्न अनलसम अचरि

ज किस्यो ॥ ११ ॥ जनपद सोलतणा नृ
पतणी ॥ पुत्री विलसे प्रीतेघणी ॥ महिप
ति ते स्त्रीये परवरयो ॥ सोल कला लेई
शशी उतरयो ॥ १२ ॥ बुद्धिनिधान सुबु
द्धि परधान ॥ ते ऊपर भुपनो बहुमान ॥
न्यायें राज्य करे भूपाल ॥ इमभणे मोहन
पेहेली ढाल ॥ १३ ॥

दुहा ॥ एक दिन छंदपूरी करी, बेठो
अवनीनाथ ॥ ऊभा सेवक आगले, जोडी
जोडी हाथ ॥ १ ॥ नृत्यकार नाटक करे,
गायनपण करे गान ॥ वंदीजन बोले बि-
रुद, भुंजे पान सुपान ॥ २ ॥ एहवे सिं-
ध्यासमय तिहां, प्रगट्यो रंग असंख ॥
झल्लर झणकारा थया, गरजे घन जिम
शंख ॥ ३ ॥ हयगयरथ वहेता रह्या, गह
मह थई प्रतिगेह ॥ चंचल हुई पदमिनी,

फल्या तस्कर जेह ॥ ८ ॥ दीपकजोति थ
ई सुभग, ठाम ठाम जलकंत ॥ मानु नयरी
नयण करी, नरप तिने निरखंत ॥ ५ ॥ याम
एक गई जामिनी सभा विसर्जी राय ॥ श्रोता
साभलजा हिवे, जे कौतुक इहा थाय ॥ ६ ॥
॥ ढाल बीजो ॥ हमीरानी देशी ॥ म
हीपति मनमा चिंतवे, निरखु नगरस्वरू
प ॥ चतुरनर ॥ परिजनमें इहा माहरो ॥
केहवोछे न्याय अनूप ॥ चतु. ॥ १ ॥ सु
रिजन साभलजो कथा, रसिक थई देई
कान ॥ च ॥ ऊपजसे रस रंगनो, चाख्या
थी जिम पान ॥ च ॥ सु ॥ २ ॥ मुझ
ऊपर माहरी प्रजा, केहवो राखेछे नेह ॥
च. ॥ के छे सरवे स्वारथी, के आज्ञाका
री एह ॥ च ॥ सु ॥ ३ ॥ ऊठ्यो परी
क्षा कारणे, नरपती लेई करवाल ॥ च. ॥

नीलवसन ओढी करी, चाल्यो थई उजमाल ॥ च० ॥ सु० ॥ ४ ॥ चाचर चोहट गलिये भमे. एकलडो नरराज ॥ च० ॥ गलिये गलिये सांभले, निजजसनो आवाज ॥ च० ॥ सु० ॥ ५ ॥ लोक सकल कहे आपणे, राजासमो नहि कोय ॥ च० ॥ वाक्य वच्छल हरिचंद जिस्यो, भुजबलभीम ज्यूं होय ॥ च० ॥ सु० ॥ ६ ॥ आपणी नगरीमे नथी, चौरादिकनी भीत ॥ च० ॥ नवि लिये कोई तृणा पड्यो, रामना राजनी रीत ॥ च० ॥ सु० ॥ ७ ॥ करदंड नही कोइ ऊपरे, दंड देवल अतिचंग ॥ च० ॥ बंधन धम्मिले अछे, ताडना जलघटी संग ॥ च० ॥ सु० ॥ ८ ॥ प्रगट्युं भाग्य प्रजातणुं, राजननी थई रूप ॥ च० ॥ वायहजी लाग्यो नथी, कलियुगनो तनु भूप ॥ च० ॥

सु० ॥ ९ ॥ ए महिपति चिरजीवजो, मत होजो ऊनो वाय ॥ च० ॥ खारे दरीये ज ई पडा, नृपनी अलाय बलाय ॥ च० ॥ सु० ॥ १० ॥ प्रभु एहना मनडातणी, पूरजो नितप्रते आस ॥ च० ॥ लोढाजो एहना सदा, दुरजन थइने कपास ॥ च० ॥ सु०॥ ११ ॥ एह नृपने गुणेकरी खेंच्यो-छे जसनो वितान ॥ च० ॥ तेहने तु त्रिभुवनधणी, मत करज नुकसान ॥ च० ॥ सु० ॥ १२ ॥ एम प्रजाना मुखथकी, जिहा तिहा सुणी वात ॥ च० ॥ मनमें अतिविकसित थयो, जिव जल वर्षें द्रुमपात ॥ च० ॥ सु० ॥ १३ ॥ धन धन ए माहरी प्रजा, मुझ ऊपर धरे राग ॥ च०॥ सहुए वाछेछे भलु, माहरु पूरण भाग ॥ च० ॥ सु० ॥ १४ ॥ मोह नविजयें हे-

जशुं, भाषी बीजी ढाल ॥ च० ॥ कहीस सरस हिवे हुं कथा, सांभलो बाल गोपाल ॥ च० ॥ सु० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ आगल नरपति संचरयो, दीठो कौतुक एक ॥ कन्या पांचमिली भली, व धते रूप विवेक ॥ १ ॥ समरूपे सरिखे गुणे, सरखी वय सोहंत ॥ गोरी गुणणी उरडी, सुरनरमन मोहंत ॥ २ ॥ पहेरी पीतावंर प्रवर, सोल सजी सिणगार ॥ भोली टोलीयें मिली, रमवानें तिणवार ॥ ॥ ३ ॥ कुब्जरूप महीपति करी, निरखे कन्याकेलि ॥ क्रिडा आरंभे हिवे, पंचे गज गति गेल ॥ ४ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ रमतां फाटो घाघरोरे, दसगज फाटो चीररे हूंबे ॥ आवरे उलगा पा तारा कांकणीने जूंब ॥ एदेशी ॥ चरणे

बांधी घूघरारें, फरहरता करी वस्त्ररे वा-
ला ॥ ढलतारे मूक्या शिरथी गोफणाफूदा-
ला ॥ १ ॥ विमल कमललेई विहू कररे, घा
ले हांसि गलबाहिरे दोढी ॥ जाणेरे मतवा
ला मूक्या कलभलारे छोडी ॥ २ ॥ क्षिणमे
पयकरी एकठारे, एकएकना ग्रहे हाथरे कू
दी ॥ मातीरे रस रातीतानी लेवतीरे फूदी
॥ ३ ॥ घाले घुमण घमतीरे, पयतलनी प
डतालरे रूडी ॥ खलकेरे घलकारा हाथे सो
भतीरे चूडी ॥ ४ ॥ गाती गीत सुकठथीरे,
झांझरना झणकाररे रंगें ॥ जाणेरे कहूकी
कोकिल अवने प्रसगें ॥ ५ ॥ एढोएक उ-
भोरहरे चक्रपरें फिरे फेररे थोढो ॥ दोढी
नेले घरी पाणी पयनोज्यु घोडो ॥ ६ ॥ए
वएकन तालो दीयेरे, मटकती फरती हा
मेरे वारू ॥ नमननी जोतें दीपकहार तोते

वारु ॥७॥ नाचे नवनव रीतथोरे, छंद अ
ने उपछंदरे माने ॥ पोहोचीरे नसके कोई
किन्नरीयुं गाने ॥८॥ विस्मय पाम्यो मन्न
मांरे, निरखी एहवो ख्यालरे राजा ॥ आ
लोचे एहवो तिहां आपथी दीवाजा ॥९॥
एहशुं गगनथी ऊतरीरे, आवी रमवा का
जरे रंगें ॥ सहुने सुख होवे वलि येहने प्र
संगें ॥१०॥ टोले मिलिये नाचतीरे, अप
च्छर मिलीने अत्ररे येहवी ॥ बीजीरे सी-
दीजे येहने उपमारे केहवी ॥११॥ नाखी
यें येहने ऊपरेरे, उर्वसीने उवाररे साचे ॥
खेचरीयो सुरनारी बापडीसुं नाचे ॥१२॥
केये पातालनी सुंदरीरे, आवी रमवा का
जरे रेणी ॥ नेतारे नव दीठी येवी कोई म्ट
गानेणी ॥१३॥ आजभले इहां नीसरयोरे
अचरिज जोवा काजरे हुंतो ॥ नहितोये

कौतुक नयणे किह्या थकीरे जोतो ॥ १४ ॥ आज नयण पावन थयारे, वदनमें अमृत बिंदूरे पोधुं ॥ चोरीने कन्याये माहरु मन्न हुरे लीधु ॥ १५ ॥ येहवे रूपें बालिकारे, किम घडी सक्यो किरताररे साथे ॥ येहवीरे लिपी रुडी बेठी क्याथकीरे हाथे ॥ १६ ॥ चिंतवतो इम भूपतीरे, ऊभो समीपें आयरे छानो ॥ साभलतो चित आणी गीत थई येकतानो ॥ १७ ॥ मोहनविजयें रगथीरे, भाखी त्रीजी ढालरे मीठी ॥ कहियेछे सुकथा जेहवी शास्त्रमाहे दीठी ॥ १८ ॥

दुहा ॥ एहवे थाकी बालिका, रामत करीने नाम ॥ खेद खिन्न हुई थकी, बेठी सह एकठाम ॥ १ ॥ मानवती धनदत्ताधिया, निरमी कुमरी मन्न ॥ सोहे एहवी सील जिम, वीटयो हूतो लन्न ॥ २ ॥ रोहिणिना ता

रकपेरे, सोहे कन्यापंच ॥ मांडे अंतरगतत
णी, वाता तजी खलखंच ॥ ३ ॥ नृप जोतो
हरणीपरें. ऊभो निसुणे वात ॥ वातोजे थाय
इहां, सूकी सुणो व्याघात ॥ ४ ॥

॥ढाल चोथी॥नदी यमुनाकेतीर उडेदोय
पंखीया ॥ एदेशी ॥ मानवतीभणी तामवदे
चउबालिका, रेरे सांभल प्राणतणी प्राति
पालिका ॥ रामतमांहे आज विलंब नकीजी
यें, खेली खेल अशेषके लाहो लीजीयें॥१॥
थोडामांहें काज घणो नबिगाडियें, थोडी र
हीछे रेण रमीने गमाडियें ॥ एमेलो एरात
जाये सोहणी जिसी, उठो उतरयो खेद
के ढीलकरो किसी ॥ २ ॥ जायछे आंजनी
राततें कोडिटंका समी, भोली थाए असुर
रहे पोहोचोरमी॥लटका चटकामांहे जेकोई
नमापसे, तो बालापण एहपछें शुं जाणसे

॥ ३ ॥ इमकहे वारवार सखी आदर घणे, मानवती तवतास ईस्या वायकभणे ॥ रे स हीयां किमआज करोहठ एवडो, सहुए य ई एकराग पुठे मुक्ष कापडो ॥ ४ ॥ फोगट भोगवे कोण बाई ऊजागरो, थोडामाहे स वाद हिवेतो मयाकरो ॥ वलि इहा रामत काले रमसु नवनवी, हरणीढली आका- सके वेला वहूइवी ॥ ५ ॥ गीततणा भणका रजो श्रवणे वागसे, सूता लोकसवे इहा झ वकी जागसे ॥ अतिकेसेंज अर्थकरे स्यो फा यदो, आवजो काल ईहायके आपणो वायदो ॥ ६ ॥ मानवती भणीताम चारेचतुरा कहे ॥ हे वेहेनी अमवातने तुंतोनवी लहे ॥ काल आम रो नात उत्सव मडावसे ॥ चारेने वर चार भ ला परणावसे ॥ ७ ॥ परण्या पछे तो होसे रहेवु सासरे अहर्निस वेकर जोडी पीयुने

आसरे॥सासु सुसरो जेठ नणंदी वडीशि
रें, तेहनी लाज अतीव करेवी नहूपरे॥८॥
करवो घरनो काम अहोनिस चडवडी, न
ही परवार लिगार रहे एके घडी॥ चालवुं
मन अनुजाइ सहुसु सुंदरी, परणे भूचरी
खेचरी कोण पुरंदरी॥९॥बालपणाना मि
त्रतणो अलजो सही, रंगमवो जमवारो
खुंणे बेसीरही॥ घुंघटना पटमांहे सदा मु
ख राखवुं, हलवे हलवे कंठथी वायक भा
खवुं॥१०॥नजरथी अध खिणमात्र नमूके
धीऊडो, जिम ग्रहि घाल्यो पिंजरमां शुक
जीवडो॥ तेमाटे सखी आज रमो हुंभरभ
री, मानील्यो मनुहार घणे आदरकरी॥
॥११॥पछे एम मिलीने क्यारे रमसुं वाल
ही, गलिया वृषभतणीपरे बेसी तूंकारही॥
ताहरां सलुणां बोल तेतो नहि वीसरे, तु

क्षमथी रहेवु दूर रखे प्रभुतेकरे ॥ १२ ॥ चो थी ढाल रसाल येकान जगावती, मोहन विजयें रगें कही मनभावती ॥ निसुणी श्रो ता लोक हृदयसुख पामसे साभलनो हि वे मानवती जे बोलसे ॥ १३ ॥

दुहा ॥ मानवती सहीया प्रते, मधुरे व चने वदत ॥ रेरे सुगुण सहेलियो, परण्या कीधो कत ॥ १ ॥ रहेसो नहने सासरे, वहू वारु थई सार ॥ पियूथी रहेसो बीहता, तो धिग तुम अवतार ॥ २ ॥ जो प्रीतमवस की जीये, तो परण्यो परमाण ॥ नहितो जिम करी कूकसे, भरवो पेट अजाण ॥ ३ ॥ गुणव तीने आगले, स्यो बलदाखे नाथ ॥ तिम च ले जिम वालिये, वृपभतणो जेम नाथ ॥ ४ ॥ सुभगो नारी चरित्रनो, कोई नपाम्यो पार ॥ कोटिकोटियुग पचरहे, पोते सरजणहार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ आज धरा हुवो धुंध लो होलाल ॥ एदेशी ॥ साहेलडीहे ॥ मानव तीना सुणी बोलडा होलाल, चतुरा चम कीचार ॥ साहेलडीहे, उलंभा देवाभणी हो लाल ॥ इम कहे थई हुसियार ॥ सा० ॥ मो टा बोलन बोलीयें होलाल ॥ १ ॥ नानामु- खथी एम ॥ सा० ॥ बोलीयें एहवुं वरे पडे होलाल ॥ कहे अणघटतुं केम ॥ सा० ॥ मो० ॥ २ ॥ नारीनो नर आगले होलाल ॥ स्यो आसरो कहेवाय ॥ सा० ॥ कोडिटंकानी मो झडी होलाल ॥ तो पण पहेरवी पाय ॥ सा० ॥ मो० ॥ ३ ॥ कृष्णागर घणुं रुअडो होलाल ॥ पण पावकमांघलाय ॥ सा० ॥ त- टनी घणुं विषमी हुवे होलाल ॥ पण साय रमां समाय ॥ सा० ॥ मो० ॥ ४ ॥ विषधर हु वे घणो वांकडो होलाल ॥ बिलमां सीधो-

होय॥सा ॥एम उखाणा छे घणा होल
ल॥पार न पामे कोय॥सा॰॥मो॰॥५॥
पीयू केम नाये छेतरयो होलाल॥अगें तो
अबला बाल॥सा॰ ॥ दीठे मारग सचरु
होलाल॥पीलें पाय पखाल॥सा॰॥मो॰॥
॥६॥कतनो गायो गायसु होलाल ॥ अ
मचो कामण एह॥सा ॥केवलि वातें रीं
जवु होलाल॥के करी नवलो नेह॥सा॰॥
मो॰॥७॥के भोजन युगते करी होलाल॥
केवली सजिसिणगार ॥सा॰॥केवली गी
तगानेकरी होलाळ॥ करसु मुदित भरता
र॥सा॰॥मो॰॥८॥ चालीयें केम प्राणेश
यी होलाल॥ थइ उपराठा छेक॥सा ॥क
पटें रमीयें तेहथी होलाल॥तो दुहवाये प्र
भु एक॥सा ॥मो॰॥ ९ ॥ पालववाध्यो
जेहथी होलाल ॥ तेहथी किमहुवे कूड ॥

सा० ॥ गरुड आगल लघु चिडकली होला
ल ॥ किहांलगे जाए ऊड ॥ सा० ॥ मो० ॥
॥ १० ॥ त्रटकी मानवती तिहां होलाल ॥
बोली भृगुटी चढाय ॥ सा० ॥ रहोरे बाइ
अण बोलीयुं होलाल ॥ सीकशे वातो ब-
नाय ॥ सा० ॥ मो० ॥ ११ ॥ नारीयु कामण
गारीयुं होलाल ॥ नर बापडा कुणमात्र ॥
सा० ॥ नारीये केइने छेतरया होलाल ॥ सुं
तुमे नवि सुणीवात ॥ सा० ॥ मो० ॥ १२ ॥
उमयाईस नचावीयो होलाल ॥ वलि अहि
ल्यायें सुरेश ॥ सा० ॥ अपछरायें ऋषि भो
लव्यो होलाल ॥ गोपीयें वली गोपेश ॥
सा० ॥ मो० ॥ १३ ॥ युवती जोरावर जोहु
वे होलाल ॥ वालिम थई रहे दास ॥ सा० ॥
पीउनेवश नारी थई होलाल ॥ जनम अ-
लेखें तास ॥ सा० ॥ मो० ॥ १४ ॥ मोहनवि

जयें रगसु होलाल ॥ इमभणी पाचमीढा
ळ॥ सा० ॥ जेजे मानवती कहे होलाल ॥
ते सामले भूपाल॥ सा० ॥ मो ॥ १५ ॥

दुहा ॥ सहीयु मानवती भणी, कहेय-
दि तू परणेस ॥ त्यारें वश करजे पिऊ, कि
म भोळो राखेस॥ १ ॥वलतु मानवती क
हे, ज्यारे परणिस कत ॥ एतीविध त्यार क
रीस, ते निसुणो उद्दत ॥ २ ॥ पीसे चरणो
दक पीयु, जिमसे झुठु अन्न ॥ सहसे दुवा
मस्तकें, करसे कोड जतन्न ॥ ३ ॥ घरसें क
रपढ मुझतणे, इम वस करसु तास ॥जोये
सघला हु करु, तो कहेजो शाबास ॥४॥
ध्यारेकहे हारीअमे, तुझथी माचु मान ॥ इ
मकही उठी ग्रहमणी, पाचे रूपनिधान॥५॥

॥ ढाल छठी ॥दोरी मारी आवेहो रसि
या कढनले ॥ एदेशी ॥ धरणीधव तव घू-

ज्यो सांभली, मानवतीनारे बोल ॥ चतुर नर ॥ किमए बाला इम बोलीगई, एहवा वयण निटोल ॥ च० ॥ १ ॥ सांभलजो हिवे कौतुकनी कथा, चूंपकरी चितलाय ॥ च० ॥ जोजो लिखित लेख नमिटे कदा, करजो कोडि उपाय ॥ च० ॥ सां० ॥ २ ॥ रूपें रूडी पिण कूडी हिये, न्हानी पिण विपकंद ॥ च० ॥ अमृतरूपें विप दिसे अछे, जुवो जुवो एहनारे फंद ॥ च० ॥ सां० ॥ ३ ॥ हुंसतो मनमां घणी राख अछे; मोटी मेरु-समान ॥ च० ॥ हजी ए बाला उच्छरछे हिवे, निठ हुई बिहुपान ॥ च० ॥ सां० ॥ ४ ॥ आवेछे फाण हजी पय पाननां ॥ घालेछे नभबाथ ॥ च० ॥ वांछे सायरतरवो भुजेकरी, अचरिज ए जगनाथ ॥ च० ॥ सां० ॥ ॥ ५ ॥ एकिम पीयुने पाय लगाडसे, त्रट-

की बोलीरे एह ॥ च० ॥ मैंतो पाचमे रूडी गणी हुती, रूपवती गुणगेह ॥ च० ॥सा० ॥ ६ ॥ पिणए रुप देखो नवि राचिये, अधिको गुण सुप्रमाण ॥ च० ॥ काम पडे कांई काम आवे नही, गुणविण टालकवाण ॥ च० ॥ सा० ॥ ७ ॥ दीधी खोड एकेकी रतनमें, दैवे थई निःशक ॥ च० ॥ खारो पयोधि तरुणी करघो आकरो, शशिने दीध कलंक ॥ च० ॥ सां० ॥ ८ ॥ तिमए घणुए वीजे गुणेभरी, पिण अवगुण एक एह ॥ च० ॥ बांगखबोलीने धीठी घणु, निगुणिने निसनेह ॥ च० ॥ सा० ॥ ९ ॥ एहछे पुत्री केहनी किहारहे, जोउं येहनोरे गेह ॥ च छलघल कलकरी साहमु छेतरी, परणु कन्यारे येह ॥ च ॥सा० ॥ १० ॥ पिछेये मुझने जोउ वश किमकरे, किम धुवारसे पा

य ॥ च० ॥ येतो सही में पारखुं पेखवुं, पाडुं खोटीतो हुं राय ॥ च० ॥ सां० ॥ ११ ॥ राजा मानवतीने पूठल, क्रोधथी चाल्योरे जाय ॥ च० ॥ कुवचन होय सहुने अलखामणुं, सुवचन सहूने सुहाय ॥ च० ॥ सां॥ १२॥ मंदिर पोहोती नृप दिठो नही, पोढी सेजे रे तेह ॥ च० ॥ करि सहिनाणी तांबुल पीकतणी, राये धारयोते गेह ॥ च० ॥ सां० ॥ १३ ॥ चंपक पादप घरने आंगणे, कुसुम कुरंभ सुवास ॥ च० ॥ एह सेंधाणी धारीने वल्यो, आव्यो भूप आवास ॥ च० ॥ सां० ॥ १४ ॥ सुखभर सेजें नृप जई पोढीयो, भांखी छठीये ढाल ॥ च० ॥ मोहनविजयकहे तुमे सांभलो, आगल वातरसाल ॥ च० ॥ सां० ॥ १५ ॥

॥ दुहा ॥ नयणेनावे निद्रडी, घटपटि न्

पने चित्त॥ क्षण क्षण हियामे सामरे, मा नवतीनु चरित्त॥ १ ॥आतुर हूवो परणवा, चतुर महीप तिणवार॥ रयणी विहाणी प्रहथया, वर्त्यो जयजयकार ॥ २ ॥ अरुण उदय अबरथयो, भुतलथयो प्रकाश॥ घे नु वलगा वाछरू, कैरव कोध विकास ॥ ॥ ३ ॥ सिंहासन बेठो नृपति, चामर छत्र धरत ॥ खलक मलक खिजमत करे, भाट बिरुद बोलत ॥ ४ ॥ भूपति तेडी सचिव ने. दीधो आदरमान ॥ भाषे वाता रात- नी, हियडु खोली ताम ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमा ॥ करमपरीक्षा करण कुमर चल्यारे ॥ एदेशी ॥ रयणीये आज नयरमा येकलोरे ॥ हुगयो चर्चा हेत ॥ क न्या पाच मेंदीठी क्रीडतीरे, अभिनव वि द्रुम खेत ॥ राजन भाषेरे सचिवने वातडीरे

॥ १ ॥ जेजे दीठी रेण, मंत्रीपिण ते मन मांहे धरेरे, थइने नृपनो सेण ॥ रा० ॥ २॥ कन्या एक धुतारी पंचमेंरे, कडुवा बोलो-रे तेह ॥ वृश्चिक विषथोते घणुं आकरीरे, सुं कहुं घणुं बुद्धिगेह ॥ रा० ॥ ३ ॥ कह्युं तिणे पीयुने पाय लगाडशुंरे, ढुंबे घडशुंरे शीस ॥ एहवां वांकां बोलती बोलडांरे, किम करी वालुंरे रीस ॥ रा० ॥ ४ ॥ एहवां वचन सुणीने मुझनेरे, परण्यानी थइ हूंस ॥ सेजे सुता नींद आवी नहींरे, मुझने ताहरा सूंस ॥ रा० ॥ ५ ॥ तेमाटे तुं पुछत पाधरोरे, पोहोचजे तस आगार ॥ पीकसाहि नांणी भिंते जोयनेरे, वली चंपकतरुद्वार ॥ रा० ॥ ६ ॥ जिम तिम करीने तेहना तातनेरे, भोलवी करजे हाथ ॥ कहेजे ताहरी पुत्री जाचवारे, मूकयोछे महिनाथ ॥ रा० ॥

॥७॥करजे प्राणेपति तु माहरो वतीरे, मा निस ताहरो पाड ॥ जीवित सुधीगुण नही वीसरूरे, पालीस रूडा लाड ॥ रा० ॥ ॥८॥ ए कन्याथी वेधछे वयणनोरे, अवरन वीजो कोय ॥ जोए परणुं ताहरी बुद्धिथीरे तो मुझने सुख होय ॥ रा ॥९॥ वचन सुणीने महीपतिना इस्यारे, वोल्यो अमात्य तिणवार ॥ ए कन्यानो केहो आसरोरे, अ धनीपती अवधार ॥ रा० ॥ १० ॥ एतो मुझथी कारज सहेलछेरे, करिस हु दाय उपाय ॥ कहोतो लावु हरिनी पुरदरीरे, करीने तुम पसाय ॥ रा० ॥ ११ ॥ मणिधर माथे नाचे डेडकीरे ते गारडीने प्रसाद ॥ ईमने उपरे करीने पोठीयोरे सिंहयकीकरे नाद ॥रा०॥ १२ ॥ तिम हुपिण ऊपरयी ताहरेरं, स्यों नकरीसकु काज ॥ तोहु सा

चो सेवक राउलोरे ॥ जो परणावुं आज ॥ रा० ॥ १३ ॥ इम महिपतिने देई धारणा रे, उठ्यो ताम प्रधान ॥ नयर संचरयो मंदिर पेखतोरे, आणी मन अभिमान ॥रा० ॥ १४ ॥ मोहनविजयें भाषी सातमीरे, सुंदर ढालए जोय ॥ मीठी आगल एहथी वात डीरे, सांभलजो सहु कोय ॥ रा० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ सेरीसेरी ढूंढतो, पीकांकित आवास ॥ जाणे मृगकस्तूरीयों, हिंडे लेतो वास ॥ १ ॥ मूके एक मंदिर सचिव, पेसे बीजे ओक ॥ गुणमोताइलनी परे, पामे विस्मय लोक ॥ २ ॥ इम भमतां दीठो तिहां, चंपकतरु सछांहिं ॥ सहिनाणी सघली मिली, हरख्यो घणुं मनमाहिं ॥ ३ ॥ कन्याथकी अधिपति तणे, हुं जोवंतो जेह ॥ ते अनुमाने मानता, निश्चय मंदिर एह ॥ ४ ॥ प्रेरो

महमे धसमसी, दाससहित शुचिअंग॥जि
म प्रतिबिंबे मुकुरमे, आननभूषणसंग॥५॥

॥ ढाल आठमी ॥ अलबेलानी देशी ॥

धनदत्ते दीठो आवतोरे लाल ॥ निजघर
माहे प्रधानरे ॥ रंगीला ॥ चंचलचित्त अ
ति हुड तदारे लाल ॥ जिम हाथीना कान
रे ॥ रंगीला ॥ प्रायें सुंहालो वाणियोरे ला
ल ॥ १ ॥ वोबहु बोलणहाररे ॥ रं ॥ वातो
सो गरणे गलेह्यो लाल ॥ डाह्यो जेह व्या
पाररे ॥ रं ॥ प्रा ॥ २ ॥ धवधव ऊठ्यो
धूजतोरे लाल ॥ छेहडो हाथ विचालरे ॥
रं ॥ पडती धोती पहिरतोरे लाल ॥ खड
खड हसतो आलरे ॥ रं ॥ प्रा ॥ ३ ॥चिं
तवतो मनमा हस्योरे लाल ॥ केम सचिव
मुझ गेहरे ॥ रं ॥ डोसीने घरे वाघलोरे ला
ल, केम समाय एहरे ॥ रं ॥ प्रा० ॥ ४ ॥

हूं व्यापारी वाणिउंरे लाल ॥ एतो नृपनो अंगरे ॥ रं० ॥ धाईने जाई मिल्योरे लाल॥ कारमो करी उछरंगरे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ दीधुं अमात्यने बेसणुंरे लाल॥ भगति युगति करी कोडरे ॥ रं० ॥ तांबूलादि आगें धरयारे लाल॥ ऊभा बेकर जोडरे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ कहो किम स्वामी कृपाकरीरे लाल ॥ मुझ ऊपर धरी प्रेमरे ॥ रं० ॥आज कृतारथ हुं थयोरे लाल ॥ प्रगटी मुझ घर गंगरे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ कोण प्रयोगें पधारियारे लाल ॥ कहो मुझ लायक कामरे ॥ रं० ॥ हुं पदरजछुं रावलोरे लाल ॥ पाम्यो घणुं आनंदरे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ फरमावो कोई चाकरीरे लाल ॥ ते करूं शिरने जोररे ॥ रं० ॥सांडी साकर घोलवारे लाल॥ मुखथी करी नीहोररे॥ रं० ॥ प्रा० ॥

॥ ९ ॥ वचन सुणी धनदत्तनारे लाल ॥ रं ज्यो प्रधान विशेषरे ॥ र ॥ अतिहि आग तस्वागतारे लाल ॥ वलि निपुणाइ पेखरे ॥ र० ॥ प्रा० ॥ १० ॥ सचिव कहे मिलवाम णीरे लाल ॥ आव्याछु अमे आजरे ॥ र ॥ तुमे सज्जनछो सेठजीरे लाल ॥ तुमभणि रूडा काजरे ॥ र ॥ प्रा ॥ ११ ॥ नृप बहु तुम ऊपर कृपारे लाल ॥ राखेछे निसदीस रे ॥ र० ॥ जेहवा साभलिया तेहवारे लाल ॥ दीठा अमे सुजगीसरे ॥ र ॥ प्रा ॥ १२ ॥ माडी माह्ोमाहे वातडीरे लाल ॥ पूछे सचिवजी वातरे ॥ र ॥ कहो व्यापार किस्यो करोरे लाल ॥ केता तुम अगजातरे ॥ र ॥ प्रा ॥ १३ ॥ सेठकहे प्रवहण तणोरे लाल ॥ छे व्यापार कृपालरे ॥ र ॥ पुत्री एक माह्ह रे अछेरे लाल ॥ मानवती सुकमालरे ॥ र०

॥ प्रा० ॥ १४ ॥ सांभलजो श्रोताजनारे ला
ल ॥ आगल वात रसालरे ॥ रं० ॥ मोहन
विजयें रुअडी होलाल ॥ भाषी आठमी ढा
लरे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ कहेप्रधान धनदत्तने, तेपुत्री
छे क्यांहिं ॥ नयणे तेहने निरखियें, तेडा
वो तुमे आंहिं ॥ १ ॥ शेठकहे ते बालिका,
गइ अछे सुणोदेव ॥ भणवा अध्यापकग्र-
हे, जिमवा आवसे हेव ॥ २ ॥ केहो शास्त्र
भणे अछे, तुम पुत्री गुणवंत ॥ जैनधर्म अ
म श्राद्धनो, साधु समीप भणंत ॥ ३ ॥ क-
हे प्रधान तुम धर्मनो, समझावो मुझम-
र्म ॥ श्रवण देइने सांभलो, पामीने सुखश
र्म ॥ ४ ॥ धनदत्तकहे सुण साहेबा, श्रा-
द्धधर्मनो मूल ॥ जेहवो गुरुमुख सांभल्यो,
निसुणो थइ अनुकूल ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ तेतरिया भाई तेतरिया ॥ एदेशी ॥ जीवदया गुणवर्म अमारा ॥ दुहवुनही अभें कोइनेरे ॥ मजन प्रमुख जलवावरियें, भुतलजंतु जोइनेरे ॥ जी.॥१॥ मत्र नवकार जपीजे अहर्निस, भावें दृढ मन राखोरे ॥ एहथी केई नर संपद पाम्या, शास्त्र अछे केई साखीरे ॥ जी ॥ २ ॥ तरणतारण जिन पंचमनाणी, करियें तस पदसेवारे ॥ कर्मसुभटने दूर करेवा शिवपदना सुख लेवारे ॥ जी ॥ ३ ॥ जीवकोइ जो श्रमान महामुनि, तेहना मुखनी वाणीरे ॥ दानादिक अधिकारे भावि, ते सुणियें हितआणीरे ॥ जी ॥ ४ ॥ शास्त्र जिनालय जिननी मूरति, संघ चतुर्विध भव्यरे ॥ ए साते क्षेत्रें वावरियें, शक्ति यथोचित द्रव्यरे ॥ जी ॥ ५ ॥ व्रत पचखाण पोसह

पडिकमणुं, विधिपूर्वकथी करियेंरें, ए सं-
सार असार निहाली, विनयाभ्यास अनु
सरियेरे॥ जी०॥ ६ ॥ पृथिव्यादिकनो जे
आरंभ, थोडो भारते लीजेंरे॥ पूरो आरंभ
निवारीन सकिये, तोपिण थोडुं कीजेरे ॥
जी० ॥७॥ जेहवो जीव पोतानो तेहवो,
परनो पिण जाणीजेंरे॥ द्वादशव्रत धारक
कहेवाउं, परनिंदा नवि कीजेंरे ॥ जी० ॥
॥८॥ मिथ्यामतिने तोनावि मानुं, गोगा-
दिक नवि पूजूंरे॥ कोई जीवने वध बंधन
करतां, देखीने अमे धुजूंरें॥ जी०॥९॥
भेद गहन जिनधर्मतणाजे, नाणी विण
कुंण जाणेरे॥ तत्वज्ञान विण निजनिज म
तने, अज्ञानें मत ताणेरे॥ जी०॥१०॥
अंधपुरुष जिम गजने पेखे, अवयव गज
ने प्रमाणेरे॥ दृष्टिवंत गज पूरण देखे, ति

म नयभेद वखाणेरे ॥ जी० ॥ ११ ॥ एहवा वचन धनदत्तना निसुणी, प्रमुदित हुउ प्र धानरे ॥ वाहवाह भाई धर्म तुमारो ॥ पाव न कीधा कानरे ॥ जी० ॥ १२ ॥ एहवे रम झम करती आवी, मानवती मनरंगेरे ॥ विनयसहित प्रणिपात करीने, बेठी तात उ- छंगेरे ॥ जी० ॥ १३ ॥ लावण्यता सुंदर दे खीने, नृपसेवक इम जाणेरे ॥ न्यायेए कु नरीने ऊपर, नृपति एकगो ताणेरे ॥ जी० ॥१४॥ए कुमरी नृपने परणाविस, चिंतव्युं छे जो कृपालरे ॥ मोहनविजये हेजे भापी, नवमी ढाल रसालरे ॥ जी० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ चकितचित्त हुउ सचिव, रूप निहाली जेह ॥ शु शशिमुख दिसे सही, मुखप्रतिठाना ए ॥ १ ॥ कोटि विरची जो लिखे, पण लिपनो न लिखात ॥ रचित र-

चाणो रूपए, जिम भ्रमराक्षर न्याय ॥२॥ सचिव कहे तव शेठने, रसनां वचन अ- मोल ॥ जोमानो माहरो कह्यो, तो भाखुं एक बोल ॥ ३ ॥ कहियेने मानो नहीं, तो कहवुं ते आलि ॥ कचरामें नाखे कवण, मुख कंचन झालि ॥ ४ ॥ शेठ कहे भाषो प्रभु, जेमुझ लायक काम ॥ हुंछुं राजनो टेलीउ, तुमे स्वामी अभिराम ॥ ५ ॥

॥ढाल दसमी॥ केसरवरणोहो काढ कसुंबो मारालाल॥ एदेशी॥ सेठ पयंपेहो सचिवने आगें ॥ मारालाल ॥ कहेतां तुमनेहो हालसुं लागे ॥ मा० ॥ आव्या मोरेहो इस कां विचारो ॥ मा० ॥ सोजां पाणीहो विणकां उतारो ॥ मा० ॥ १ ॥ एहवो क्यांथीहो आज्य अनारो ॥ मा० ॥ कीजे साहिबहो काम तुमारो ॥ मा० ॥ जेतुमे कहेसोहो ते

अमे करसु॥मा ॥ विगर कहेयीहो मायेन पीरस्युं ॥मा० ॥ २॥ इम अति आदरहो सेठनो जाणी ॥ मा०॥ सचिव तिवारेहो बोल्यो वाणी॥ मा०॥ ए छे विनतीहो सुमग अमारी ॥मा०॥भुपति चाहेहो पुत्री तुमारी ॥ मा० ॥ ३ ॥ आव्योछु कहेवा हो तेहु तुमने॥मा ॥राजी करीनेहो सिखव्यो मुझने ॥मा०॥राजन सरिखोहो होसे जमाई॥मा ॥ईभ्य तुमारीहो पूर्ण कमाई ॥मा० ॥ ४॥पुत्री तुमारीहो होसे सोहेली ॥मा ॥ कोइ वातेहो नहि थाय दोहेली ॥ मा ॥ अवसर एवोहो फिरि नहि आवे ॥मा ॥गान प्रमाणेहो गायण गावे ॥मा०॥ ५॥जेनो वायरोहो उलो लीजे ॥ मा ॥ पिण नृपमेंतीहो हठ नवि कीजे ॥ मा ॥कारज ततक्षिणहो कीजे विचारी ॥

मा० ॥ कंबल भीजेहो तिम होय भारो ॥
मा० ॥ ६ ॥ खोली मनडोहो कहो हूंकारो ॥
मा०॥ नहितर एछेहो नृपति अटारो॥मा०॥
थरक्यो धनदत्तहो निसुणी वाणी ॥ मा० ॥
सचिवने भापैहो कांकहो ताणी ॥ मा० ॥
॥ ७ ॥ नृपथी अलगोहो हूंछुं किवारे॥मा०॥
पुत्रीछे हाजरहो कहेसो जिवारे ॥ मा० ॥ ते
दिन होवेहो जे दिनराजा ॥ मा० ॥ आवे
अंगणहो वधते दीवाजा ॥ मा० ॥ ८ ॥ आ-
सरो केहोहो पुत्री केरो ॥ मा० ॥ बीजो को
इ कहो काज उवेरो ॥ मा० ॥ वस्तु केहीहो
नृपने नघटे ॥ मा० ॥ ते इयां फूलडांहो शि
वने न चढे ॥ मा० ॥ ९ ॥ जावो पधारोहो नृ
पने भाषो ॥ मा० ॥ लगन लेवाडोहो मुहुर-
त दाखो ॥ मा० ॥ चोकस कीधोहो सचि-
वें सगाई ॥ मा० ॥ उठी नृपनेहो दीधी

घाई ॥ मा० ॥ १० ॥ रह्यो महिपतिहो के-
तव गेही ॥ मा० ॥ खटके चित्तनेहा वायक
त्तेही ॥ मा० ॥ तेड्यो पंडितहो लगन नि
हाळी ॥ मा० ॥ करशु राजीहो आछे
ताली ॥ मा० ॥ ११ ॥ भाख्यु भापो
हो पडित जोई ॥ मा० ॥ नीमी आपो-
हो सुलग्न जोई ॥ मा० ॥ खोले पुस्तकहो
लालच वाध्या ॥ मा ॥ जोतिप केराहो पु-
स्तक साह्या ॥ मा ॥ १२ ॥ दूपणविहूणोहो
लगन तेलीधो ॥ मा ॥ भूपे तेहनेहा अति
धन दीधो ॥ मा ॥ आतेसननानोहा गृहे
पोहोचाव्या ॥ मा ॥ पाम्या ढलीयाहो नृप
मन भाव्या ॥ मा ॥ १३ ॥ दर्पपयोधि (द
ये न्पवे ॥ मा० ॥ उत्सव महोत्सव
हो पूरे उपावे ॥ मा ॥ पिण कोई नृपना
हो गुह्य नजाणे ॥ मा० ॥ सहुको साचुहो

करीने प्रमाणो॥मा०॥१४॥ आगले जोजोहो करमनी कांणी॥मा०॥ पिण तेटालेहो वहेसे पाणी॥सा०॥ढालए दसमीहो मन थिर राखी मा०॥सोहनविजयेहो रंगे भाखी॥मा०॥१५॥

दुहा ॥ सेवक नृप आदेशथी, जलासक्तिकृतभूमि ॥ सिणगार्यो पूर विवाहपर, कृष्णागरकृत धूम ॥ १ ॥समियाणा ताण्या भला, तिम तोरण लहकंत ॥ झाणो घंटा घन झंनहीं, केकी नृत्य करंत ॥ २ ॥मृगमद सूधा अरगजा, परिमल करता भूरि॥ घरघर ढोल धमाल अति, नेह सरुदंता तूरि ॥ ३ ॥ कनधजीया जानेमिल्या, केशर मे गरकाव॥ तासा तुरी कुदावता, आलुंदा नरराव॥४॥ धनदत्ते हिवे मंदिरें, मांडयो अतिउछरंग ॥ वहिल सुखासन पालखी, सिणगारया शुच्चि अंग॥५॥

॥ ढाल इग्यारमी ॥ करडो तिहा कोट-वाल ॥ एदेशी ॥ मानतुग महीपाल, जान सजीनेहो परवरया रगशुजी ॥ गुहिरा घु-रेरे निसाण, ताल कसालने भुगल जग-सुनी॥ १॥ गजहलका सोहत,सोवन सागत घोडा घूमराजी ॥ गुडिया गयण गुजेत, आगल ढोढे अलवे ऊवराजी ॥ २ ॥ नृप-शिर सोहे छव, वली शुभपुजित फवतो सेहरोजी ॥ चामर ढले चिहु उर, फरहरतो धागो केहरोजी ॥ ३ ॥ लीधा श्रीफल हाथ, कुंकमतिलके तदुल भावियाजी ॥ इणे आ डबरे राय, धनदत्त शेठने मंदिर आवियाजी ॥ ४ ॥ तोरण मोतियें वधाय, वरकन्या ने चोरियें पधरावियाजी ॥ रति मकरध्वज जेम, रूप उभयना सहुने सोहावियाजी ॥ ॥ ५ ॥ पचामृतनो होम, द्विज वेठा वेद च

र्धा करेजी ॥ वाजे मंगलतूर, गाजे अंबर-
लोकां गहगहेजी ॥ ६ ॥ सोहिला सरले सा
द, गावे गोरियां करगल बाहडीजी ॥ वर
कन्याने शीस, ऊपर कीधी सखरी छांह-
डीजी ॥ ७ ॥ मानवती मनमांहे, हरषे पी
युनां मुखने निरखतीजी॥घुंघटना पटमांहे,
वारंवारें नयणां फेरतीजी ॥ ८ ॥ छेहडा छे
हडी बांधी, फेरिया फेरा चारे चोरियांजी॥
आरोग्या कंसार, दंपतीमुखमां दिये, को-
लियांजी ॥ ९ ॥ भोजनयुगति अशेष, स
हुने संतोषी कीधा वरणागियाजी ॥ बरत्या
जयजयकार, मानवतीने महिपति परणि
याजी ॥ १० अर्थीजनने दान, देई सहुनां
मान वधारियांजी ॥ सुंदरी लेई संग, मान
तुंग राजा महेल पधारियाजी ॥ ११ ॥ पुरि
जन करे प्रशंस, धन्य धन्य कन्या एवर

ने वरयोजी ॥ युगतो जोडो एह, किहाथी ब्रम्हाए पेदा करयोजी ॥ १२ ॥ धनदत्त चिंतवे चित्त, हुई सगाई घणु मनमा गमीजी ॥ नृपसरिखा जामात, छे हिवे माहरे सानी कमीजी ॥ १३ ॥ गिरुइ ग्राहिये जोवाहिं, तो सवि वातो रुडी थइ रहेजी ॥ आसरे नागरवेलि, पत्र पलासनो नृप कर लइ चढेजी ॥ १४ ॥ नीच सरीसी गोठ, किहा लगें कीधी आखर थिर रहेजी ॥ जिम उन्मत्त खरनाद, ऊचो ऊचो केतोक निवहेजी ॥ १५ ॥ मुझ पुत्रीनो भाग्य, हुई नूपनी रूडी अतेउरीजी ॥ इम फूले मनमाहे, भत्रक धनदत्त वेठो फिरि फिरीजी ॥ ॥१६॥ पिण महिपतिनी वात, कोई डाह्या पिण जाणे नहीजी ॥ एह इग्यारमी ढाल, मोहन विजयें भलि ढलकती कहीजी ॥ १७॥

दुहा ॥ मानतुंग महिपति हिवे, मंदिर में मनरंग ॥ मानवती माननी सहित, बेठो धरि उछरंग ॥ १ ॥ मानवती निज मन थकी, हरखे पियुमुख पेख ॥ द्रुमकरयणने न्यायपरें, वहे आश्चर्य विशेष ॥ २ ॥ किहां राजा किहां वणिक धुय, किहांथी मेलो एह॥ए साचुंके सोहणो,लिखित लेख थयो तेह ॥ ३ ॥ पियुने हुं गुण दाखवी, वशकरी राखिस हाथ ॥ एह सलूणी गोठडी, जो मेलीछे नाथ ॥ ४ ॥ एकण वक्रकटाक्षमें, पाडिश प्रेमने पास ॥ वेधालूने वेधतां, वार न लागे तास ॥ ५ ॥ एहवी मन अस्या धरे, मृगनयणी तिण वार ॥ सांभलजो सहु ए जना, जे करशे किरतार ॥ ६ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ हो कोई आणमिलावे साजना ॥ एदेशी ॥ नृप नयण नमेले नार-

थी, नकरे वलि मनोहारहो ॥ थई रह्यो चि त्रतणीपरे, मुखे नकरे वात लिगारहो ॥ नृप० ॥ १ ॥ जिम फणिधरने गारुडो, खिले मत्रप्रभावहो ॥ जिमरहे वेसी करडमे, तिम थई रह्यो नररावहो ॥ नृप० ॥ २॥ कोपें दग वाकी करी, रमणीथी थयो रूठहो ॥ प्रीतम मन चोरी करी ॥ वाली बेठो पुठहो ॥ नृप० ॥ ३ ॥ मानवती चित्त चिंतवे, कत न मले का मीटहो ॥ रसमा अनरस काकरे, फेरी का बेठो पीठहो ॥ नृप० ॥ ४ ॥ शु काई मुजमा वालहे, दीठो अवगुण कोयहो ॥हजी नथी मुझशु बोलतो, सहि छहा कारण होयहो ॥ नृप० ॥ ५ ॥ आजथी माट्यो एहवो आगल केम निवहायहो॥ प्रथम ज कवले मक्षिका, ते भोजन किम खवायहो ॥ नृप० ॥ ६ ॥ करजोडी कहे कामि-

नी, अहो अहो प्राणआधारहो ॥ किम तु
मे आमणदूमणा, दिसोछो केणे प्रकारहो
॥ नृप० ॥ ७ ॥ हुंछुं कनडी राउली, मुझऊ
पर स्यो रोपहो ॥ वाड भखे जो जीभडां, तो
केहने दीजे दोषहो ॥ नृप० ॥ ८ ॥ आवी व
लगी हुं पालवे, तेकिम अलगी थायहो ॥
तेहने ठेली नाखतां, परमेश्वर दुहवायहो
॥ नृप० ॥ ९ ॥ बोलो नाह मयाकरो, कहुं-
छुं विछावी गोदहो ॥ धीरज हुं नधरी स-
कूं, उपजावो आमोदहो ॥ नृप० ॥ १० ॥
कटकीसी कीडी ऊपरे, तृण ऊपर स्यो
कोठारहो ॥ सांहमु जूवोरे साहिबा, जो बु
द्धि दिये किरतारहो ॥ नृप० ॥ ११ ॥ अ
बलानो बल केटलो, तुम आगल महाराय
हो ॥ पाय पडुं करुं वीनती ॥ पियुने घ-
णुंशुं कहेवायहो ॥ नृप० ॥ १२ ॥ वचन सु

णी रनितातणा ॥ वोलमे हिमे महीपाल-
हो ॥ मोहनविजयें सोहामणी, छमभणी बा
रमी ढालहो ॥ नृप० ॥ १३ ॥

दुहा ॥ मानतुग माननीतणा, वेघाला
सुणि वयण॥ बोल्यो तव हसिने तदा, अ
रुण करी दो नयण ॥ १ ॥ साभलजे तू हे
प्रिया, आजनी एनथी रीश॥ में तुझने क
पटे करी, परणी धरी जगीश ॥ २ ॥ हि-
वे चरणोदक पावजे ,देजे झूठु अन्न ॥ ता
हरे पाय लगाडजे ॥ करजे जाण्यो मन्न॥
॥३॥ उछ किसी मत राखजे, पूरजे सघ-
ली हूम ॥ जो मुझने वश नहिकरे, तो तु
झने मुझ सूम ॥ ४ ॥

॥ढाल तरमी ॥ प्रितडी न कीजेरे ना
री परदेसीयारे॥एदेशी॥ प्राणजीवननारे
निसुणी बोलडारे, चमकी चतुरा तिणवा

र॥ पीउडे निहेजेरे वात एसीकरीरे ॥ हैहै सरजणहार ॥ नाहलीउ निहेजेरे थइरह्यो नारथीरे॥ १ ॥ नवि हुं मनाव्योरे जाय ॥ मनविण मायारे किम करीने हूवेरे, अवला आकुल थाय ॥ ना० ॥ २ ॥ रे विधि मुझनेरे कंतकां मेलव्योरे, निसनेहीने निटोल ॥ आगल निगमसुंरे दिनडा किणपेरेंरे, पीयुने एहवेरे बोल ॥ ना० ॥ ३ ॥ सुरतरु जाणीरे बाथ भरीहतीरे, पिण थई निवड्यो बंबूल ॥ जोजो करमतणीगती माहरीरे, वालो थ-यो प्रतिकूल ॥ ना० ॥ ४ ॥ मनमां आश्यारे मेरुजिसी हुंतीरे, पीयुंथी करीस विलास॥ दैवअठारोरे देखी नवि सक्योरे, पयनी कीधीरे छास ॥ ना० ॥ ५ ॥ छयल छबिलेरे मुझने छेतरीरे, परणी थईने कठोर ॥ सींचि इणेरे कूपक अन्दरेंरे, कापवा सांडीरे दो

र॥ ना ॥६ ॥ केशु वेरणरे किणाहिक आ
वीनेरे, इमभभेरच्यो कत॥ एकहु केहनेरि दु'
खनी वातडीरे, कोइन दीठो सत॥ ना. ॥
॥ ७ ॥ लाखीणो करीनेर हुतो लेखतीरे,
पामी नृप प्राणेश ॥ पिण इण वालेरे पेहे
लीज वाजीयेरे, देखाड्यो करीवेश ॥ ना.॥
॥ ८ ॥ राजा मित्रन होव केहनारे, तेसवि
साचीरे वात्त ॥ मुझने एहभणी परणावता
रे, पानारियो मुझ तात ॥ ना ॥ ९ ॥ जो हु
बुरथीरे एह गति जाणतीरे, तो सारतो
विणनाह॥ रहेती कुआरीरे पिण परणात न
हीरें, एहवो दुस्तर दाह ॥ ना० ॥ १० ॥ जे
पुवर्तीनेरे सुख नाहि स्वामिनोर, जीव्यो
तस अप्रमाण ॥ राजा मुझथीरे रूसीने र
ह्योरे, ते हु पुलु विन्नाण ॥ ना ॥ ११ ॥ क
हो का प्रीतमर मन मलो नहीरे, एहवा

मुझनो स्यो बंक ॥ खोले घालोरे जे गुन-
हो होवेरे, भाषो थईने निःशंक ॥ ना० ॥
॥१२॥ मुझने धुरथीरे परहरवी हुतीरे,तो
मुझ परण्यारे केम ॥ हिवे तुमे एहवारे मु
जने वालहारे, मेंणा द्योछोरे एम ॥ ना० ॥
॥१३॥ नाह कहे अमें जूठन जंपियेंरे,खो
टुं केम कहेवाय ॥ वचन संभारोरे तुमे क-
ह्यां हतांरे. रामतमा रसलाय ॥ना० ॥ १४॥
कह्या हतुं वृषभतणीपरे नाहनेरे, फेरसुं घा
लीरे नाथ॥तेमें सघलारे वचन ते सांभ
ल्यांरे, तेहथी थयो हुंनाथ ॥ ना० ॥ १५ ॥
मानवतीना उघड्या कांनडारे, नृपतनी
निसुणीरे वाण ॥ अंतरजामी एसाचूं कह्यु
रे, सीहित्रे ताणोताण ॥ ना० ॥ १६ ॥ मान
वतीना पुण्यतणे बलेरे, होसे मंगलमाल॥
मोहनविजयें इसभणी प्रेमसुंरे, सुंदर ते-

रमी ढाल ॥ ना० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ मानवतीकहे रायने, अहो जीव आधार ॥ रामत माहे वयणए, कह्या हसे अविचार ॥ १ ॥ एहवे वयणे वल्लहा, नवि राखीजे रोस ॥ मूक्यो आवीने हिवे, खोले ताहरे सीस ॥ २ ॥ विश्वासी परणी तुमे, हिव दियोछो छेह ॥ ए पातक किहा छूटसो, हृदय विचारो तेह ॥ ३ ॥ मुझसुंका थोडे गुने, नेहविणासो कत ॥ गोद बिछाइने कहु, मतलिजो अबला अत ॥ ४ ॥ जिम जिम लागुहु पगे, तिमथाओछो वीर ॥ लोहा बलता ऊपरे, किम छाटोछो नीर ॥ ५ ॥ तेगो राखो मियानमा, करो विचारी काज ॥ न हिचाले नारीथकी, मूठ भली वछराज ॥ ६ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ वीछीयानी देशी ॥

हारेलाल वालाना सुणी बोलडा, चमक्यो

भूप तिवाररे लाल ॥ जाणीयें मूक्यो आ-
करो, केणे खंध ऊपर जेम खाररे लाल ॥
लहिणुं लहिये आपणुं ॥ १ ॥ एहमा नही
मीनने मेषरे लाल ॥ जोमन तूं जाणे वृथा,
तो तूं परगट पेखरे लाल ॥ ले० ॥ २ ॥ त्रिव
ली निलाडे आरोपिने, बोल्यो नृप कडुवा
बोलरे लाल ॥ कहेरे कहे नर आगले, त
रुणी ते केटले तोलरे लाल ॥ ले० ॥ ३ ॥
नरजे चाहे तेकरे, लीये लंका जेहवा को
टरे लाल ॥ सिंह सरिखाने हणे, मयगल
ने करे लोटपोटरे लाल ॥ ले० ॥ ४ ॥ देवदा
नवने वश करे, जलउपर बांधे पानरे ला
ल ॥ गिरिवरने नर फेरवे, वलि भांजे अ
रियण सानरे लाल ॥ ले० ॥ ५ ॥ नारी दा
सी नरतणी, जाणे सहु संसाररे लाल ॥
जो नर मूके हाथथी, तो नारीने कवण आ

धाररे लाल॥ ले०॥ ६ ॥ आयउपाय करी घणा, नारीनो नर भरेपेटरे लाल ॥ नारी विचारी बापडी, करे घरनोकारज नेटरे लाल॥ ले ॥ ७ ॥ पियुथी विगानी ज ति या, तेहनो मुख किम देखायरे लाल ॥ घ णु ए भली कचनछुरी, पिण पेटेन मारी जायरे लाल॥ ले. ॥ ८ ॥ तू जोरावर जग तमा, थई दीसेछे नारी पेदासरे लाल ॥मु खजो ताहरु बापडी, जे पीयुने करीस तु दासरे लाल ॥ ले ॥ ९ ॥ नरसु नजायो चक्रपणो, जे रात्वीस पीयु करीदासरे लाल ॥ खोटी पाडू जो तुझने, तो देजे मुझ सा बासरे लाल ॥ ले० ॥ १० ॥ चिंतव मा- नवनी तदा, पीयनी सुणी वातो आमरे लाल ॥ पडमा पेठो नाचवा, हिवे घुघटनो स्यो कामरे लाल ॥ ले० ॥ ११ ॥ बोली

प्रिया प्रीतमप्रतें, इम निपटन छेडो नाररे लाल॥नारीचारित्रने देवनो, किणहिन पायो पाररे लाल ॥ले०॥१२॥ जेकाम होवे नारी थी, ते नरथी, नवि थायरे लाल ॥ नरतो बिगारी मजुरिया, नित नारी आगल कहियरे लाल ॥ ले० ॥ १३ ॥ नारीकहे जे मुखथकी, ते किमही खोटुं केम थायरे लाल ॥ मयंगलदंत जे नीसरया, ते पाछा न समायरे लाल ॥ ले० ॥ १४ ॥ नारी जाणमुजने तुमे, छोडोछो निपट जदायरें लाल॥ पाय लगाडुं तुमभणी, तो मानजो मुजरो रायरे लाल ॥ ले० ॥ १५ ॥ तो हुं मानवती खरी, जो हुं बोल्या पालुं बोलेर लाल ॥ उछ तुम्हेमत राखजो, अह्मनाह निगुण निटोलरे लाल ॥ ले० ॥ १६ ॥ आगलजे होवे वातडी, ते सुणजो बालगोपाल-

रे लाल ॥ मोहनविजयें हेजथी, भाषी अ भिनव चौदमो ढालरे लाल ॥ ले० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ सुणी वचन वनितातणा, मन चिंतें महिपाल ॥ तेडाव्यो तव सचिवने, भा पे वचन विशाल ॥ १ ॥ अधुना ऊघाडो ज ई, एकथभो आवास ॥ सजल सरोवर जि हा अछे, तिहा जई करसु विलास ॥ २ ॥ अश न वसन घृत गुडभरो, ततक्षण तिणहि- ज गेह ॥ सचिवे तिमहीज सविकरी, आ ज्ञा सोंपी तेह ॥ ३ ॥ मानवतीनो कर ग्र- ही, नृप पोहोता तिण गेह ॥ वेसारी ति हा नारिने, गीरा पयपे एह ॥ ४ ॥ इहां र हेजो एकाकिनी, करजो विविध आहार ॥ प्रतिवरसे लेसु खबर मतकरिस फिकर लिगार ॥ ५ ॥ पिण तु पाय लगाडजे, मु- झने करजे दास ॥ वचन रखे तु वीसरे, हो

ती रखे उदास ॥ ६ ॥ इम कही ते घरबा रणें, यंत्र समर्पी भूप ॥ पोहोरायत परठी तिहां, आव्यो गेह्र अनूप ॥ ७ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ आछे लालनी देशी ॥ विरहिणी नारी तेह, रहि एकथंभे गेह॥ आछेलाल ॥ निंदे पुरातन कर्मनेजी ॥ पाप आलोवे ताम, त्रिकरण करिने ठाम ॥ आ० ॥ मनमां धरी जिनधर्मनेजी ॥ १ ॥ एकेंद्रियादिक जीव, दुहव्या होसे सदैव ॥ आ० ॥ के तिलयंत्रमें भावियाजी ॥ के कोइने करी रोष, दीधा कूडादोष ॥ आ० ॥ के खत खोटा लिखावियाजी ॥ २ ॥ पय पीतां लघु बाल, मातथी लीधा उदाल ॥ आ० ॥ के कीडी बिल पूरियाजी ॥ व्रत लेई थइ शिष्य, कीधा भक्ष अभक्ष ॥ ॥ आ० ॥ के कंदादिक चूरियाजी ॥ ३ ॥ पा

पकर्म फल तेह, उदये आव्या एह॥आ ॥ कर्म करयां छूटे नहीजी ॥ एसवि आपणो वक, एहमा नहि काइ शाक॥ आ. ॥ इम आलोचे रही रहीजी ॥४॥रेरे सरजणहार, पियुविरहिणी थइ नार॥ आ॰ ॥ एहवा कीम लिख्या अक्षराजी ॥सी चोरी तुम्ह कीध, वालिम विरहो दीध॥ आ ॥ एतुज लखणन सखराजी॥ ५॥ नारितणो अव- तार, का दीधो किरतार॥ आ ॥ पीयुडो का एहवो मेलव्योजी ॥ मात पिता रह्या दूर, पीयू पिण नही हजूर ॥ आ ॥ स्यो तुज ग्रास मे भेलव्योजी ॥ ६ ॥ मात पि- ता सुविशेष, राखता गोद हमेस॥ आ ॥ ते पिण मूकी किहा गयाजी ॥ अवला ए काकी एह, नाखी इणे गेह॥ आ ॥ प्रभु तुझने नावी दयाजी॥ ७ ॥ कुलगुरु गोत्र

ज देव, जेहनी करती सेव ॥ आ० ॥ ते-
पिण किहां गया इणसमेजी ॥ हिवे कांई उ
पावुं वुद्ध, बेठी मंदिरमुद्ध ॥ आ० ॥ नाह नि
ठुरकिणपरे नमेजी ॥ ८ ॥ स्युं हिवे विलपवुं
आम, धैर्यतणुंछे काम ॥ आ० ॥ रोयां रोज-
न पामियेजी, इहां कुण करीसके भीर, ज
स दूखे तस पीर ॥ आ० ॥ तप करुं जिम
दुःख वामियेजी ॥ ९ ॥ मांड्यो तप बहु भं
त, नवपद सुभग जपंत ॥ आ० ॥ मन दृढ
करी तिण मेहेलमेंजी ॥ जेहने धर्म सहाय,
आपद विलये जाय ॥ आ० ॥ चाहे तेलहे
सेहेलमेंजी ॥ १० ॥ जोतां इण संसार ॥ अ
डवाडिया आधार ॥ आ० ॥ धर्मछे भीरु भा
गातणोजी ॥ पापी नतरे कोय, करीदेखो
सहुको ॥ आ० ॥ धर्मथकी जसजय घणोजी ॥
॥ ११ ॥ प्रतिक्रमणां बिहु टंक, साकर

ई निसक ॥ आ ॥ सामायिक व्रत साचवे जी ॥ नृपने लगाडवा पाय, आलोचे आय उपाय ॥ आ० ॥ कौतुक भवि सुणजो हिवं-जी ॥ १२ ॥ बेठो सदनमझार, करसे बुद्धि प्रचार ॥ आ० ॥ पालसे वचन कह्या सही जी ॥ पनरमी ढाल रसाल, करणी मगलमाल ॥ आ ॥ मोहनविजयें भली कहीजी ॥ १३ ॥

दुहा ॥ दिन केता तिहां निगम्या, एक लडी आवास ॥ झूर विरहिणी व्याकुली, मुख मेले निसास ॥ १ ॥ अजन मजन परिहर्या, नरगे वलि सिणगार ॥ मगन रहे वैरागमा टाल विषयविकार ॥ २ ॥ मानवती चित चिंतवे वठो नगरे काम ॥ सुखमा पिण पमे करल उद्यम कीधे जाम ॥ ३ ॥ यामयुगम गइ यामनी, वनिता ऊठी सत ॥ ऊघाडी लघुजालिका, मुख काढी निरखत ॥ ४ ॥

॥ धार्मिकमां जे वृद्धछे, तेहने कीधो साद॥ ते पिण जाली हेठले,आव्यो तजी प्रमाद॥८॥

॥ढाल सोलमी ॥ गौतम समुद्र कुमार रे॥ एदेशी ॥ पोहरायत कहे तामरे ,मानवती भणी॥ किम बोलाव्यो मुझ भणीए॥ ॥१॥नृपनें कहेवुं जो होयरे, कोय संदेस डो॥कहो सिरजोरें तेकहूंए॥२ ॥केम उघाडी जालीरे॥बहु प्रयासथी, चढिने अटारी ऊपरें ए॥३ ॥के सुं इणें आवासरे, सांभलतुं नथी॥ कहो पडदो खोली करीए॥४ ॥किम जाएछे दींहरे, एकलडा रह्यां॥स्यो तें नृपनो बिगाडियोए॥५ ॥ए दुख ताहरुं बेहेनीरे, सही सकतो नथी ॥ पिण स्वामीथी जोरो नहीए॥६ ॥दुःभर भरवा काजरे, हुंपिण इहां रह्यो ॥ चोकी करवा तणीए॥७॥कोलीड

हनोरे, तेहनो धोळियो ॥ बांधियें एह जग रोतछेए ॥ ८ ॥ दाणाने जे कोईरे, मुख मा डे जिको ॥ ते मुख मांडे चोकडेए ॥ ९ ॥ स्वामी हाथे दोरिरे, दासतणी अछे ॥ ते जिम कहे तिम तेकरेए ॥ १० ॥ वाक म जाणसो अम्मरे, वाकए रायनो ॥ अमे व दा तस पायतणाए ॥ ११ ॥ मानवती तव बोलीरे, गदगद कठयी ॥ रे वीरा सुण वा तडीए ॥ १२ ॥ छे तुझ लायक कामरे, जो करेतो कहु ॥ पाड हु मानिस ताहरोए ॥ ॥ १३ ॥ आपु नवसर हाररे, जा तू उताव लो ॥ काज करो मयाकरीए ॥ १४ ॥ विरह अगाध समुद्ररे, दे तू बाहडी ॥ करुणावत कृपा करीए ॥ १५ ॥ इम कही दीधो हाररे, ने जामिक ज्ञत ॥ तेपिण लोभनसें पड्यो येए ॥ १६ ॥ द्रव्येस नावि होयरे जेजे स्त्रि।

वे ॥ मुनिजनसरिखा भोलव्याये ॥ १७ ॥ क
हे अनुचर कर जोडीरे, कहो ते स्वामिनी॥
काज करी मुजरो करुंये ॥ १८ ॥ राणी क
हे मुझ तातरे, लगें संदेसडो ॥ कहुं ते ज
इ पोचावजेये ॥ १९ ॥ भूपें करीने कूडरे, प
रणी मुझने ॥ खबर पडी नही तुझनेये ॥
॥ २० ॥ हिवे येकथंभे आवासरे, रेहेवुं ये
कलुं ॥ ये जइ कहेजे तातनेये ॥ २१ ॥ प-
डखो वली क्षणमात्ररे ॥कागल दीयुं लखी
॥ हाथो हाथे सुंपजेये ॥ २२ ॥ आंसु मसी
पटपत्ररे, अंगुली लेखणे ॥ दीधो लिखीत
स जालियेये ॥ २३ ॥ पत्र लेई सिर चा-
डीरे, चाल्यो चडवडी ॥ जिम बीजो जाणे
नहीये ॥ २४ ॥ पहोतो धनदत्त गेहरे, अ-
नुचर पाधरो ॥ शेठें द्वार उघाडियांये ॥
॥ २५ ॥ दीधो [illegible] पत्ररे, वात कही

॥ जे मुखवचनें कही हतीये ॥ २६ ॥ इमभ णी सोलमी ढालरे, अति मन मानती ॥ मोहनविनयें, सहु को सुणोये ॥ २७ ॥

दुहा ॥ धनदत्त चित्त विस्मय थयो, देखी चोवर लेख ॥ खोल्यो ततक्षण वाचवा, मन आश्चर्य विशेप ॥ १ ॥ दीठा आसु अक्षरा, शेठ थयो दिलगीर ॥ गुप्त वात स वि ओळवा, वाचे थई सधीर ॥ २ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ मुखडानीदेशी ॥ अर्हत्सिनपदपकजेरे, चित्ततरु आहितलेख॥स नेही साभळो ॥ मानवत्यातनु महीपतेरे, षै इतवगर्भित एप ॥ स० ॥ १ ॥ भवता पादप्र सादान्मेरे, सौख्य वर्त्तते चात्र ॥ स ॥ पर मेकेयं विज्ञप्तिरे, अवधार्या गुणपात्र ॥ स० ॥ २ ॥ भूपतीना करपीडनरे, मम सोत्सव- तो विधाय ॥ स ॥ विरह दत्त तेनमेरे, का

यें तस्य उपाय ॥ स० ॥ ३ ॥ अवदागारादा रभ्यमेरे, गृहयावद्भयो तात ॥ स० ॥ भित्वा भूमिं विधातव्यंरे, मार्गं खलु विख्यात ॥ स० ॥ ४ ॥ येनमया आगम्यतेरे, उपभवतो हि सदैव ॥ स० ॥ तात करिष्यामि तदारे, वार्त्ता दुषजं चैव ॥ स० ॥ ५ ॥ येकाकिन्या वासो मेरे, सुरंगगेहे पूज्य ॥ स० ॥ किंवहु- नेयं विज्ञप्तिरे, स्तोकाड्डेयं गुह्य ॥ स० ॥ ६ ॥ येह समाचार वांचिनेरे, धनदत्त धूज्यो अ तीव ॥ स० ॥ पाछो पत्रसेवक भणीरे, दी- धो लिखीने तदीव ॥ स० ॥ ७ ॥ सेवक मा- नवती भणीरे, जाई उपजावी प्रीत ॥ स० ॥ धनदत्त करे विचारणारे, शी हिवे करवी रीत ॥ स० ॥ ८ ॥ येहवे प्रातसमय थयोरे, तेडाव्या गृहकार ॥ स० ॥ येकांते सघलो क ह्योरे, सेठें रहस्यविचार ॥ स० ॥ ९ ॥ वाहि

र वात म कादसोरे, तुमने करसु प्रसन्न ॥
स ॥ कारीगर तत्पर थयारे, द्रव्यनु जाणी
मन्न ॥ स० ॥ १० ॥ केतेक मासे पाधरीरे,
सुरग विभाइ तत्र ॥ स० ॥ मानवती ये-
काकिनीरे, नित्य निवमेछे यत्र ॥ स० ॥
॥ ११ ॥ गूढ उघाड्यो बारणुरे, येकथभे
आवास ॥ स ॥ द्दार निहाली वियोगणी
रे, पामी अतिहि उल्लास ॥ स० ॥ १२ ॥का
रागरे जई वीनव्युरे, साहभणी तिणवार॥
स• ॥ वचन निवाह्या राउलारे, सुरग की-
ध तइयार ॥ स० ॥ १३ ॥ वहुधन आपी ते
हनेरे, शेठें कीध विदाय ॥ स ॥ नारी थ
की तुमे जोयजोरे, स्यो कीधोछे उपाय ॥
॥ स० ॥ १४ ॥ मानवती गृह ताननरे, आ
वी थइने सुरग ॥ स ॥ प्रणम्या मात पि-
ताभणीरे, हियडे धरी उछरग ॥ स० ॥ १५ ॥

चतुरा चरित्र निहालजोरे, सहुको बाल गो पाल ॥ स० ॥ मोहनविजयें कही भलीरे, ए तो सत्तरमी ढाल ॥ स० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ मातपिताने आगले, मानवती यें ताम ॥ नृप वृत्तांत कह्यो सकल, मन मोलो अभिराम ॥ १ ॥ पितर पयंपे धुअभ णी, स्यो हिवे कीजे सोच ॥ पीपाणी घर पूछवुं, ते किम आवे टोच ॥ २ ॥ पुत्री कहे ए नृपतिनें, पाधरो करुं प्रवीण ॥ आणी आ पो तातजी, जो मुझने एक वीण ॥ ३ ॥ धन दत्ते पुरमांहेथी, विणा आणावी एक ॥ सुंपी मानवती भणी, वारू करिय विवेक ॥ ४ ॥ योगणीरूप धर्युं भलुं, मानवतीयें ताम ॥ हिवे श्रोता जन सांभलो, त्रिकरण राखी ठाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल अठारमी ॥ सनेही पासजिणंदा बे ॥ एदेशी ॥ मानवती नृप धुतवा माटे

प रच्यु अदभूत ॥ ढलती मूको सिरथी न
टा, वली अगलगाय भभूत॥सनेही योग-
ण रूडीबे, अरे हाहा भीतर कूडीबे॥ १॥
केडयकी कस्यो वच्छकछोटो, पादुका पेहे-
री पाय॥ माला गले रुद्राक्षनी, करी अरु
णनयण चितलाय॥सने०॥ २॥ पीतांबर
ऊड्यो पछेडो, ते ऊपर योगपट्ट ॥ थापी
कधरे सोहती, तिण वीणा घाटसुघट्ट ॥
सने०॥ ३ ॥ रूपरच्यो अभिनव वारु, केहे
तां नावेपार ॥ जाणे युगनी योगनी, प्रग
टी इण ससार ॥ सने०॥ ४॥ मातपितानी
सीखडी मागी, मानवती सोंछाहि ॥ सच-
रो वेसे एहवे, ते तो नयर उज्जेणिमांहि
॥ सने०॥ ५॥ सेरीये सेरीये दीये फेरी, गा
ये मधुरा गीत ॥ गुहिरा कोकिलकठथी, जे
सुणतां उपजे प्रीत ॥ सने०॥ ६ ॥ अगे गौ

रीने गुणनी डरी, रंजे पुरिजन तेह ॥ नर
नारी लारे फिरे, घणुं नादे विंधाणा जेह
॥ सने० ॥ ७ ॥ तृणचर पिणते नाद सुणी-
ने, सोंपे मृगलां प्राण ॥ अनचरनो केहेवुं
किस्युं, जे वध्या चतुर सुजाण ॥ सने० ॥ ८॥
जेकोई नादे नर नवि रींज्यो, जीव्युं तस
अप्रमाण ॥ नररूपेते रोजडा, भरे पेट थ-
ई अजाण ॥ सने० ॥ ९ ॥ योगणिने गुण जे
नर रींज्या, तेकरे घणी मनोहार ॥ सापण
निसनेही थइ, करे वीणतणा झणकार ॥
सने० ॥ १० ॥ नादे जेहने नारद हर्यो,
खेच्यो देवविमान ॥ फणिधर फणमांडी र
हे, एतो योगणनां सुणी तान ॥ सने० ॥
॥ ११ ॥ रूडो रूपने गायेवारू, ते केहने-
न सुहाय ॥ पुरमें प्रसंसा थइ घणी, जे यो
गण रूडुं गाय ॥ सने० ॥ १२ ॥ इम दिवसे

दिये पुरमा फेरी, घेरी सघला लोक ॥ हेरे सहु मुख सामुहो, जिम इदूने हेरेकोक ॥ ॥ सने० ॥ १३ ॥ सध्यासमये तातने मदिर, आवीकरे आसास ॥ सयनसमय माई सुवे, जिहाएक थभो आवास ॥ सने० ॥ १४ ॥ वलि तिम प्राते सुरगे पईने, लेई वे हि-ज वेस ॥ वलि तिमहिज सहु लोकने, कहे मुखथी आदेस आदेस ॥ सने० ॥ १५ ॥ श्रोताजन साभलजो सहुको, आगल वात र साल ॥ मोहनविजये कही भली, एतो रू डी आढारमी ढाल ॥ सने० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ लोकमुखे सोभा घणी, निसुणी श्रवण नरेस ॥ ज योगण गाये भली, पु-रमें वाले वस ॥ १ ॥ अतिउछक थयो नि रखवा, यागण केरू रुप ॥ मूक्यो सचिव ने तेडवा, पुग्माईं तिणे भूप ॥ २ ॥ सचि

व नमी सामणी प्रते, भाखे वयण उदार ॥ नृपति अतिआतुर अछे, देखण तुम दीदार ॥ ३ ॥ तेमाटे करुणा करी, नृपने करो सनाथ ॥ चलो पधारो अलेखणी, द्यो वीणा मुझ हाथ ॥ ४ ॥ मनथी हरषी योगणी, ऊठी लेइवीण ॥ चलो सिताब इम उच्चरे, आगल थइ सुप्रवीण ॥ ५ ॥ खमा खमा कहेतो सचिव, पहोतो राजदुवार ॥ सामणि दीठी आवती, नृप साचवे आचार ॥ ६ ॥ दोडीने लागो पगे, आदर दीधो भूर ॥ बेसाडी सिंहासने, सामण भणी सनूर ॥ ७ ॥

॥ ढाल उगणीशमी ॥ बावा किसनपुरी॥ ए देशी ॥ इमभणे भूपति वायक ताम, करी अवधूतणने परणाम ॥ सामणि साच कहो॥ आया किहांथी किहांजी रहो ॥ सा० ॥

( )

निसुण्या जेहवा गुण आवान, तेहवा तुमने दीठा आज ॥ साम० ॥ १ ॥ भले पधारया न गर मझार, जेमें पतिने पाम्यो दीदार ॥ सा० ॥ तुम बलिहारी जेथइने निग्रंथ, पालोजी शुद्ध निरंजन पंथ ॥ सा० ॥ २ ॥ ग्यान ध्यानमा रह्योछो मगन्न, मन वचथी तुमने धन्य धन्य ॥ सा० ॥ कहो तुमे एहवे बालेवेश, किम योगेंद्रनो धरयो भेष ॥स० ॥ ३ ॥ बोली मानवती ततकाल, सुनवे दीवाने तु भूपाल ॥ सा ॥ हमहै गैबी जीव अतीत बुझे कोन हमारी रीत ॥ सा० ॥ ४ ॥ रहेरमता राम हमेश, भेटे तीरथ देशविदेश ॥ सा ॥ आए निरखण नयर उझेन, खेलत पावतहे सुखचैन ॥ सा ॥ ५ ॥ कौन किसीके आवे जाय दानापानी लेत बुलाय ॥ सा ॥ भजे भगवान जगावे अलेख, एस

घ कूडी दुनीयां देख ॥ सा० ॥ ६ ॥ किसके माता किसके बाप, जीव एकिला आपो-आप ॥ सा० ॥ योगकी युगति नजाने कोय, अगमअगोचर भेदहै सोय ॥ सा० ॥७॥ अ-तिआनंदमें जो दिनजाय, सो जीवितका सफल कहाय ॥ क्याले आया क्याले जा-य, सब स्वार्थके बनेहि आय ॥ सा० ॥ ८ ॥ रीझ्यो माहिपति निसुणी वाण, बोल्यो ति म वलि जोडी पाण ॥ सा० ॥ वीण वजाडी गावो गीत, विनति मानो करिने प्रीत ॥ ॥ सा० ॥ ९ ॥ नृप अति आतुर जाणी ते-ण, गाया गीत त्यां मधुर स्वरेण ॥ सा० ॥ वली तिम मधुरी वजाइ वीण, भूपादिक सहु थया लयलीन ॥ सा० ॥ १० ॥ पिण यो गिण लिखी चिंते भूप, दीसेछे मानवतीरे सरूप ॥ सा० ॥ कीधो रखे होए एह उपाय,

मुझने इणे लगाड्या पाय॥सा०॥ ११ ॥
पिण बहुजतने राखो तास, आवी नसके
तजि आवास॥सा०॥तिहां जई जोऊ क
री गृहस्पर्श, करककणने शो आदर्श॥
॥सा०॥१२॥योगणें चळचित्त दीठो राव,
जोजो केहवो खेलछे दाव॥सा०॥नृप जो
शे जई तेहिज धाम, तेमाटे उठ्यो नुं का
म॥सा०॥१३॥यत्र लेई ऊठो घूतणं ते
ह, भूपतिनी लेई शीख सनेह॥सा०॥पो
होती तात तणे आगार, गह एकथभे सु
रंग मझार॥सा ॥१४॥उतारयो धसम
सी योगण वेष, मुलवस्त्र पहिरया सुविशे
ष॥सा०॥ पोढी हींडोले खाट तिणवार,
एहवे नृप पिण आव्यो दुवार॥सा ॥१५॥
यंत्र खोली नृप गेहमझार, आव्यो दीठी
पोढी नार॥सा ॥अचरज मनमा पामे भूप,

रूप कला देखीने अनूप ॥ सा० ॥ १६ ॥ ए तो बिचारी अबला बाल, सूति दिसेछे सेज विचाल ॥ सा० ॥ एहने उकले किहां-थी उपाय, जे मुझनेए लगाडे पाय ॥ सा० ॥ १७ ॥ भोलो राय नजाणे भेद, मानवती जेपूरशे उमेद ॥ सा० ॥ ए उगणीशमी रूडी ढाल, मोहनविजयें कही रसाल ॥ सा० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ भूपें मानवती भणी, जई जगाडी जाम ॥ ऊठी झबकी सेजथी, कर जोडी र हि ताम ॥ १ ऊलंभो अवनीशने, नारीकहे धरिनेह ॥ स्वामी किम करुणा करी, मुझ अबलाने गेह ॥ २ ॥ शुं तुमें भूला आवि-या, धसमसि मंदिरमांहि ॥ माहारा सम साचुं कहो, एम काहि झाली बांहि ॥ ३ ॥ नाह कहे ताहरी खबर, जोवा आव्यो आज ॥ जो कांइ जोइतुं होय ॥ तेकहो सारुं क न

॥४॥ त्रिया कहे माहरी खबर, शु पिउ थोडी लीध ॥ जेलेवा आव्या हुजो, मया घणीघणी कीध ॥५॥ आ मदिरमा एक-लो, तुमविण राखे कोण ॥ ए किमही नहि वीसरे, पियु तुम गुणना गुण ॥६॥

॥ढाल वीशमी,॥, भूपति कहे सुण भा मिनी, एकलडां मदिरमें निगमियें किम करी दीहा होराज ॥ वाक नजाणीश माह रो, धुरथी का नवि राखी पाधरी ताहरी जीहा होराज ॥१॥ अमृत विष इण जीभ में, अनरस पिण इण जीभें बहुली प्रीत लगाडे होराज ॥ कोकिलवाणी सहु सुणे, वायसनी भणी वाणी पथर नाखी उडाडे होराज ॥२॥ आंत अविचारयो नभापिये, जो अल्वे ने भास्यु तो एफल तु पामी होराज ॥ आज पछेपिण एहवी, बहेती

वहेती वातो करसो मा अभिरामी हो-
राज ॥ ३ ॥ बोली मानवती तदा, पीउडा
मे अणघटतां वायक कांइ नथीभाख्या
होराज ॥पालीस सघला बोलडा, रामतमां
साहियोने रमतां जेमें दाख्या होराज॥
॥ ४ ॥ तो मुजरो मुझ मानज्यो, लोटि
णाज्यो लेता लागो माहरे पाय होराज॥
एहमां झुठनजाणसो, देजो तव सावासी
दीयुं देणुं सवाइ होराज॥ ५ ॥ तुमेतो तु-
मारी तरफथी, करवुं हतुं ते कीधुं दछ कि
सी नविराखी होराज॥ मुझ अबलानो सा
हेबा, सुखदुःखनो इण वेला सरजणहार-
छे साखी होराज ॥ ६ ॥ भूपे वचन सुण्या
इस्या, कोप्यो अतिश्चतिताथी कीधां नेत्र
विकराळां होराज॥ घृत सिंच्याथी जेहवी,
वाधे वायुसंयोगें ऊंची पावकमाळा होरा

ज॥७॥ रेरें निगुणी कामनी, लाज वली नही तुझने तेहवी हजी तु दीसे होराज॥ टेक इजानथी मूकथी, असमजस अढदो वो भुडी तुका पोसे होराज॥८॥ वोल वो लेछे एहवा, तो तु रहिछे अलाधि एहवा मदिरमाहे होराज॥ हजीम लगणसु वाप ढी, मुझने पायलगाडे चिंतथी साचुजाणे होराज॥९॥ रीस चढावी राजवी, उठ्यो अति वनिताने मदिरमाहे मेहली होराज॥ यत्रादिक तिम पूरिया, आव्यो नृपदर वार करीने रीत नवेली होराज॥१०॥मा नवती पिण नानने, आवोने गृहमाहिं ते हिज वेम वनाव्यो होराज॥ तिमहिज पु रना मचरी वली तिमहिज नृपने आगे ज[illegible] [illegible] जगाव्यो होराज॥११॥भ पनि यागणने पग, शीमभते सोहावे रज

तिम शिसें लगावे होराज ॥ सामणी अव सर अटकली, वाये वीण सुरंगी कोकिल कंठें गावे होराज ॥ १२ ॥ नृपनुं तनमन व श करयुं, धूतारी जोगणीयें कांइक भुरकी नाखी होराज ॥ अतिहि वेश सोहामणो, जो वा सरिखो जाणी जावे भूपति झांखी हो राज ॥ १३ ॥ सा योगण चित चिंतवे, पी- उने पाय लगाड्यो पूरयो एक उल्हासो होराज ॥ चरणोदक पावुं हिवे, आगल जो उं किम थासे नृपथी माहरे तमासो होरा ज ॥ १४ ॥ ढाल कहीए वीसमी, मोहनवि जयें सुपरें मीठे वयणें बनाइ होराज ॥ जो जो सवि श्रोता जना, अबलाए पीउं धूत ण केहवी बुद्ध उपाइ होराज ॥ १५ ॥

दुहा ॥ नरपति योगण आगले, मूकी बेठो मान ॥ श्रवण देइने सांभले. झीणा झी-

णा तान ॥ १ ॥ नरपति कहे करजो-
डीने, अहो योगण गुणधाम ॥ दास क-
री राखो तुमे, मुझने सहो विणदाम ॥ २॥
केहो खिजमत तुम तणी, मुझथी कीधी
जाय ॥ अविनाशीजे आदमी, मुझथी कि-
म वश थाय ॥ ३ ॥ तुमे अवधू आवी इहां,
गाइ सुरंगी वीण ॥ कोइक कीधी मोहनी,
मुझ ऊपर सुप्रवीण ॥ ४ ॥ हिवे तुमे जासो
किहां, मुझथी लाइ प्रीत॥ नेह करी निर-
वाहियें, तो रहे उत्तम रीत ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ आसणरा योगी॥
ए देशी ॥ नृप कहे तेहने वेकर जोडी, हि
वे जावो किहां मुझ छोडीरे, योगण मन
मानी ॥ रहो इण मंदिरमांहे सदाई, अमे
आपशु युगते गदाइरे ॥ यो० ॥ १ ॥ लेशु
खबर हमेस तुमारी, तुमे जोजो नफरी ह

मारीरे ॥ यो० ॥ अमे अहोनिश उछंगमां र
हेशुं, तुमे कहेसोते वहेशुंरे ॥ यो० ॥ २ ॥रा
खशुं करीने हाथें छाया, घणी लागी तुम
थी मायारे ॥ यो० ॥ हिवे अधक्षण तुम वि
ण नरहाइं, तुम विरहो केम सहाइंरे॥ यो०
॥ ३ ॥ जो तुमे माहरा रास्या नरहो, तो घे
लो करीने निवहोरे ॥ यो० ॥ सामण ताहरी
सो में विगाडी, में एवडी प्रीत लगाडीरे॥
यो० ॥ ४ ॥ में मन ताहरे पालव बांध्युं, व
लि नेहडो करीने सांध्युंरे ॥ यो० ॥ तोहिवे
ताहरा चरणं नमुकुं, ए अवसर किम हुं
चूकूंरे ॥ यो० ॥ ५ ॥ दरसण ताहरो किहांथी
फेरी, आवी कोकिल पवने प्रेरीरे ॥ यो० ॥
लेख लिखित थयो तुम अम मेलो, हिवें
महेर करी मन मेलोरे ॥ यो० ॥ ६ ॥ ताहरे
मुझसम दास अनेका, पिण माहरे साम०

पा त एकार ॥ यो ॥ वाणी सुणीने नृपनी अमोली, तव वलती यागण, बोलीरे ॥ यो० ॥ ७ ॥ हम किनहीके राखे नरहे, कोण पेट हमारा भरहेरे ॥ यो० ॥ हम पछिन किनहीके सनेही, मनमे महेर नहि केहीरे ॥ यो ॥ ८ ॥ योगी भोगी केही सगाई, हम, सें क्यों प्रीत लगाईरे ॥ ॥ यो० ॥ हम परदेसी प्राहुण लोगा, साधे फिर योगीको योगारे ॥ यो० ॥ ९ ॥ योगी किनके नसुणे मिता, योगी निरपेहि अणभित्तारे ॥ यो० ॥ अवधु योगीके आन्या काज, पिण योगीका अंत नलीजेरे ॥ योगी भला जोई रहे नित्य रमता वरे योगी नकिनसु ममतारे ॥ यो ॥ मातपिताका दिया जोछेहा, तो नक्षग क्या कर नेहारे ॥ यो० ॥ ११ ॥ नहि परवाह किसीकी हमको, फिर वहोत

कहा कहुं तुमकोंरे ॥ यो० ॥ जो तैं हमकूं राखण केरी, मन चाहधरे अभिनेरीरे ॥ यो० ॥ १२ ॥ तो तूं कह्या एक मान हमरा, तो रहेवे तुझ दरबारारे ॥ यो० ॥ कहे नृप तेहने देइ दिलासो, मुझ सरिखो काम प्र कासोरे ॥ यो० ॥ १३ ॥ तुम वचनथी नरहुं अलगो, हुं तो ताहरे पालव वलगोरे ॥ यो० ॥ एहवो भाग्य किहांथी अमारो, जेक ह्यो करिये तुमारोरे ॥ यो० ॥ १४ ॥ नृपनो अतिहि आग्रह जाणी, हिवे बोलसे योगण वाणीरे॥यो०॥इम एकवीसमी ढालए भाखी, मोहन विजयें मनथिरराखीरे ॥ यो० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ तोरहुं में तेरे निकट, जो तुं न जावे दूर ॥ लाख लाख गालीसहे, तोही रहे हजूर ॥ १ ॥ जब तूं मुझकुं छोरके, र हे दूर छिनएक ॥ ऊठ चलुंगी में सबे

याहै मेरी टेक ॥ २ ॥ तु जो इतनी करसके, तोमोको इहा राख ॥ नहितो अवहिं कर विदा, पीछा उत्तर माख ॥ ३ ॥ नृप पाय लागीने कहे, अहो योगण महाराय ॥ नि वहीस ए सघलु कह्यु, हुकमे रहिश सदा य ॥ ४ ॥ गाळी गणीस तुमारडी, करिनें घीनी नाल ॥ साखी प्रमुए वातनो, आप- ण विहू विचाल ॥ ५ ॥ अतिआग्रह जाणीकरी, रही योगण नृप पास ॥ जोजो धूतण धू- तसे, देई देई विसास ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ मोतीडानी देशी ॥

योगण नृपना विहू दिल मिलिया, जाणे पयमें पतासा भलिया ॥ सामण चरिताली धूताली ॥ राजकाज नृपें मूकी दीधू, जाणे योगणियें काई कामण कीधु ॥ सामण च- रिताली धूताली, रामकी मतवली ॥ १ ॥

भूपति भोलो भेदन लेखे, घोलुं सघलुं पा य करी पेखे ॥ सा० ॥ ते अवधूतण नृपमन भावी, जाणे अंगण गंगा आवी ॥ सा० ॥ रा० ॥ २ ॥ क्षणमांसा एक आंखें हसाडे, क्ष णमां नृपने पाय लगाडे ॥ सा० ॥ दूधने डां गनो न्याय देखाडे, वलि क्षणमें भूपतिने मारे ॥ सा० ॥ रा० ॥ ३ ॥ क्षणमां नृपने तमा चे मारे, क्षणमां बालपरे बुचकारे ॥ सा० ॥ जिम योगण लत्ता निरथाटे, तिमतिम पु रपति तलियां चाटे ॥ सा० ॥ रा० ॥ ४ ॥ नर पति जाणे रखे दुहवाती, पंखणीनीपरे उ डिजाती ॥ सा० ॥ खुंचुं खमे धूतारीनो रा- जा, जिम खमे डंका घायने वाजा ॥ सा० ॥ रा० ॥ ५ ॥ जे गुणिजन गुणिने वश पडि- या, तेतो नंग जेम हीरे जडियां ॥ सा० ॥ रसनी रीझने सुगुणनी वातो, अमियसमा

णी ते विख्यातो॥सा०॥रा०॥६॥गुणव
तने सहु आदर आपे, गुणथी कूपक घट
जल थापे॥सा०॥गुणियणने सेवे नर अ
मरा, जिम गुणलीणा पंकजभमरा॥सा०॥
रा ॥७॥ एक गुणें अवगुण बहु ढके, जि
म फणिपति माणे पोह्चोतो ढके॥सा०॥जे
गुणियणनो गुण नवि जाणे, तो तेहनु जी
वित अप्रमाणे॥सा ॥रा ॥८॥ तिम गु-
ण जाणी सामाणि अभिरामी, त्रिकरण र
जञ्यो उम्मेणी स्वामी ॥ सा०॥नृप आग
ल मधुरे स्वरें गावे, वली तिम मधुरी वी
ण बजावे॥सा ॥रा०॥९॥ वली योगण
पुरमा दिये फेरी, हरखे खेले अवधूचेरी॥
सा ॥वली तिम ताततणे घर आवे, सु-
रग थइ एकथभे जावे॥ सा० ॥ रा० ॥
॥ १० ॥ यामिकनी पिण माडे वातो, मा-

नवती एम खेले घातो ॥ सा० ॥ नृप योगि णविण अधक्षण नरहे, तलफे मछ परेति णे विरहें ॥ सा० ॥ रा० ॥ ११ ॥ नृप यदि जो वा अनुचर मूके, योगणि आवे समयन चूके ॥ सा० ॥ इम करतां निगम्या दिन के-ता, तनमनथी थयो वश नृप तेता ॥ सा० रा० ॥ १२ ॥ रागनेरंगे छबीलो छाके ॥ यो गण आवे समयने ताके ॥ सा० ॥ सामणि अवसर काहियें नपामे ॥ जे अवनीशने बो लें दामे ॥ सा० ॥ रा० ॥ १३ ॥ पिण जिनध र्म पसाएं रूडो, थासे तेमां नहो कांइ कू डो ॥ सा० ॥ धर्मथकी मनवंछित थासे ॥ धर्मथकी चिंतित सुखपासे ॥ सा० ॥ १४ ॥ हिवे आगल अचरजनी वातो ॥ श्रोता नि सुंणो तजि व्याघातो ॥ सा० ॥ ढाल बावी समी मन थिर राखी ॥ मोहनविजयें रस

नार्ये भाखी ॥ सा० ॥ रा ॥ १५ ॥

दुहा ॥ एहवे उज्जेणीथकी, दुभरभरवा माट ॥ चाल्यो कोइक वाणियो, लेई दक्षण वाट ॥ १ ॥ पहोतो तेहवे अनुक्रमे, सुगोप इण ताम ॥ तापे पीडाणो थको, बेठो तरु विश्राम ॥ २ ॥ पूछ्यो पुरवासी भणी, इहा कुण राजेराय ॥ पाछो तेणे तिणने कह्यु, इहा दलथभणराय ॥ ३ ॥ राणी तस गुणभरी, सकलकलायेंपूर ॥ रतनवती तस पुत्रिका अगणित गुणे मनूर ॥४॥ हमणा तें नृपपुत्रिका, आवमे रमण वसत ॥ जोजोवानो रूप करो तो रहो इहा एकत ॥ ५ ॥ पथिके जाण्यु जायसु, साझे नगरीमाहि ॥ जोन्या पे जायु भलु, इम धरि रह्यो तरुछांहि ॥ ६ ॥

॥ ढाल तेवीसमी ॥ सखीरी आयो व-

संत अटारडो ॥ एदेसी ॥ सखीरी एहवे आवी क्रीडवा ॥ क्रीडवा ॥ रतनवती वनमांहि, चतुर नर सांभलो ॥ स० ॥ खेले संग साहेलियां ॥ साहे० ॥ गालीने गलबांहि ॥ चतु० ॥ १ ॥ स० ॥ताली देई केइक छिपे ॥ के० ॥ वेली सदनमझार ॥ च० ॥ स० ॥ ढुंढी काढे तिहांथकी ॥ ति० ॥ रतनवती तिणिवार ॥ च० ॥ २ ॥ स० ॥ केइ कदंबना गुछमें ॥ गु० ॥ रहे लघुंगात्र छिपाय ॥ च० ॥ स० ॥ श्रमसीकर लेइ मुखे ॥ लेइ० ॥ मुगतासम रह्या आय ॥ च० ॥३॥स०॥नाखे गेंदुक कुसुमनां ॥ कु० ॥ आमासांहमा केइ ॥ च० ॥ स० ॥ छोटी कमरीये बालिका ॥ बा० ॥ दोडे मिलीने सवेई ॥ च० ॥ ४ ॥ स० ॥ जाणीयें उरवसी ऊतरी ॥ ऊ० ॥ इंद्रपुरीथी सूर ॥ च० ॥ स० ॥ शोभायें वन

छाहीउ ॥ व ॥ ऋतुनृप तो रह्यो दूर ॥ च० ॥ ५ ॥ स० ॥ तेपथी नृपपुत्रिने ॥नृ०॥ निरखे ओछे नेण ॥ च० ॥ स० ॥ चोरपरे छानो रह्यो ॥ छा ॥ मुखथी न जपे वेण॥ च० ॥ ६ ॥ स० ॥ ते नर वासी उज्जेणनो ॥ उ ॥ रतनवतीयें दीठ ॥ च० ॥ मूकी ते हने तेडवा ॥ ते० ॥ वाला एक विशिठ ॥ च० ॥ ७ ॥ स० ॥ रे परदेसी प्राहुणा ॥ ॥ प्रा ॥ किम छपो रह्योगे अबूझ ॥ च ॥ ॥ स ॥ ऊठ अमारी स्वामिनी ॥ स्वा० ॥ तेडेछे अह्मो तुह्म ॥ च ॥ ८ ॥ स ॥ आ- व्यो बटाउ वाणियो ॥ वा ॥ रतनवतीने पास ॥ च ॥ स ॥ करी प्रणिपत ऊभो र ह्यो ॥ ऊ० ॥ सा पूछे सुविलास ॥ च०॥९॥ स० ॥ आव्या किहांथी किहां जसो, मापो सत्यवचन ॥ च० ॥ स० ॥ नर कहे आव्यो

उज्जेणथी ॥ उ० ॥ जेहे भूतळे धन्य ॥ च०
॥ १० ॥ स० ॥ मानतुंग राजा तिहां ॥ रा
जा० ॥ राजे वधते वांन ॥ च० ॥ स०॥
रूपकलागुणें आगलो ॥ गु० ॥ नही कोई
तेह समान ॥ च० ॥ ११ ॥ स० ॥ जेहना सु
जस निसाणना ॥ नि० ॥ दह दिस सुणि
यें अवाज ॥ च० ॥ स० ॥ जेहथी डरतो ग
गनमें ॥ ग० ॥ नासी रह्यो सुरराज ॥ च०॥
॥ १२ ॥ स० ॥ अंगतणी चकचोधमे ॥ च०॥
पाम्यो हार अनंग ॥ च० ॥ स० ॥ वहे अ-
होनिसि जस अंगण ॥ अं० ॥ दान गंगा-
ना तरंग ॥ च० ॥ १३ ॥ स० ॥ ते नृप जे
णें दीठोनही ॥ दी० ॥ जीव्युं तस अप्रमाण
॥ च० ॥ स० ॥ दीठांहिज आवे बनी ॥ आ० ॥
केता करियें वखाण ॥ च० ॥ १४ ॥ स० ॥ जे
कन्या तेवरवरे ॥ व० ॥ तेहनुं पूरण भाग ॥

॥ च.॥स. ॥ पथिकना वचन सुणी इस्या ॥
॥ सु ॥रतनवती धरयो राग ॥च.॥१५॥
॥स. ॥अतुर हुइ परणवा॥ प. ॥ उज्जे
णीधणी तेह ॥च. ॥स. ॥ गुण निसुणी
परगमी गया ॥प. ॥ रोमा रोमे तेह ॥
प ॥१६॥स ॥वनहूती आवी घरे ॥
आ. ॥ रतनवती ततकाल॥च. ॥ स ॥
मोहनविजयें लहकती ॥ ल० ॥ कहि त्रे-
वीसमी ढाल ॥ च० ॥ १७ ॥

दुहा॥ चेटीने नृप धुव कहे, गतिशैश
व मुझ हेव ॥ यौवन आगत तनुविषे, अ
नुमाने अहमेव ॥ १ ॥ वर वरवा इछा थई,
मुझने हिवे सुविलास ॥ तेमाटे तुमने कहु,
इछा पूर उल्हास ॥ २ ॥ वर वरवो उज्जे-
णपति, नहि तो पावकसग ॥ तू जा कहे
मुज मातने, करकरुणा तो रग ॥ ३ ॥ चे

टी दोडा ततूक्षणे, राणी निकट पहूत ॥ रतनवतीनी वातडी, कहि मधुराई युत्त ॥ ॥ ४ ॥ गुणमंजरियें रायने, इमभणी सकल प्रवृत ॥ मानतुंग नृप परणवा, पुत्री थइ उनमत्त ॥ ५ ॥ दलथंभण निजनारिने, कहे त्रिय मकारिश खेंद ॥ पुत्रीने परणावसुं, ए पूरीशुं उमेद ॥ ६ ॥ माताएं पुत्री भणी, ज इ दीधी आसास ॥ इछावर परणावशुं, पू रुं तुझ मन आस ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ धणरा ढोला ॥ एदे शी ॥ दलथंभण निज मंत्रीनेरे, तेडी कहे एकंत ॥ गुणना लोभी, तुं जा नयरी उझे णीयेरे ॥ मानतुंग जिहां संत ॥ गु० ॥ मानो मानो सुगुण कह्यो मानो, तुमेए म्हारी अरदास ॥ गु० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कहजे लागीने पगेरे, माहरो संदेसो तास ॥ गु० ॥

रतनवतीने परणवारे, वेहेला आवो आवास ॥गु ॥२॥थाशे जेमुझ चाकरीरे, तेह करीश महाराय॥गु०॥रहेसु दास थई सदारे, इम जई कहेज भाय॥गु०॥३॥वहेजे पथ उतावलोरे, विलब नकरजे क्याहि॥गु०॥ वहिलो वलजे नृप भणीरे, तेडी आवजे आहिं॥गु ॥४॥ मत्री नृप आदेशथीरे, चाल्यो चडीने तुरग॥गु ॥ साथे लीधो सबलोरे, भट लीधा वलि सग॥गु ॥५॥ पथे वहेता पाधरारे जोतो धरागिरिनेण॥ गु ॥अनुक्रम केतेदिनेरे आव्यो पुरउज्झे ण॥गु ॥६॥नरिणपतिने मत्रियेरे, भ- ण्यो नप मानतुग। गु ॥सटथयो चित मे टणुर हरख्यातेण पुगपुग॥गु ॥७॥ द लथभणराजान्नोर ... ... व्यो मांचि

रै तदीव ॥ गु० ॥ ८ ॥ मंत्री उतर्‍यो तिहां जइरे, भोजन कीधां सार ॥ गु० ॥ पेहेरी वसन संध्यासमेरे, आव्याते दरबार ॥ गु० ॥ ९ ॥ एकांते बेसी करीरे, मांडी, भूपथी वात ॥ गु० ॥ राजलगें आव्यो अहुंरे, मूक्यो नृपनो विख्यात ॥ गु० ॥ १० ॥ मुझ नृपनी जे पुत्रिकारे, तिणे प्रतिज्ञा कीध ॥ गु० ॥ वरवो उझेणीधणीरे ॥ नहीतो अमे व्रत लीध ॥ गु० ॥ ११ ॥ तेमाटे पण पूरवारे, तिहां लगें आवोस्वाम ॥ गु० ॥ दलथंभणें प्रेरयो अछेरे, मुझने इणेकाम ॥ गु० ॥ १२ ॥ हिवे सजथई स्वामी तुमेरे, कीजे प्रयाणो आज ॥ गु० ॥ पाणी नखमे पातलीरे, लाजे विणासे काज ॥ गु० ॥ १३ ॥ मानतुंग निसुणी रह्योरे, तेह सचिवनां वयण ॥ गु० ॥ उत्तर देइ नवि सक्योरे, नीचाकरीरह्यो ने

ण ॥ गु० ॥ १४ ॥ कहे मत्री किम साहि-
वारे, अणबोल्या रह्या आम॥ गु० ॥ पाछो
उत्तर आपतारे, सुकाइ वेसेछे दाम ॥ गु०
॥ १५ ॥ नृपकहे माहरो नानथीरे, आवीस
शिरने जोर ॥ गु० ॥ अलगो नथी तुमवच
नथीरे, पिणछे एक मरोर ॥ गु० ॥ १६ ॥
उत्तर एहवो मत्रिनेरे, दीधो तव भूपाल ॥
गु ॥ मोहनविजयें एकहीरे ॥ सुभग चो-
वीसमी ढाल ॥ गु० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ भूप विचारे चित थकी, जावु
अतिहिदूर ॥ योगण दुहवासे खरी, जो हू
नरहू हजूर ॥ १ ॥ एकमने वेहु क्रिया, कि
म सघवाणी जाय ॥ नृप चित्त आवी मि-
ल्यो वाघ नदीनो न्याय ॥ २ ॥ जो नवि
जाऊ परणवा तो रीसामे भूप ॥ ए वेहु-
ना मन राखवा, मी बुद्ध करु अनूप ॥ ३ ॥

एहवे फिरती योगिणी, आवी जिहांछे रा य नृपते मंत्री देखतां दोडी लागो पाय ॥ ॥ ४ ॥ बेठी सामण बेसणे, वीण वजावे सार॥ पिण नृपनो झांखो वदन, फिरफिर जोए निहार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ राग बंगालो ॥ बोले योगणी नृपथी वाण, आज एसे क्यों दिसो सयाण ॥ मन मानले ॥ क्या कछु फिकरहै हृदय मझार, कहे चिंतायुं दियुं विडार ॥ म० ॥ १ ॥ कहेतो तेरे आगे इंद, जकरपक रकर ल्याऊं बंद ॥ म० ॥ कहेतो बकरीसें ह राउं गजराज, कहेतो चिडीपें उडाउं बा ज ॥ म० ॥ २ ॥ कहेतो शशिकला सूरज मे- र, तेरे आगें करुं ढमढेर ॥ तेरे मनमें हो वे चाह, तो शशि पास गहावुं राह ॥ म० ॥ ३ ॥ कहेतो लराउं हरिसें कुरंग, कहेतो

ऊलट वहाउं गंग ॥ म ॥ कहेतो करु सूर का चंद कहेतो चंदको करि ल्यु दिणंद॥ म ॥ ४ ॥ इत्यादिक विद्या मुझ पास, कहेतो करी दिखाउं तमास ॥ म ॥ जो एक हू मेंतेरी भोर, तो तू होत्तहै क्यों दिलगीर ॥ म० ॥ ५ ॥ दिलकी वातकहो धरी हूंस, जो नकहेतो तुझकू सूंस ॥ म ॥ तब योगणने कहे भूमीस, तोकहु जोनचढावो रीस ॥ म ॥ ६ ॥ कहेवा जीव धरेछे ईह, पिण कहेता नीव चाल जीह ॥ म० ॥ सामणि कहे तूं सुणवे राय, जैसी होए तैसी देव ताय ॥ म ॥ ७ ॥ नृपकहे सुगोपट्टण गाम, राजा तिहा दलथंभण नाम ॥ म. ॥ पुत्री रतनवती नामेण, मुझपऊर पण कीधु तेण ॥ म ॥ ८ ॥ तेमाटे तिणे राजान, मुझने तेडवामूक्यो प्रधान ॥ म ॥ तिहा जइ पर

णु कन्या तेह, वाततणुंछे कारण एह॥ म०
॥ ९॥ योगण त्रटकी बोली वाण, रेरे अ-
धम क्या बोल्यावाण॥ म० ॥ क्यातें दिया
था कोलसंभार, दिन थोरेमें क्यों दिया
बिसार॥ म०॥ १०॥ नसक्या तुंतो वचन
निवाह, तो हमकुं तें राखे कांह॥ म० ॥ दे
इ बचन यंचूके पुमान, ताको जीयो अनी
थो जान॥ म०॥ ११॥ जानीबे तेरी कूडी
प्रीत, अब तेरेपर क्या परतीत॥ म० ॥ तु-
झसेंतो नीका मंडलीक, जो पोतेसें रहत
नजीक॥ म०॥ १२॥ धिग धिग धिगतेरा
अवतार, किससुले घड्या तोहें किरतार॥
म० ॥ तुमसेंतो भले हम योगीस, वचने
तुझपे रहे निशदीस॥ म०॥ १३॥ हमभि
चलेंगे तीरथकाज, क्या योगीकुं संभारना
साज॥ म० ॥ एक दार मुंदे खुले दार ला

ख, ए योगी मुखकीहै भाख ॥ १४ ॥ तोसें क्या देणाहै राय, यो कछु दियो होयतो बताय ॥ म० ॥ अहि अरि योगी नकिनके मित्त, तू राजातो हमहैअतीत ॥ म० ॥ १५ ॥ तू तेरेघर करे नितराज, अवहमसें क्या तेरा काज ॥ म० ॥ इम योगणना निसुणी वचन्न, नृप ढालीरह्यो नीचाकन्न ॥ म० ॥ ॥ १६ ॥ सामणने पाये ततकाल, लागी मनाये हिवे भूपाल ॥ म ॥ इमभणी ए पचवीसमी ढाल माहनविजयना वचन रसाल ॥ म० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ अहो अहो सुभगे सामणि, हु अपराधी आज ॥ ए गुनहो बगसो मुने, रखे घटाओ रीज ॥ १ ॥ चाकर चूके चाकरी पिण स्वामि न चूके साच ॥ अवगुण ऊपर गुणकरै ते माणस जाणो साच ॥ २ ॥

कृष्णागर बाल्यो थको, सांहमुं दिये सुवास ॥ कोसजो नाखीयें नीरमां, तो पिंण जल दिये तास ॥ ३ ॥ केसरने घसतांथकां, बिमणा दाखे रंग ॥ सोनाने परजालियें, अतिहि दीपावे अंग ॥ ४ ॥ इक्षु पिलेजोयंत्रमा, तोपिण रस देअंत ॥ तिम निह्रेजा ऊपरे, कदीहिन कोपे कंत ॥ ५ ॥ तिमहूं चूको सामिनी, पिण तुमे चूको केम ॥ बेहू सरिखा होवतां, किम रसवाधे एम ॥ ६ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥ कपूर होवे अति ऊजलोरे ॥ एदेसी ॥ नृपकहे बेकर जोडीने-रे, अहो अहो आतमराम ॥ वीणा मूको कंधथीरे, रीस चढावो कां आमरे ॥ योगण छटकीन दीजे छेह, हुंछुं पगनी रेहरे ॥ योगण मानो वीनति एहरे ॥ योगण छटकीन दीजे छेह ॥ एआंकडी ॥ सरस नजर मेला

तणीरे आवतीसु नथी चित्त॥ छेहनद्यो तु
मे मुझ भणीरे, हु इम जाणतो नित्तर ॥
यो० ॥ २ ॥ माहरा हृदयमाहे वसीरे, मन
हरी जावाछो एम॥किहा रह्यु तुम योगीप
णुरे, ए पातिक छूटसो केमरे ॥ यो० ॥ ३ ॥
जासो जो गोढ विछावतारे, तो अमवल
स्यो माम ॥ करि किम रहे काने थह्यारे,
निम तुमे अभिरामरे ॥ यो० ॥ ४ ॥ माया
लगाडी कारमीरे मुझथी तुमे महाराय॥पि
ण कहीहि योगीसरारे आपणना नवि था
यरे ॥ यो० ॥ ५ ॥ परदेशीथी प्रीतडीरे, क-
रवा नहिज स्नेह ॥ नेह निवाहि नवि सके-
रे जाए विहगपर ऊडरे ॥ यो० ॥ ६ ॥ तेमे
नयण पारखूरे तमना गोठा आग ॥ जो
इ पहरु जाणनार ना नकरत नई ममा
जर ॥ यो० ॥ ७॥ पिण नहितमु साचतुरे,

होए होवणहार ॥ क्षौरकरम कीधा पछे-
रे, पूछे सुं तिथीवाररे ॥ यो० ॥ ८ ॥ जे जी
भें तूमें कह्यो हलोर, रहिसुं सदा इणठो-
र ॥ तिणहि जीभें जायसोरे, कहेतां किमव-
हे सोररे ॥ यो० ॥ ९ ॥ नेहसुरद्रुम पालिने
रे, नांखो कांइ उछेद ॥ करुणानीरें सिंचि-
येंरे, पूरो एह उमेदरे ॥ यो० ॥ १० ॥ हुं न
ही सहीसकुं तुम तणोरे, विरहो अधक्षण
मात्र ॥ द्राख ज्यु वेल्ली विछुटियेंरे, झुरी कृ
शकरे गात्ररे, ॥ यो० ॥ ११ ॥ तनु कोमल
मधुरी गिरारे, दीसेछे प्रगट प्रसिद्ध ॥ तो
कठणाई एवडीरे, हियडे किहांथी लीधरे
॥ यो० ॥ १२ ॥ मनपण करीने कवलुंरे, मा
नो मुझ मनोहार ॥ कोईकना मुख साहमुं
रे, जुउ जीवन आधाररे ॥ यो० ॥ १३ ॥ अ
ति ताण्यो किम पूरवेरे, नेहथयो जिहां ए

म ॥ नाखो निरह स्योथिमारे, नामी जासो कमर ॥ यो० ॥ १४ ॥ कूडो आल चढावीने रे, जासो तुमे महाराय ॥ दाढी हाल्यानो किस्योरे, माल्यो मुजथी न्यायरे ॥ यो० ॥ ॥ १५ ॥ हुकमकरोतो परणवारे, जाऊ करु णागार ॥ कहोतो नजाऊ इहा रहुरे, कहो ते करिये विचाररे ॥ यो० ॥ १६ ॥ किम चा ले तुम दुहव्यारे, वीनवे इम भूपाल ॥ मो हनविजये वरणवीरे, एह छवीसमी ढाल- रे ॥ यो० ॥ न० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ नृप आतुर जाणीकरी, सामणि बोली ताम ॥ रखते नारान्यके, क्यों कल- पतहै आम ॥ १ ॥ दखत नग पारखा, इत ना किया विलास ॥ धन्यधन्य तेरी मात- कु, तोकहै मात्राम ॥ २ ॥ दलथमनकी पु- त्रीमे कर नियाह रुचरग ॥ करेनो मे सा

थे चलुं, वीणा लेई संग ॥ ३ ॥ तूं दक्षणकु ऊठचले, हम रहे इहां कुणकाज ॥ जित तूं तित हमही चले, मतकर फिकर महाराज ॥ ४ ॥ राजा अतिहर्षित थयो, सामणनो लहि हेज ॥ जिम हरखे निद्रालुउ, पामी सुंदर सेज ॥ ५ ॥ हारेल जेम वाहन मिले, भूख्याने जिम अन्न ॥ तिम योगण वचनें थयो, नवपल्लव नृप मन्न ॥ ६ ॥ योगिण नुं मन थिर थयुं, देखीने भूपाल ॥ दलथं- भणना सचिवने, तेडाव्यो ततकाल ॥ ७॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ जगजीवन जग वालहो ॥ एदेशी ॥ तेह सचिव कहे रायने, ढील किसी करे राय लालरे ॥ चालोजी पंथछे वेगलो, आवे जो तुमारे दाय लालरे ॥ चतुर सनेहि सांभलो ॥ १ ॥ तिहां नृप वाट जोतो हसे, हुउ तुमे तइयार ॥ ला० ॥

ला० ॥ मुछाला मच्छरायता, तिरकसी चले धरि कंध॥ला०॥च०॥८॥इम सेन्याये परव र्यो, मंजलसर थयो राय॥ला० ॥ क्षणक्ष ण नृप सासणतणी, खबर लिये चित्त ला य॥ला०॥च०॥९॥क्षणक्षण विहुं एक वा हने, बेठा करे गुणगान॥ला० ॥ गीतसुणे तस सुखथकी, भूधर देई कान ॥ ला० ॥ च० ॥ १० ॥ इम वहेतां दिनपांचमे, पा- म्या एक उद्यान॥ला०॥सदल सरल म- हीरुह घणा, ऊंचा लगे असमान॥ला०॥ ॥च०॥ ११ ॥छाया सघन देखी जिहां, रविपिण नकरे जोर॥ला०॥द्रुमगुछें बेठा थका, मधुरां टहुके मोर॥ला०॥च०॥१२॥ सजल सरोवर जिहां तिहां, अति रमणी यक वन्न॥ला०॥देखी महीपतिनुं थयुं, घ णं आणंदित मन्न॥ ला० ॥ च० ॥ १३ ॥

योगणिने पूछीकरी, डेरा दीधा तत्र ॥ला॰ खेदाक्रात थया भटा, ऊतरिया सर्वत्र ॥ ॥ १४ ॥ धूतासे योगण थकी ए वनमें भूपाल ॥ ला ॥ मोहनविजयें भली कही सत्तावीसमी ढाल ॥ ला॰ ॥ च॰ ॥ १५ ॥

दुहा ॥ डेरा दीधा देखीने सामणाचिंति चाव ॥ ए काननमे कतने धूत्यानोछे दाव ॥ १ ॥ ढील नकरवी कामिनी ऊखाणो कहे लोय ॥ जिम जिम भीजे कवली तिमतिम भारी होय॥२॥इम चिंती ऊठी तुरत वीणा करधरि तेह ॥ मानतुग महीपति मणी इमभाषे धरि नेह ॥ ३ ॥ सुणवे तूं उझेणपति कहे तो इणउद्यान ॥ हम खेले जइ सरवरे कर आवे असनान ॥ ४ ॥ छिनुकमें फिर आउगी करिके मुनि आचार ॥ तव नरपति कहे स्वामिनी वनछे अ-

ति विस्तार ॥ ५ ॥ वाघ सिंघ गुंजे घणा.
तुमेछो अस्त्री जात ॥ कह्यो तो आवुं वो-
लाववा. सा बोली सुणि वात ॥ ६ ॥ कौन वो
लावे सिंहकों. इम कहि ऊठी तेह ॥ वी-
णा लेई वन्नमां. आवी धरिने नेह ॥ ७ ॥
॥ ढाल आठावीशमी ॥ के तट सरोव
रनोरे अति रलियामणोरे, चिहुंदिशि भ-
रियो गुहीर गंभीर ॥ मछकछपनारे पूंछ
अछाटतीरे, उछले जल सरतीर ॥ तट स
रो० ॥ १ ॥ हंस चकोररे बगने सारसीरे, जे
णे तट करता बहुलि केलि ॥ केइक उडता
रे केइक बेसतारे, केई रह्या जलथी चंचू
भेलि ॥ तट० ॥ २ ॥ जंबु लिंबुरे अंब कदंब
नारे. तिहां रह्या लुंबित जुंबित झाड ॥
जलराखणरे जनने कारणेरे. जाणियें की
धी एहनी वाड ॥ तट० ॥ ३ ॥ अति रम

णिकरे थानक जोइनेरे, थोगण पामी मन आणद ॥ साभलजो सहु कोइरे नृपने घूत वारे, जे इहां रचसे रामा फद ॥ तट० ॥ ॥ ४ ॥ मूकी वीणारे अलगी कथथीरे, तरु वर कोटरमाहि छिपावी ॥ पेठी धीठीरे ऊ डा नीरमारे, कीधु मजन युगती बनावी॥ तट० ॥ ५ ॥ मजन करिनेरे जलने वाहिरे रे, आवी केस निचोव नार ॥ टप टप टव केरे जलना बिंदुवारे जाणे तूटो मोतीहा र ॥ तट० ॥ ६ ॥ सुंदर अबर पीतांबरतणा रे, काळ्या वीणा माहेथी ताम ॥ पहिरच्या झिलताग वमन ने अगथीरे ॥ जेणे छवि माहे सुरअभिराम ॥ तट० ॥ ७ ॥ कसलरे- खार सारा नेणथीरे, जाणे समारयो मन- मथ वाण ॥ भाधी गतीरे कुकम बिंदुकारे, जाणे उग्यो डेआव भाण ॥ तट० ॥ ८ ॥ अ

गो अंगेरे भूषण भावियारे, नेउर घमके चरणे जोर ॥ जाणियें पियुनेरे इणपरें जी पवारे, धसमसी दीधी नगारे ठोर ॥ तट० ॥ ९ ॥ अपछरसरिखुंरे रूप बनावियुंरे, हीं चे वड साखाग्रहिबांहि ॥ गाए मधुरांरे गीत आलापीनेरे, ऊंचे स्वरथी तिणे वनमांहि ॥ तट० ॥ १० ॥ इम तिहां करतांरे पहोरज थइ गयोरे, पाछल नरपति जोवे वाट ॥ हजियन आवीरे योगण सुं थयुंरे, पडीहसे भूली विषमे घाट ॥ तट० ॥ ११ ॥ रखे होए एहनेरे जीवें पराभवीरे, रखे होसे बूडी सरोवरमांहि ॥ के रखे मुझनेरे वाही गइ हसेरे, में पिण मूकी एहने कांहि ॥ तट० ॥ १२ ॥ हजियन आवीरे वेला बहु थइरे, किहां गइ योगण मूकी नेह ॥ जोइ काढुंरे जइने वनमांरे, जिहां तिहां होशे

हसणा गहृ॥तट० ॥ १३ भूपति ऊठ्योरे एकलो आपसुरे, सेवक कोइ नलीधो सं-ग॥धीरज हृइरायभणी तदारे फुरक्यो ज्यारे जिमणो अंग ॥ तट० ॥ १४ ॥चढ वडो चाल्यारे खडग सबाहनेरे, वनमा जोवे तव भूपाल ॥ मोहनविजयेरे भाषी रंग थीरे, अठावीसमी ढाल रसाल॥त०॥१५॥

दुहा॥लतागुच्छ ढंढोलतो, तस जोवे नृपराट॥ भमे जिम मयगल विखरयो, फिरे करे गलखाट॥ १ ॥ यूथभ्रष्ट जिम हरणलो फिरे प्रचारे फाल ॥ तिम नेहे वेध्यो थको, वनमा फिरे भूपाल ॥ २ ॥ पिण योगण लाभे नही, जोवे पगभूपीठ॥ मानव तीर्थ कतने, वनमा भमतो दीठ॥ ३ ॥ जाण्यु आव्यो वल्लहो, मुझने जोवा काज ॥ दिन थोडे धूरत्या तणो, अवसर मिलियो

आज ॥ ४ ॥ नाह्मणी आकर्षवा, गाए गीत रसाल ॥ जाणे टहुकी कोकिला, बेठी आंबाडाल ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकोणत्रीशमी ॥ राजाने देखी नेह्नो, कामणी कूडी बुद्धि उपावे ॥ साद करी करी नाह्नने तेडे, अहो लाल विदेसी मित्ता, माह्नरे इण सरवरियें पधारो ॥ ह्नी चोले हिंचीनेहो, पंथी माह्नरा अरज करुं छुं ॥ तार पछी तुमे वेह्न जोहो पाणी॥अ० ॥ १ ॥ पंथीडा पंथनेहो, पंथी मारा रखेरे वहेता ॥ दीसोछो कांइ प्रेम पियारा॥अ०॥ वाटडली वालीनेह्नो ॥पंथी०॥मुझपें पधारो ॥ आडूंने अवलूं कांइ विचारो ॥ अ० ॥ २ ॥ आगले जाताहो ॥ पंथी० ॥ इहांहिज आवो ॥ पगले बेचारे पगसुं ह्नोसे मेला ॥ अ० ॥ इम किम वनमेंह्नो ॥ पंथी० ॥ भला भमो

छो ॥ किणे कामणिक करथा इन गहिला ॥ अ ॥ ३ ॥ व न्डाने रयाणेहो ॥पर्या०॥ नृप चित चिंतें, मझने माढक्रे कुण नारी ॥ अ ॥मामांपिना मारिखोहो ॥ पर्या० ॥ स्वर तेनदीसे पतो अमेंथो माढछे भारी ॥ अ० ॥ ४ ॥ वाणिने अनुमारेहो ॥ प०॥ नृप तिहा आव्यो दीठी नारी हिंचती डाले ॥ अ० ॥ भामाने भरोंमेहो ॥ पर्या० ॥ अपछर दीसे, राजा फिरि फिरि तास निहाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ शाभाने देखीनेहो ॥ पर्या० ॥ नृप जोइ रहियो चरणे नमीने ताम हिंचोले ॥ अ० ॥ वेयडीये वेधाणोहो ॥ पर्या० ॥ विकट कटाक्षे नारी भणी भूपति तवबोले ॥ अ० ॥ ६ ॥ किहाथी आवीहो, भामानि भोली ॥ किहा तु रहेछे, इहा एकाकी किम तु हिंचे ॥ अ० ॥ नाह

लिये निहेजेहो ॥ भा० ॥ दुहवी दीसेछे, किं
वा कोयथी प्रीतडी सिंचे ॥ अ० ॥ ७ ॥ ना
नडीयें वेपेंहो ॥ भा० ॥ विहती नथीशुं, क
हे मुने साच हृदय तुं खोली ॥ अ० ॥ रा-
जाना मुखथीहो ॥ भा० ॥ वचन सुणीने, त
तक्षिण धुतण मधुरुं बोली ॥ अ० ॥ ८ ॥
अकह कहाणीह्मे ॥ पंथी० ॥ तुझपे कहुंछुं,
बालपणे पण कीधो अटारो ॥ अ० ॥ पयत
ल धोइनेहो ॥ पंथी० ॥ जे जलपीवे, तो हुं-
तेहने करुं प्रीतमप्यारो ॥ अ० ॥ ९ ॥ प
टकाने पलवटेंहो ॥ पंथी० ॥ प्रीतम नाथुं,
रुपभतणीपरे इहां फेरुं ॥ अ० ॥ एहवो तो
नाहलियोहो ॥ पंथी० ॥ नवि मिल्यो को
इ, पण नरहुं कोइ मुझ पण केरुं ॥ अ०
॥ १० ॥ खेचरनो स्वामीछेहो ॥ पंथी० ॥
जनक अमारो, तेणे मुज पणनी वातडी

जाणी ॥ अ. ॥ तातडीयें रीसढलीहो ॥प
थीं० ॥ मुझ भणी कीधी, वर परणाववा
घणु ए ताणी ॥ अ ॥ ११ ॥ पीयरथी री
सावीहो ॥ पथी० ॥ इणे वन आवी, पण
पुरुषाविण किम परणाय ॥ अ. ॥ आज मु
ने दीहढलाहो ॥ पथी० ॥ चार व्यतीता,
चार तेचार युग सरिखा गणीए ॥ अ० ॥
॥ १२ ॥ कामिणिनी केलवणीहो ॥ प० ॥
सहीकरी मानी, नृप जाणे इणे साची दा
खी ॥ अ ॥ मोहनविजयेंहो ॥ पंथी० ॥सु
परे बनावी, उगणत्रीशमी ढालए भाखी॥
अ० ॥ १३ ॥

दुहा ॥ नरपति रमणी निरखिने, थयो
घणू ल्यलीन ॥ जिम आमिष पेखीकरी,
उलझे जलचर मीन ॥ १ ॥ भूप विचारे ए
हने, परणु वनहमझार ॥ दुजन विस्मय

कारणे, सफल करुं अवतार ॥ २ ॥ नृप भाषे नारी भणी, अहो रतिने अवतार ॥ जे तुझ चरणोदक पीये, तास करे भरतार ॥ ३ ॥ हुं तुझ चरणोदक पिऊं, थइ फिरुं वृषभ सरूप ॥ जो मुझने परणो तुमे, तो पण पूरुं अनूप ॥ ४ ॥ सा भाषेरे पंथिया, तो छे केहनीढील ॥ हुं एहिज इछुं-अछुं, ल्यो मनमथनो मील ॥ ५ ॥ अंध-हि वांछे आंखने, पंगू वांछे पाव ॥ तिम हुं वांछूंछूं पीयु, वरुं पण पूरे राव ॥ ६ ॥ योगणतो भूलीगयो- विकलथको महिपाल ॥ दंभफंदमांहे पड्यो. भरीय नसके फाल ॥ ७ ॥

॥ ढाल तीशमी ॥ मुजरो ल्योने जालिम जाटणी ॥ एदेशी ॥ आतुर हुवोजी परणवा, भुपति वन्नमझार ॥ साकहे लावो

जी निर्मल नीरने, लेयो चरणोदक सार, हिवे सहु जोजो कौतुकवातडो ॥ १ ॥ कामिनी कपटभंडार, नविलहे कोई तास चरित्रनो, ब्रह्मादिक पिणपार ॥ हिवे०॥२॥ नृप तव दोड्योजी नीरने कारणे, पेठो सरोवर माहे ॥ पात्र निपाव्योजी पोयणपत्रनो, भर्यो जल तेहमा उछाहे ॥ हिवे० ॥ ॥ ३ ॥ जल लेई आव्योजी नारी आगले, कहे इम वेकर जोड ॥ पाउ कहोतोजी हु धाउं पीयु, पूरो मनतणा कोड ॥ हिवे० ॥ ॥ ४ ॥ नारिय दीधो पद नपहायमा, मूकीने कहे धोय ॥ त्योकरो आचवन तोयनु माहरी वाउना होय ॥ हिवे० ॥ ५ ॥ अरहो परहाजी त्या अवलोकिने, पुरपति धाय पाय ॥ पीत्र पखाली मानवेला तिहा, चरणोदक चिनलाय ॥ हि ॥ ६ ॥को

टमें नाखीजी सुंदर फालीयुं, वृषभ सरिखो बनाय ॥ चाबख देई सरवरने तटे, फेरव्यो नारीयें राय ॥ हि० ॥ ७ ॥ जिहां त्रिय मूकेजी पायतणा तलियां, तिहां नृप मांडेजी हाथ ॥ मानवतीयें तिहां वननें विषे. धूर्त्यो अवंतीनो नाथ ॥ हि० ॥ ८ ॥ चारें दिशायै चार कलस मीसे, रेणुना तुंग बनाय ॥ तरुवर तणीजी साख करी तिहां, परण्यो प्यारीने राय ॥ हि० ॥ ९ ॥ धिग धिग होजोजी काम विटंबना, कामथी न रहेजी माम ॥ कामथी कामी कामिनी आगले, नर धूतायेछे आम ॥ हिवे० ॥ १० ॥ मानवती त्यां मनमांहे हसे. अहो अहो नाहनी बुद्धि ॥ धुंतुछुंजी तोहि हजी लगे, पडतो नथी कांई सुद्धि ॥ हि० ॥ ११ ॥ एबल सारुंतो इणे नारीने, निभ्रंछी मूकी के

ण ॥ मैंतो पाल्याजी मारा बोलडा हरपे एम हिएण ॥ हि० ॥ १२ ॥ ॥ नृप कहे केमनो हसोळो प्रिया, उलस्यु केम तुम होयु ॥ साकहे केमनो हु नवि उल्लसु, पामी तुम सम पीयु ॥ हि० ॥ १३ ॥ आज कृतारथ हु एहवे थई पण पूरयो मनस त ॥ भाग्यते वाध्योजो हिवे इहा मुझतपो, दुखनो पोहोतो अत ॥ हिवे० ॥ १४ ॥ कर ग्रहीने कहे नृप नारने, चालो डेरेजी हेव ॥ पीयूनो आग्रह घणु इम पेखीने, सा बोली ततखेव ॥ हि ॥ १५ ॥ स्वामी जी हमणा तुम सगे आवता, मुझने आवे लाज ॥ आवीस तिहाइजो घडी एक अतरे, जावो तुम महाराज ॥हि ॥१६॥ हरस्या नारीना वयण सुणी तिहा, डेरे आ-या भपाल॥ मा-ानविजयजी भापी ढ

हकती, तीसमी ढाल रसाल॥ हि० ॥१७॥

दुहा ॥ मानवती वसुनाथने, विदा क रीने ताम ॥ वस्त्रादिक फिरी वीणमें, संगो प्या अभिराम ॥ १ ॥ थई अवधूतण फे- रिने, भस्म चढावी अंग ॥ २ ॥ कोई वा टे पेहेली गइ, आवी बीजी वाट॥ योगण दिठी आवती, अति हरण्यो नृपराट ॥३॥ बेसाडी सिंहासने, भगति युगति बहु कि ध ॥ संतोषी अशनादिके, गीत गानरस पीध ॥ ४ ॥ नृपति विचारे चित्तमां, हजि यन आवी नार ॥ केसुं वनदेवी हती, गइ मुझने विप्रतार ॥ ५ ॥ के ठगणि कोइ ठ गिगई, इस्यो थयो प्रकार ॥ मुखमां आ- व्यो कोलीयो, गयो हिवे किस्यो विचार॥ ॥ ६ ॥ जोए योगण जाणशे, तो होसे नि स नेह ॥ गइतो आगी जाणदे, गया त

णी ओी ईह ॥ ७ ॥

॥ ढाल एकतीशमी ॥ मानो मानो सज्जन मुझरो मानो ॥ एदेशी ॥ नृपना मनमा खेचरीरे ॥ सूरिजन ॥ खटके थइने साल ॥ कामनी धूतारी ॥ भोलेवे सुरनरकोही ॥ माननी मतवारी ॥ माने नृप इंद्रजालनोरे ॥ सू० ॥ कोइक थइ गयो स्याल॥ का० ॥ १ ॥ पिण नृप नकहे कोयनेरे ॥ सू० ॥ रुपभ ग्यो तेवात ॥ मा. ॥ कोठीमा मुख घालिनेरे ॥ सु ॥ रोवे ज्यु तस्कर मात ॥ का ॥ २ ॥ योगण पिण अण जाणनीरे ॥ सू० ॥ थइ बेठी नृपपास ॥ मा ॥ एक एकथी राखे छुपीरे ॥ सू ॥ वातडली मतिलास ॥ का० ॥ ३ ॥ हेग उपाड्या रनहर्तार ॥ भ ॥ चाल्यो निमहिज सन ॥ मा ॥ निमहा मामण

गोठडीरे ॥ सू० ॥ मांडे पती उज्जेण ॥ का०
॥ ४ ॥ अनुक्रमें आव्या चालतारे ॥ सू०॥
मुंगी पट्टण तिणिवार ॥ का० ॥ सामिण क
हे महारायनेरे ॥ सू० ॥ सुण एक मेरा वि
चार ॥ का० ॥ ५ ॥ में योगी तें भोगियारे
॥ सू० ॥ चहेरावरे कुछ लोग ॥ मा० ॥ तेरे
संगें सहेरमेरे ॥ सू० ॥ केसें आवनका योग
॥ का० ॥ ६ ॥ में रहुंगी इण बागमेंरे ॥ सू० ॥
तुंजा नगर मझार ॥ मा० ॥ योगी सोही
जाणियेंरे ॥ सू० ॥ राखे लोकाचार ॥ का० ॥
॥ ७ ॥ व्याहके रतनवती त्रियारे ॥ सू० ॥ तूं
इत आए वेग ॥ मा० ॥ राखे जैसाहै तिसा
रे ॥ सू० ॥ तेरे मेरे नेग ॥ का० ॥ ८ ॥ फेर उ
ज्जेणि आउंगोरे ॥ सू० ॥ रे नृप तेरे संग ॥
॥ मा० ॥ योगणनी वाणी सुणीरे ॥ सू० ॥ पा
म्यो भूपति रंग ॥ का० ॥ ९ ॥ योगण उक्ति

ते वाडीयेंरे ॥ सू ॥ नृप आयो पुरमाहि ॥
॥ मा० ॥ दलथभण पिण सामुहोरे ॥ सू० ॥
आव्यो धरि उछाहि ॥ का० ॥ १० ॥ मान-
तुग अतिहृजसुरे ॥ सू० ॥ पुरमें कीध प्रवे
श ॥ मा ॥ दीधो उतारो महेलमारे ॥ सू० ॥
उतरयो दल सुविशेष ॥ का० ॥ ११ ॥
मानतुग मही पालनेरे ॥ सू ॥ दलथंभण
करे सेव ॥ मा ॥ भोजन भगति भली क-
रीरे ॥ सू ॥ माने करीने देव ॥ का ॥ १२ ॥
रतनवतीने परणवारे ॥ सू० ॥ सुदर महुरत
लीध ॥ मा ॥ दक्षिणपति पुत्रीतणारे ॥ सू०
मनह मनोरथ सिद्ध ॥ का० ॥ १३ ॥ रतनव
ती गिणे माहरारे ॥ सू ॥ सफल थशे अव
तार ॥ मा ॥ परणशे मुझने चोरियेंरे ॥ सू० ॥
मालवपती सिरदार ॥ का० ॥ १४ ॥ योगण
नी जोजो कलारे ॥ सू ॥ करशे खेल रसा

ल ॥ मा० ॥ मोहनविजयें वरणवीरे ॥सू० ॥ए एकत्रीशमी ढाल ॥ का० ॥ १५॥

दुहा ॥ योगणवेश उतारीने, पेहेरयो अदभुत वेश ॥ वीण छपावी बागमां, आवी नयर निवेश॥ १ ॥ रतनवती पासे गइ, मिलो घणे मनोहार ॥ रतनवती जाणे हिये, ए कुण सुंदरनार ॥ २ ॥ पूछे आव्या किहां थकी, कवण तुमारो नाम ॥ मानतुंगराजा तणी, हुंछुं वडारण भाम ॥ ३ ॥ आवी उझेणी थकी, मानवती मुझ नाम॥रूपें अमो तुमसारखी, नवि निरखी कोय वाम ॥ ४ ॥ मुझने भूपें मुकी अछे, तुमने जोवा काज ॥ तेमाटे आवी अछुं, तुज मंदिरमां आज ॥५॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥ चित्रोडा राणारे ॥ एदेशी ॥ दलथंभण कन्यारे, हरषे थइ धन्यारे, मानवती सम अन्या नेणों निरखी न

नदे भरिया नृपे नारी वरीरे ॥ ९ ॥ मान तुग महीधरियारे, पुरुषें परवरियोरे ॥ आवीने उतारियो डेरे मूलगेरे ॥ रयणी थई जाणीरे, पुत्रीभणी गणारे, सुणोरे सयाणी मके ऊमगेरे ॥ १० ॥ मानवती तव बोली रे, कपटालय खोलीरे, राणी अहो भोली सुण मुझ वीनतीरे ॥ कुल देवी अमारीरे, छे अतिहि अदारिरे, विलससे नही नारी अम नृपते वतीरे॥ ११ ॥उज्जेणी जाई, कुलदेवी मनाईरे, रतनवती चित्त लाई विलससे तदारे॥सवि भेदहु लहुछुरे,तेमाटे कहुछुरे,नृपभेली रहुछु तिणे जाणु सदारे॥ १२ ॥ खोटु नकहु छुरे, मत मानजो उछरे, कहातो जउ पूछु मारा रायनेरे ॥ छत्रीसमी ढालें- रे कहि मगल मालेरे मोहनें सुविशालें कहे गाइनेरे ॥ १३ ॥

दुहा ॥ राणी मानवतीभणी, कहे जई पूछो राय ॥ जेहवी दीये आगना, तेहवी सूंपो आय॥१॥मानवती ऊठी तदा, भूषण सजी विशाल ॥ लेई चाली हाथमें, भरि कंसारे थाल ॥२ ॥ मानवती रमझमकती, आवी प्रीतम पास ॥ पीउडेतो नवि उलखी, अहो अहो दंभविलास ॥ ३ ॥ प्रणिपति करी उभीरही, आगल मूकी थाल ॥ मानतुंग मधुरे स्वरें, बोल्यो तास निहाल ॥ ४ ॥ कहे कुण तूंछे कामिनी, किम आवी भररात ॥ भरि कंसारे थालिका, शीछे कहो मुझ वात ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेंतीशमी ॥ नांह्वानो नांहलोरे ॥ एदेशी॥ बोली मानवती सतीरे,करी घूंघटपट लाज॥राजन सांभलोरे॥गुरुणीछुं रत्नवती तणीरे, मानवती मुझ नाम॥ रा० ॥ १ ॥ कं

हीरे ॥ जननीने जणावीरे, वातडली वना वीरे, आपणने घर आवी वढारण गहगही रे ॥ १ ॥ तस रूप सरिखुरे, हुतो नवि प रखुरे, कहोतो आकरपु तुमपें अदिरेरे ॥ज ननी कहे जावोरे, इहा तास बोलावोरे, कि सिवार मत लावो तेडा मादिरेरे ॥ २ ॥ र तनवती लेइ चेडीरे, फिरी आवी नेडीरे॥ वढारण तेडी माताने मेलवीरे, कहो पुत्री यें जेहवीरे॥ द्रगें दीठी तेहवीरे, मानवती यें कला केहवी केलवीरे ॥ ३ ॥ नित वेस बनावेरे, गुण आप जणावेरे, गाई गीत सु णावे महुनें वश करेरे ॥ हिल मिल सावि सगरे चरितालो मचगेरे, हिवे जोजो र- गे नृप रनिता वगर ॥ ४ ॥ दलयभण रा जारे वजडाव वाजार ॥ नाजा अतिसाजा ढेग वाजियार, चारी रची सारिरे॥ मुहर

त निरधारीरे, उत्सव कर्या भारी सुरभि सुगंधियारे ॥ ५ ॥ कन्या सिणगारीरे, पहिरया जरतारीरे ॥ मोतिओमें समारी रतनवती भणीरे, सरणाइ वाजेरे ॥ नटनाटिक साजेरे. गुंजाला धाजे गाजे मृदंग विधें घणारे ॥ ६ ॥ वनिता मिली वादेरे, कौतुकने उमादेरे ॥ मानवती शुभसादें गाए सोहलारे, वडारण करी थाणेरे ॥ कोइ भेदन जाणेरे, सहु कोइ वखाणो लोक भली भलीरे ॥ ७ ॥ मानतुंग महीशेरे, सजी जान विशेषेरे, निसाणे नरेशे पडति ठोरियेंरे ॥ रतनवती करी संगेरे. जोरावर जंगेरे, आवी बिहु रंगे बेठां चोरियेंरे ॥ ८ ॥ मानवती थइ माझीरे, करे हलफल झाझीरे, सहुकोने मन बाझी वडारणतो खरीरे ॥ वरकन्या वरि... चिहुं फेरा फारियारे, ...

नदे भाग्या नृपे नारी वरीरे ॥ ९ ॥ मान तुग महीधरियारे, पुरुषें परवरियोरे ॥ आ वीने उतारियो डेरे मूलगेरे ॥ रयणी थई जा णीरे, पुत्रीभणी राणीरे, सुणोरे सयाणी मुके ऊमगेरे ॥ १० ॥ मानवती तव बोली रे, कपटालय खोलीरे, राणी अहो भोली सुण मुझ वीनतीरे ॥ कुल देवी अमारीरे, छे अतिहि अढारिरे, विलससे नही नारी अ म नृपते वतीगे॥ ११ ॥उज्जेणी जाई, कुलदेवी मनाईरे, रतनवती चित्त लाई विलससे तदा रे॥माँव भेदहु लहतुरे तेमाटे कहुछुरे,नृपभे ली रहतु तिणे जाणु सदारे ॥ १२ ॥ खो टु नकहु तुरे, मत मानजो उछरे, कहोतो जउ परु मारा रायनर ॥ त्रत्तासमी ढालें- रे कहि मगल मालर माहने सुविशालें रुठे गाइनेर ॥ १३ ॥

दुहा॥ राणी मानवतीभणी, कहे जई पूछो राय ॥ जेहवी दीये आगना, तेहवी सूंपो आय॥१॥मानवती ऊठी तदा. भूषण सजी विशाल ॥ लेई चाली हाथमें, भरि कंसारे थाल ॥२ ॥ मानवती रमझमकती, आवी प्रीतम पास ॥ पीउडेतो नवि उलखी, अहो अहो दंभविलास ॥ ३ ॥ प्रणिपति करी उभीरही, आगल मूकी थाल ॥ मानतुंग मधुरे स्वरें, बोल्यो तास निहाल ॥ ४ ॥ कहे कुण तूंछे कामिनी, किम आवी भरराति ॥ भरि कंसारे थालिका, शीछे कहो मुझ वात ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेंतीशमी ॥ नांह्लानो नांह्लोरे ॥ एदेशी॥बोली मानवती सतीरे,करी घूंघटपट लाज॥राजन सांभलोरे॥गुरुणीछुं रत्नवती तणीरे, मानवती मुझ नाम॥ रा०॥ १ ॥ कं

सारजे लावी अछुरे, तेहनो निसुणो विवे
क॥रा ॥अम घर एहवी रीतछेरे, अति
हि अपूरव एक॥रा ॥२॥जे अम नृपनी
पुत्रिकारे, परणे जोकोई वसुधार ॥रा ॥
तेतो पठो माहरोरे चाखे एह कसार ॥
॥ ३ ॥चाखो एह कसारनेरे, होमे कोड क
ल्याण ॥ रा ॥नहोतो वरकन्या भणीरे, उ
पजे कोई विन्नाण॥रा ॥४॥ जो सुख वा
छो राजनेरे तो जिमो झट एह॥रा ॥
भामाये भोलव्यो भर्तनेरे, नारी कपटनो
गेह॥रा ॥५॥ नप जाण्यु साचु कह्युरे,
एतो सुन्दर नार॥रा ॥ रीन हस हहा ए
हवीरे, नोग करीय प्रचार॥रा ॥६॥ क
हे नृप एहने नाडर जिम चाखु कसार॥
॥ रा ॥ नण दासु जठ नगर, नकरशो
कोइ विनाग॥रा ॥७॥नर जागग्यो को

लियोरे, करिने तेह कंसार ॥ रा० ॥ नृप
सुं करे केहने कहेरे, धूर्त निजघर नार ॥
॥ ८ ॥ आचमन जलथी करीरे, बोल्यो भू
प तेवार ॥ रा० ॥ वलि जेविध होयते कहो
रे, करियें सयल आचार ॥ रा० ॥ ९ ॥ पिण
मुझ किम परणी त्रियारे ॥ हाजिय नआवी
आवास ॥ रा० ॥ किम तेडी नाव्यां तुम्हेरे,
कारण स्योछे तास ॥ रा० ॥ १० ॥ मानव
ती बोली तदारे, सुणो उज्जेणाधीस ॥ रा० ॥
मिलशे षटमासें पछेरे, सा तुम विश्वावी
स ॥ रा० ॥ ११ ॥ गुरुगोत्रज पुज्या नथीरे,
पुजतां होए छमास ॥ रा० ॥ तुमने चालवा
नही दीयेरे, राखसे एह आवास ॥ रा० ॥
॥ १२ ॥ मत ए कोईने जणावजोरे, समझी रहेजो चित्त ॥ रा० ॥ वातडी करवा तु
मथकीरे, इहां हुं आवीश नित्त ॥ रा० ॥ १३ ॥

धूतीने एम भूपनेरे, आवी राणी पास ॥
रा ॥ कहे नृप कोई व्रत मांडियोरे, रहे-
शे इहां छमास ॥ रा० ॥ १४ ॥ त्यार पिछे
तुम पुत्रीनेरे, विलससे नहि उक्षेप ॥ रा० ॥
कोईने कहेता रखेरे, छानी वातछे तेण ॥
॥ रा ॥ १५ ॥ पट मासनो इयो आसरोरे,
दिनजाता सीवार ॥ रा० ॥ राणीयें सहु जा
ण्यु खरुरे, जूठन बोले ए नार ॥ रा० ॥
॥ १६ ॥ बाजीगरीना गोटकारे, केहवा र
माडेछे बाल ॥ रा ॥ मोहनविजयें वरण-
वीरे, रूडी तेत्रीसमी ढाल ॥ रा० ॥ १७ ॥
दुहा ॥ मानवती बीजी रयण, आवी
प्रीतमपास ॥ नृप त्रिय गुरुणी जाणीने,
आदर दीधो तास ॥ १ ॥ जोवे वक्रकटा
क्ष भरी सा टाली अदोह ॥ आकृति दे-
खी तहना नृप पाम्या व्यामोह ॥ २ ॥

मूर्छांगत राजा थयो, व्याप्यो विषय वि-
कार॥ तिम तिम सा दाखे घणा, हाव भा
व अधिकार ॥ ३ ॥ नृपें लटपट मांडी घ
णी, विलसवातें नार॥ पिण नवि जाणे रा
जवी, जे ईणें कीध प्रकार ॥ ४ ॥
॥ ढाल चोत्रीशमी ॥ मेंदीरंग लागो॥
एदेशी ॥ नृप कहे मानवतीभणीरे लाल,
हुं रंज्यो तुझ देख ॥ विषयी वसुधाता ॥
तुं पिण करुणा नेहथीरे लाल. हसि करी
साहमुं पेख ॥ वि० ॥ १ ॥ वाणी सुणी इ
म रायनीरे लाल, मानवती कहे ताम ॥
वि० ॥ रे मालवपति मुझनेरे लाल, वचन
कहो कां आम ॥ वि० ॥२॥ रतनवती प
रणी त्रियारे लाल, परणे नपोहोती आस
॥ वि० ॥ जे मुझनें प्रार्थो अछोर लाल, धि
ग धिग मदन विलास ॥ वि० ॥ ३ ॥ वाह

र जोईये जिहा थकीरे लाल, तिहांथी क्यु आवे धाड ॥ वि० ॥ मूकी द्यो भोलामणीरे लाल, रहेवा द्यो एलाड ॥ वि० ॥ ४ ॥ परणी घरणी जेहुवेरे लाल, तेहने कहियें एम ॥ वि० ॥ परनारीने एहवीरे लाल,वा तो कहियें केम ॥ वि० ॥ ५ ॥ इम निभ्र्ली रायनेरे लाल, कहिने कडुवा वेण ॥ वि० ॥ तो पिण मानवती थकीरे लाल, चोरे नही नृप नेण ॥ वि० ॥ ६ ॥ कामातुर हुउ घणुरे लाल, फिरफिर चाहो सग ॥ वि० ॥ मानवती तव कतनेरे लाल भाखे वरी उल्रग ॥ वि० ॥ ७ ॥ अहो अहा एयडु आकलारे लाल, किम हवा हो महाराज ॥ वि० ॥ हडु दासी राउलीर लाल जाति नही काइ भाज ॥ वि० ॥ ॥ ८ ॥ वचन सुणी वनितातणार लाल, ह

रण्यो तव मही पाल ॥ वि० ॥ कामविषयं सुख भोगव्यांरे लाल, थई उछुक उजमा ल ॥ वि० ॥ ९ ॥ इम अनुदिन सुख भोगवे रे लाल, मानवतीथी राय ॥ वि० ॥ गर्भ ध र्यो तव अनुक्रमेंरे लाल, पूरवपुण्य पसा य ॥ वि० ॥ १० ॥ एक दिन मानवती कहेरे लाल, सांभल प्राणाधार ॥ वि० ॥ गर्भ ध- र्योमें ताहरोरे लाल, र्यो तस करवो उ पाय ॥ वि० ॥ ११ ॥ पूत्रजनम थासे जिसेरे लाल, त्यारें तुमे महाराय ॥ वि० ॥ उझेणी भणी चालसोरे लाल, मुझने अत्र विहाय ॥ वि० ॥ १२ ॥ अंगजने केणी परेरे लाल, पालीस हुं कहो नाद ॥ वि० ॥ केम सहिस हुं अहोनिसेरे लाल, लोकमांहि अपवाद॥ वि० ॥ १३ ॥ थानारोतो थयोहिवेरे लाल, सोच कर्यांसु होय ॥ वि० ॥ तेमाटे मुझने

तुमेरे लाल, दियो सहिनाणी कोय॥ वि ॥
॥ १४ ॥ जिम तुम अगज उलखोरे लाल,
आवे तुमारे पास॥ वि० ॥ ते कारण मागु
अछुरे लाल, सहिनाणी सुविलास ॥ वि ॥
॥ १५ ॥ वचन सुणी वनितातणारे लाल,
दिये सहिनाणी सार॥ वि ॥ निजनामांकि
त मुद्रडीरे लाल, वलि मुगताफलहार ॥
॥ १६ ॥ वेहु सहिनाणी लेइनेरे लाल, सा
हरषी मनमांहि॥ वि ॥ ढाल कही चोत्रीस
मीरे लाल, मोहनविजयें उछाहि॥ वि ॥ १७॥

दुहा॥ हारउदारने मुद्रडी, कबज करी
ने ताम॥ ऊठी मानवती तदा, पियुने क-
री प्रणाम ॥ १ ॥ कहोतो जई आवु प्रभु,
रतनवतीने पास॥ हमणा पाछी फिरी तुर
त, आवीस इणें आवास॥ २॥ नृपति भे
द जाणे नही, दीधी शीख तिवार ॥ मान

वती पिण पाय नमी, आवी मंदिरबार ॥ ॥ ३ ॥ ताराभर रयणी समे, आवी बागम झार ॥ वेष उतारी वीणामे, संगोप्यो तिणिवार ॥ ४ ॥ योगणवेश फिरी सज्यो, चिंते चित्तमझार ॥ बोल सुबोल थयो माहरो, धूत्यो प्राणआधार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पेंतीशमी ॥ मुरलीनी देशी ॥ हिवे पीउ पहेली पाधरी, जाऊं नगरी उज्जेण ॥ इहां रहेइयो फायदो, पोहोचुं तात पएण ॥ नारी धूतारी कहियें, पीयुने कीधो पाधरो नेत्र ॥ त्रियाथी अलगा रहियें॥ ॥ १ ॥ मातपिता तिहां माहरां, जोतां होसे वाट ॥ झंखर झुरी थयां हसे, माहरो करिय उचाट ॥ ना० ॥ २ ॥ काम सरेन विलंबिये, डाह्यां एहिज काम ॥ मानवती वीणा लेई, रयणियें चाली ताम ॥ ना० ॥ ३ ॥

एकाकी निर्भय थकी, कठिन करीने मन्न॥ इम अनुक्रमें दिन केटले, आवी तेणे वन्न ॥ना ॥४॥ तेणे सरोवरे ऊभो रह्यो, जि ह्रा पीयु कियो वृषभ स्वरूप॥ना०॥ तेपि ण दीठो जायगा॥ वलि आगल चाली घू प॥ना०॥५॥ वोली विषमी वाटडो, आ वी मालवदेश॥ना ॥ दिन केते निजनय रमा, आवो कीध प्रवेश॥ना०॥६॥ मा-तपिताने जई मिली, कोइन जाणे जेम॥ ॥ना ॥ पाम्या हर्ष सहु रीजता, हेजन होवे केम॥ना ॥७॥ वल्लभ जे विछड्या हुवे, तम फिरी मेलो होय॥ना ॥ ते सु ख जाणे केवली, केजाणे दिल दोय॥ना० ॥८॥ मातपिता आगल कह्यी, पीयु धूत्यो ते वात॥ना ॥ साभलीनें सहको हस्या, पुत्रीनो अवदात॥ना ॥९॥ वेश योगण

नो परहरी, आदरयो मूलगो वेश ॥ ना०॥
अन्नादिक आरोगियां, हर्ष धरी सुविशेष
॥ ना० ॥ १० ॥ रातें सुरंगे होइने, गइ एक
थंभे आवास ॥ ना० ॥ पोहोरायतनें जगाडि
या, वातो करे सुविलास ॥ ना० ॥ ११ ॥ या
मिकक्हेदिनएटला, जगव्यो महि अम के
म ॥ ना० ॥ सुं कांइ पोढी रह्यांहतां, तव
साबोली एम ॥ ना० ॥ १२ ॥ मौनव्रत आद
रयो हतो ॥ वीरा एतादीह ॥ ना० ॥ तेव्रत
आज पुरोथयो, तारे खोली जीह ॥ ना० ॥
॥ १३ ॥ इम करतां पगडो थयो, साचव्यो
ग्रही अचार ॥ ना० ॥ आंबिल तप मांड्यो
फिरी, पाले समकितसार ॥ ना० ॥ १४ ॥
निज वालमने धूततां, जेकांइ लागो पाप
॥ ना० ॥ १५ ॥ मन वच काया शुद्धथी, आ
लोचेते आप ॥ प्रतिक्रमणा बिहुं टंकना,

करे अहनिश मन शुद्ध॥ना ॥जेहीवे भ वि प्राणियो, तेहने हुवे प्रबुद्ध॥ ना ॥१६॥ जिनधर्मना महिमायकी, पामे मगलमाळ ॥ ना ॥मोहनविजयें वर्णवी, ये पैंत्रीशमी ढाल ॥ ना ॥ १७ ॥

दुहा ॥ मानतुग हिवे गुरुणिनी, जोवे अहनिश वाट ॥ चिंते किम नथी आवती, गर्भ धर्या पछि माट ॥ १ ॥ नृपतो ति हा रह्यो झुलतो, एतो आवी गेह ॥ हिवें सहु कोइ साभलो, निपट धरीने नेह ॥२॥ मानवती यामिकभणी, कहे निसुणो एक वात ॥ अत पुरमा जइकहो, मुझ गर्भत- णो अवदात ॥ ३ ॥ यामिक चमक्या सा भली, गर्भधर्यो डणे केम ॥ पुरुषप्रवेश नही इहा, तोका वोल एम ॥ ४ ॥ जिम म च्छी जलथी थइ गिरथी जिम हरिनार ॥

तिमसुं एहने पिण गरभ, थयो हसे निरः धार ॥ ५ ॥ पोहोरायत दोड्या थका, आव्यां पुर दरबार ॥ नृप पटराणी आगले, कह्यो गर्भ अधिकार ॥ ६ ॥ तालीदेई सहुको हसी, निसुणी कौतुक एह ॥ पिउविण गर्भएं किम धर्यो, रहि एकथंभे गेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल छतीशमी ॥ बिंदलीनी देशी ॥

सोले नरपति नारी, तेणे मिलीने बुद्धि विचारीहो ॥ धणधणनी द्वेषी ॥ पियुने पत्र लिखीजे, इण कामे ढील न कीजेहो ॥ध० ॥ १ ॥ कागल लिखवासारु, पटराणी बेठीतेवारुहो ॥ ध० ॥ कुशलक्षेम परिपाटी, लिखि करीने लिपि करणाटीहो ॥ ध० ॥ ॥ २ ॥ अपरंच समाचार एक, तुमे प्रिछजो पीउ सुविवेकहो ॥ ध० ॥ तुमे दक्षिण देशे मोह्या, रही रतनवती संगसोह्याहो॥

घ० ॥ ३ ॥ पिण घरनी खबरनथीलेता, कोइ साथे शुद्धनथी केताहो ॥ घ० ॥ तेवा रु नथी करता, परदेशें रह्योछो फिरताहो ॥ घ० ॥ ४ ॥ वेहेला वळजो कंता, रखे र हो तिहा थई निचिंताहो ॥ घ० ॥ मानव ती तुम त्रीअछे, तेतो आपभ ससत्वा हु ईन्लेहो ॥ घ० ॥ ५ ॥ वेंचजो तेहनी वधा- इ, खोटु मतमानजो काइहो ॥ घ० ॥ य- दी अमने खबरपठाइ, अमे वेंची पान मि ठाईहो ॥ घ० ॥ ६ ॥ जेहनी होये अतिही पण्याइ, तसघर हुये येहवी वाईहो॥ घ०॥ पियुरिण पत्र जेआवे येहवी नारी कुण पा मेहा ॥ घ० ॥ ७॥ तमघर ये त्रिय राजे, करे पटराणीना राजेहो ॥ घ० ॥ देवी हो य तेहवी पातगी नम पाहाच नहवीहो॥ घ० ॥ ८ ॥ तम निहा मगनडोहमने प्रे

मदा इहां बालिक प्रसवेहो ॥ ध० ॥ तो
घरे शानेआवो, जव वेहु लाभ कमावोहो
॥ ध० ॥ ९ ॥ सीमंत उपर वहेला, आव
जो मतथाजो गहेलाहो ॥ ध० ॥ लेख लि
खीने सीधो, कर प्रेक्षने वाली दीधोहो ॥
ध० ॥ १० ॥ पत्रये नृपकर दीजे, मुख वच
नें प्राणिपति कहेजेहो ॥ ध० ॥ चाल्योते का
गल लेइ, हरषे हिवे नारी सवेइहो ॥ ध०
॥ ११ ॥ माहोमांहेकरे वातो, सहु बेठी दि
वसने रातोहो ॥ ध० ॥ आपण जोतांये हि
लसे, पियु मानवतीने मिलसेहो ॥ ध० ॥
॥ १२ ॥ पिणआपण वडवखती, थइ आप
णा मननी रुखतीहो ॥ ध० ॥ कागल वांच
से प्यारो, तव रहेशे येहथी न्यारोहो ॥ ध० ॥
॥ १३ ॥ विरुइ सोक्य सगाई, जोतीरहे छि
द्र सदाइहो ॥ ध० ॥ सोक्य सुलीथी भुंडी,

सोक्य खटके भाली उठीहो ॥ ध० ॥ १४ ॥ ते नरने दुख भारी, होये जस मदिर वे- नारीहो ॥ ध ॥ दत कलहे दिन जाये, येक येकथी वढवा धायेहो ॥ ध ॥ १५ ॥ मुडो वोलेने विखोडे, सामोसामा कटका मोडे- हो ॥ध० ॥ नारीकहे दीन होइने, प्रभु शोक्य मदेजो कोइनेहो ॥ ध० ॥ १६ ॥ नामे वहिन कहिजे, पिण वेरण थइने छिजेहो ॥ ध० ॥ ढाल मोहनें कही हरषी, पटत्रिशमी सा- कर सरिखीहो ॥ ध० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ पोहोतो प्रेष्य अनुक्रमे, मानतुं ग नृपपास ॥ करी प्रणाम कागल तुरत, दीधो धरि उल्लास ॥ १॥ वान्यो कागल खो लने प्रिछ्यो सविविरतत ॥ मानवतीकेरी कथा, वाचत चमक्या चित ॥ २ ॥ युवतीयें एहवी लिखी, मानवतीनी वात ॥ सेंतो मा

नवती धरे, यंत्र जड्याछे सात ॥ ३ ॥ तो कौतुक वातडी, एकिम मानीजाय ॥ किण हिक शोकें वधथी, होसे लिख्यो बनाय ॥ ॥ ४ ॥ जिहां कीडी नविसंचरे, जिहां नही पवन प्रगल्भ ॥ तेहवे गेहेरह्े थके, गोरी किमधरे गर्भ ॥ ५ ॥ एहवे वलि बीजो ति-मज, कागल आव्यो जत्त ॥ मानवतीनी वा ततव, चोकस बेठी चित्त ॥ ६ ॥

॥ ढाल सदतीशमी ॥ नृपती विचारेहो लाल, एसवि साचुं राज ॥ कागल कूडोरे राणीमांने नालिखे ॥ १ ॥ मेंतो एनारीहोला ल, असती नजाणी राज ॥ खीचडी वखाणीरे एतोलागी दांतडे ॥ २ ॥ धिगधिग एहनेहो लाल, एहसुं कीधुं राज ॥ कीधुं इणेरे लोकमांहे लजामणुं ॥ ३ ॥ फिट कुलहोणीहोलाल, ला जन आवी राज ॥ ते नवि जाण्युंरे भुंडो

छानो नारहे ॥ ४ ॥ वली नृप जाणेहोलाल, थाकन एहनो राज ॥ वाकये माहारोरे ना- री मुकी येकली ॥ ५ ॥ योवन आवेहोलाल, विरह जगावे राज ॥ रहे केम नारीरे मोहे लें येहवें येकली ॥ ६ ॥ हु पिण इहाथीहो- लाल, सीपरे चालु राज ॥ हजियन परणेरे हुया महिना पट थया ॥ ७ ॥ गोत्रज पूज्या होलाल, विण पटमासें राज ॥ दक्षिण रा जारे मूने नदिये सीखडी ॥ ८ ॥ सीपरें की जेंहोलाल, नृप नदेजावा राज ॥ मदिरे ये हवारे नारीकेरा सूलडा ॥ ९ ॥ मुखे करी ग्रा सीहोलाल, आहियें छुछुदरी राज ॥ तेहने न्यायेंरे राजा सोचे सोचना ॥ १० ॥ काग ळ पाछोहोलाल, नृपें लिखि दीधो राज ॥ चाल्यो सीधोरे लेई प्रेष्य उतावलो ॥ ११ ॥ अवती आवीहोलाल, राणीने कागळ राज ॥

॥ आगल दीधोरे जईने भाखी वातडी ॥ ॥ १२ ॥ राणीउं रंजीहोलाल, कागल वांची राज ॥ पिउडो वहेलोरे हिवे घरे आवसे ॥ १३ ॥ सोकडलीने साहीहोलाल, पिउडो बांधसे राज ॥ कूटसे गाढीरे घोडाकेरे चाबखे ॥ १४ ॥ आपणे हससुंहोलाल, देईदेई ताली राज ॥ इमकरे नारीरे खुण वेठी वातडी ॥ १५ ॥ एहवे महिनाहोलाल, षटथया जाणी राज ॥ मानतुंग राजारे दक्षिणसायने वीनवे ॥ १६ ॥ हिवेतो गोत्रजहोलाल, रह्या हसो पूजी राज ॥ तेमाटे आपोरे हिवे मुने सीखडी ॥ १७ ॥ सुसरो भाखेहोलाल, गोत्रजे केही राज ॥ पूजवुंछे केहनेरे येतो आज मैं सांभल्युं ॥ १८ ॥ साहमुं तुमारेहोलाल, जईने उज्जेणी राज ॥ पूजवीछे गोत्रजरे छटे मासे साहिबा ॥ १९ ॥

अमेतो सु जाणहोलाल, तुम घर वातो राज॥राउली वढारणरे आवी माने कही गई॥२०॥ ढीलतो अमारीहोलाल, कोई नथी जाणो राज॥ढील तुमारीरे हूती ए ता दींहनी॥२१॥मानतुग राजाहोलाल, सुसराने जपे राज॥गोत्रज कोइरे अमारे नथी पूजवी॥२२॥गुरणी तुमारीहोलाल, परप्या तिणे दिन राज॥पढु खवाडीरे मु ने एहवु कहि गइ॥२३॥छटे महीनेहो-लाल, घरणी मिलसे राज॥सुसरो इहा-थीरे थाने जावा नही दीए॥२॥तेहना क ह्यार्थी रोलाल, इहा अमे रहिया राज॥मा हरे वढारणारे मगे आणीको नथी॥२५॥ दलथमण राजाहोलाल, जमाईने जपे रा ज॥गुरूणी अमारीरे हवी कोइछे नही॥ ॥२६॥ तुमने अमनहोलाल, कोइगइ धू

ती राज ॥ ढाल साडत्रीसमीरे सारी भा-
खी मोहनें ॥ २७ ॥

दुहा ॥ सभा सहू खडखडहसी, बिहु नृ
पनी सुणिवात ॥ सहुको कहे कोइ धूतणी,
धूती गइ करिघात ॥ १ ॥ मानतुंग राजा
हिवे, मागी शीख तिवार ॥ दलथंभण नि
ज पुत्रिने, संप्रेडे सुविचार ॥ २ ॥ दीधो ब
हुलो दायजो, हयगयरथ धन कोडी ॥ पु
त्रीयें निज मातथी, करी शीख करजोडी
॥ ३ ॥ रतनवती उज्येणपति, चाल्यो लेई
शीख ॥ बंदी जन कहे जोडए, रहेजो को
डी वरीष ॥ ४ ॥ दलथंभण नृप पुत्रीने, सं
प्रेडी वलियांह ॥ मानतुंग नृपनारिले, मा
लवदेस खडियांह ॥ ५ ॥ जबते वाडी आग
ले. नीसरीउ भूपत ॥ तदा सुरंगी योगणी,
चढी नृपतिने चित्त ॥ ६ ॥ योगण जोई बा

गमा, नरपति आपोआप ॥ पिण क्याही दीठी नहो, तव करे भूप विलाप ॥ ७ ॥

॥ ढाल अडतीशमी ॥ चादलिया संदे-सोरे कहेजे मारा कतनेरे ॥ एदेशी ॥ किहा रे गुणवती मारी घोगणीरे, गई मुझने ईहा छोडरे ॥ कोईछे उपगारी वालो साधनो रे, मुझने मेलवे दोडरे ॥ किहा० ॥ १ ॥ नेह डलो करीने छेह देईगईरे, ए दुख केम खमायरे ॥ वाहलानो विछोहा अधक्षणमा-त्रनोरे, धीरपणे नसहायरे ॥ कि० ॥ २ ॥ छानीउपीने रहीहोय जिहारे, तो देदारिसण आयरे ॥ वीणाना झणकारा तारा सामरेरे, तुझ विरहो नसहायरे ॥ कि ॥ ३ ॥ इणेवाटडिये तुझ थकी वातडीरे, करतो हु आव्यो एमरे ॥ तिणहीज वाटडिये तुझ विण चालतारे, सागलमे केमरे ॥ कि ॥ ४ ॥ ता

रीतो हुं करतो अहनिश चाकरीरे, लोपं॰ तो नही तुझ काररे ॥ हाथनी हाथेलीपर राखतोरे, दुहवतो नहिकोई वाररे॥ कि०॥ ॥५॥ तो किम एहवुं तुझने ऊकल्युंरे, जे गई देई छेहरे ॥ उडी तुं मननी मिलति गइ नहीरे, प्रीछ्यो ताहरो नेहरे ॥ कि० ॥ ॥ ६ ॥ वाडीमां वसुधाता पूछे रुंखनेरे, सामिणि दीठी केणरे ॥ वाटलडी वतावो जिहां तेगई हुवेरे, इमकहे नृप उझेणरे ॥ ॥ कि० ॥ १७॥ ज्यारेते डोले पवनथी रुंख डारेत्यारे जाणे भूपालरे ॥ कहेछे शिरंधुणी अमें दीठी नहीरे, अहोअहो विरह जजालरे ॥ कि० ॥ ८ ॥ केकीने पूछे तिमहिज भूधणीरे, किहां किहां बोले वाणरे ॥ राजा तवजाणे एकहे रीसथीरे, किहांछे योगण इण ठाणरे ॥ कि० ॥ वाडीमांहे फिरतो ग-

जा वियोगियोरे, सुभट करे अरदासरे ॥ स्वामीशी चिंताकरो एवडीरे, गाठथी न-गयोछे थासरे ॥ १० ॥ योगणीयें जो ओडी तुमथी प्रीतडीरे, तो जावाद्यो तासरे ॥ पीयडीउ वहोतेरी मिलसे आयनेरे, सिरजो छो काइ इम खासरे ॥ ११ ॥ आवी केइ मिलसे एवी तुमनेरे, मकरो खोटो विखासरे ॥ विलप्या इहा तुमने आवो नही मिलेरे, चालो ज्यु पोहोचो आवासरे ॥ कि० ॥ १२ ॥ योगणनो स्वामी वाकस्यो काढियेरे, तुम-ने पिण लागा पटमासरे ॥ पुरमाहें परवरिने शुद्धकरी नहीरे, मिलवो इच्छोछोहिवे तासरे ॥ कि० ॥ १३ ॥ आदरना भूख्या योगी साहिबारे निणआदर रहे केमरे ॥ सुभटें इम दीधी नपने धारणारे, चाल्या आगल तेमरे ॥ कि० ॥ १४ ॥ क्षणक्षणमा समारे

थीगणने सदारे, मानतुंग महीपालरे ॥भा खीए मोहनविजें हेजथीरे, ए अडत्रो-समी ढालरे ॥ कि० ॥ १५ ॥

दुहा ॥इम अनुक्रमे चालतां, पाम्या काननतेह ॥आवीयाद नरेशने, अवछर प रणी जेह॥ १ ॥चरणोदक पीधुं जिहां, ते पिण दीठी भूम ॥ सामिण अपछरने विर ह, अवनीपति रह्यो घूम॥ २ ॥एहवे आ व्यो दोडतो, दलथंभणनो दूत॥ लांबी जं घा धरणीनो, आशाधर अवधूत ॥ ३ ॥ मा नतुंग नृपने कहे, तेह दूत तिणवार ॥ मुं गीपट्टन सांमुहा, पाछा फेरो तुपार ॥४॥ नृप कहे दूतभणी इस्युं, पाछा वाले केम॥चोरीने आव्या नथी, कांइ सुसरानुं हेम ॥ ५॥ उंल घी अरधी धरा, वोल्यो विषमो घाट॥कारण कहोतो इहांथकी, पाछी लीजे वाट ॥ ६ ॥

॥ढाल एकोणचालीशमी॥दूतकहे कर जोडिनेंरे, कारण सुण कहु हेव ॥महारा- जा॥ खद वुरो जगमा अछेह्रोलाल ॥चदे री नगरी धणीरे, जितशत्रु नामे देव ॥ मा ॥खे० ॥ १ ॥ तेहने रतनवतीभणीरे, विवाहनो कीधो थाप॥मा०॥पिण तेहने देवातणीरे, पाडीन हूती छाप ॥ मा० ॥ खे०॥२॥ रतनवतीयें एहवेरे, पण तुम ऊ पर कीव॥मा०॥तुमे पिण परण्या आवी नेरे, सकल मनोरथ सिद्ध॥मा०॥खे० ॥ ॥ ३ ॥ रतनवती लेइ करीरे चाल्या तुमे जव साम॥मा०॥ तव जितशत्रु भूपतिरे, मेली सेन्या नाम॥मा०॥खेद० ॥ ४ ॥ आव्यो मुगीपट्टणेरे, करवा अतिहि विरो ध॥मा० ॥ कहेछे पोते कन्याकारे, नहीं ना करस्युं युद्ध॥मा०॥खे०॥ ५ ॥ दलथ

भणराजा कनेरे, तेहवो नथी कांइ सेन ॥ मा० ॥ अगिए बांधी सांहमीरे, भीडे जि- तशत्रुथी जेण ॥ मा० ॥ ६ ॥ तेमाटे तुम ते डवारे, मूक्योछुं कारण तेण ॥ मा० ॥ मान तुंगें सवि सांभलीरे, दूतनी वात रसेण ॥ मा० ॥ खे० ॥ ७ ॥ नृप मूछे वल घालिनेरे, भुजबल तोली कृपाण ॥ मा० ॥ सुभटने की धा साबतारे, पाछा खड्या केकाण॥ मा० ॥ खे० ॥ ८ ॥ रतनवती रमणीभणीरे, वोला- वी उझेण ॥ मा० ॥ नृप दक्षिणादिश सांमु- होरे, मूक्यो उपाडी सेन ॥ मा० ॥ खे० ॥ ९ ॥ मुंगीपट्टन आवियारे, वेहेता केते दीस ॥ मा० ॥ निसाणे डंका दीयारे, हयवरनी हु इ हींस ॥ मा० ॥ खे० ॥ १० ॥ दलथंभण रा जा भणीरे, खबरथइ तिणवार ॥ मा० ॥ आ व्यो उझेणीनो धणीरे, कुमर लेइ परिवा

र॥ मा० ॥ खे ॥ ११ ॥ सुसरो नमाड़ वि-
हुमिल्यारे, थरक्यो जितशत्रुराय॥ मा० ॥
चित चिंते एविहुं थकीरे, जीती केम न-
वाय॥ मा० ॥खे० ॥ १२ ॥ जो जाउ चदेरी-
येरे, युद्ध कस्याविण दोड ॥ मा० ॥ तो स-
हुको हासीकरेरे,अने वली भोडु केण मोड
॥ मा० ॥ खे० ॥ १३ लिखित हसे ते था
यसेरे क्षत्री वट छोडे कोय ॥ मा० ॥मो
ठाथी हारघा भलारे, साहमु शोभा होय॥
मा ॥ खे ॥१४ सैन्यलेई हु आवियोरे,
किण मुख जाउ फेर ॥ मा ॥ पाछो फिरे
लाजे पितारे, हमणा करीश घेहु जेर ॥
॥ मा ॥ खे ॥१५ ॥कायर हूआनछूटियेरे,
वेरी वश पडियाह ॥ मा ॥ योगमायाछे-
जो पाधरीरे, रसतो वाहनी छाह॥ मा ॥
खे ॥ १६ ॥ इम करे वेठो आलोचनारे,

जितशत्रु भुपाल ॥ मा०॥मोहनविजयें कही
भलीरे, उगणचालिशमी ढाल॥ मा० ॥ १७॥
दुहा॥ दक्षिणपति उज्जेणपति, एबिहु ए
कण पास॥ चंदेरीपति एकलो, भीरन कोई तास॥ १ ॥ फोज मिली तव चिहु दिसे,
कूदे चपलतुरंग॥ पाखरियां तलपो भरे, व
नना जेम कुरंग॥ २ ॥ सज्या छत्तीसे आ-
युधें, जरदाला झुंझार॥ तंगकसी ताजीत
णा, उपरहुवा असवार॥ ३ ॥ बिहुं सेन्या
आणियें अडी, पडी नगारेठोर ॥ जाणे ग
यणे गाजतो, ऊनहियो घनघोर॥ ४ ॥
॥ ढाल चालीश मी ॥ राग सिंधु ॥ सेन
बिहुं उलटी आमुही सामुही, गुणियणें रा
ग सिंधु बजाया॥ रजचडी अंबरे अश्व प
डतालथी, तरणीना किरणने तेण छा-
या॥ १ ॥वडा योधजूटा घटामांहे छूटेपटा,

लटपटा लाल शिरथी लपेटा॥ अटपटा ल टपटा लपटकरता भटा, खटपटा तेह्नुवा भे ट भेटा॥ वडा० ॥ २ ॥ हाककरी ताकत्ते डा कमाहे ग्रहे, झाक खगवाहीयें राकफेर॥ ताणीने बाण अरिप्राण उपर दीये; फस मसे धसमसे घालिघेरे॥ वडा० ॥ ३ ॥ धड हडे धरणिनें नालि पिण गडगडे, अडवडे योध रणमाहि फिरता॥ खडखडे ढाल अ रि तुड केई रडवडे, झडपडे कुतनी आगि खिरता॥ वडा० ॥ ४ ॥ धमधमे धिंग तिहां कायरा कमकमे, चमचमे घाववहे शोण-धारा॥ सुभट संग्राममा विकटथइ आफले विकटभट थाट रोपें अटारा॥ वडा० ॥ ५ ॥ हारिया सुभट जितशत्रु नृप रायना, दंत तृणलेइ ऊभा वीचारा॥ रण रह्यो हाथ उ ज्जेणपतिनें तदा, जीतना दीध मोटा न-

गारां ॥ वडा० ॥ ६ ॥ नयरी चंदेरीपति प्राण
ऊगारवा, लेइ निज सैन्य नाठो बिचारो॥
मानतुंग महीपने सुसर करजोडी कहे, आ
जनो दीह मुझ गृहे पधारो ॥ वडा० ॥७॥
स्वामी उज्जेणनो सुसरानें आग्रहें, नयर
मां आवी दीधा उतारा ॥ अशन आरोग
या खेद उतारिया, सांसतो कीध मोटा तु
खारा ॥वडा०॥८॥एहवे अवसरे गगन घन
उंनह्यो, चपल चपला घटामांहि चमके ॥
गडडगडडाट करी गाजतो दह दिसें, घड
ड तरु गिरिधरा धडकी धमके॥ वडा० ॥
॥९॥ बांधी कज्जल जिसि जिहां तिहां को
रणी, धोरणी बगतणी शुभ्रभावें ॥ नीर
दादुरमिसें काज बकने चड्या, मानीयें विं
रहीं नरने बिहावे॥ वडा० ॥ १० ॥ झटक-
री प्रच्छटें विकट घट प्रछटा, प्रगट जल-

धोरे प्रगट पपोटा ॥ जाणायें नीर भूपण धरयो धरणियें, तेहना झगमगे रत्न मोटा॥ वडा ॥११॥ क्षणकमांहे करी नीरमयी मेदिनी, विहग पिण नवि उडे नीड छंडी ॥ पथिके पथकर खेदपण परहर्यो, मेह झड एहवो जोर मंडी ॥ वडा० ॥ १२ ॥ मान तुगे तव मार्ग विपमा लिखि, श्वशुरकुल माहि रहियो चोमासो ॥ ढाल चालीशमी मोहनें एभणो, मानवतीनो सुणो हिवे तं मासो ॥ वडा० ॥ १३ ॥

दुहा ॥ मानवती हरपे रहे, जिहां एक थवो धाम ॥ गर्भस्थितिपुरण थई, प्रसव्यो बालक ताम ॥ १ ॥ पोहोरायते जइ विनव्यु, पटराणीने समाज ॥ मानवती ए कथभिंध, बालक प्रसव्यो आज ॥ २ ॥ एह हकीगत भूपने, लिखजो विस्तररीत ॥ जि-

म नृप बालक जोइने, पामे मनमां प्रीत ॥ ३ ॥ राणीयो मेल्हीलिलो. मूक्यो तिमहिज लेख ॥ केते दिवसें शेभकें, नृपने दीधो देख ॥ ४ ॥ कागल वांची चित्तमां, नृप पाम्यो विश्लेष ॥ बालक केम प्रसव्यो इणें, कोइक कारण एष ॥ ५ ॥ सीख लही सुसुराकने, कागल वांचत खेव ॥ नृप चिंते बालकभणी, जइ जोउं स्वयमेव ॥ ६ ॥ छडे प्रयाणे चालतो, धरतो योगण चित्त ॥ पाम्यो ऊज्जयणीपुरी, मानतुंग महिपत्त ॥ ७ ॥

॥ ढाल एकतालीशमी ॥ पुरमां पेसारो कस्यो, भूपें निज परिवार॥ पुरकन्याये मोतियें, वधाव्यो वसुधार ॥ सुगुणिजन सांभलोरे ॥ १ ॥ नृपने लोक पगेंपगें, प्रणमे धरिले नेह॥इण आडंबरें आवियो, मानतुंग निजगेह ॥ सु० ॥ २ ॥ सुभटसवे कीधा वि

रा, सनमानी सोच्छाहि॥ एकाकी नृप अ
वियो, निज अंतेउरमांहि॥ सु०॥ ३॥ रतन
वती आदें प्रिया, पियुना प्रणमी पाय॥
लाजकरी ऊभी सहू, आसने बेठो राय॥
सु०॥ ४॥ पूछे नृपप्रेमदा भणी, मानवती
विररत॥ अगज केम जायो इणे, कहो मु
झ आगल तत॥ सु०॥ ५॥ खडखडखड स
हुको हसी, कंत भणीकहे एम॥ स्वामी मा
नवती तणो, कूडो कया हुए केम॥ सु०॥
॥ ६॥ ए गुणवती गोरडी तनुज रमाडे वि
शाल॥ अमथीतो पिउडा विना नवि प्रसवा
ए बाल॥ सु॥ ७॥ भाग्यरत पियुडा तुमे,
जेए पाम्या नार॥ तो सुतनोस्यो आसरो,
धन्यधन्य तुम अवतार॥ सु०॥ ८॥ एहना
पुत्रने आपजो, पाट तुमारो नाह॥ ए तुम
ने मजुरालशे, राखजो एहवो चाह॥ सु॥

॥९॥ जुवो मुख तुम पुत्रनो, जइ एकथंभे गेह ॥ इहां सुं आव्या पाधरा, चूक्या अव सर एह॥ सु०॥ १०॥ तुमथी मानवतीसती, रीसाणी महाराज ॥ तेमाटे जावो वहि, मक रो अमारी लाज ॥ सु० ॥ ११ ॥ इम सघली हासीकरे, पिशुनी वारंवार ॥ राजाएं निज मंत्रिने, तेडाव्यो तिणिवार ॥ सु० ॥ १२ ॥ कहेरे केम अंगज इणें, प्रसव्यो केहीरीत ॥ सचिवकहे जाणुं नही, जेथइएह अनी-त ॥ सु० ॥ १३ ॥ मुझने पिण कह्यो राणि-यें, नजरें निरख्यो नांही ॥ साच झूठनो पारिखो, चालो जोइयें क्षणमांहि ॥ सु० ॥ ॥ १४॥ जोजोधर्म प्रभावथी, होसे मंग-लमाल ॥ मोहनविजयें वरणवी, एकता-लीशमी ढाल ॥ सु० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ ऊठ्या अंतेउरथकी, मंत्रीने म-

ाराज ॥ आव्यो एकथभे गृहे, बालक जो झा काज ॥ १ ॥ साहिनाणी घरनी सकळ, अचल धरापती दीठ ॥ तिम तिम हृदये भूप ने, विस्मय अतिहि पईठ ॥ २ ॥ जाणे नृप निजचित्तमा साहिनाणी मुझ्रतेह ॥ प्रसव्यो केम बालक इणें दैवगति कोई एह ॥ ३ ॥ यत्र उघाड्या घरतणा, पेठो नृप घसि माहि ॥ दीठी तनुज हुलरावती, मानवती सोछाहि ॥ ४ ॥ मानवतीयें कतने, दीठो न यर्णो नाम ॥ सेजथकी ऊठी करी, लज्जाक री रहि ताम ॥ ५ ॥ पियु बेठो पर्यंकपरे, दीठ् बालक रूप ॥ कोपें दृग वांकीकरी, भाखे त्रियने भूप ॥ ६ ॥

॥ ढाल बेतालीशमी ॥ पियु पद्मिणि ने पूछेजी, बोलो मधुरी वाण ॥ हाथ ल- गाडी मूळेजी ॥ बो ॥ कहे सा ु इहा तुछे

जी॥बो०॥सुतनुं कारणसुंछेजी॥बो०॥हुं परदे
श गयोहतो मुग्धे, किम प्रसव्योतें बाल ॥
पियु० ॥बो०॥ १॥पुरुष प्रवेश विशेषेंजी ॥
बो०॥सुहणेपीण नवि दिसेजी ॥ बो० ॥ गृह
तल बांध्यो शीसेजी ॥ बो० ॥ किम धर्यो
गर्भ जगीशेजी॥बो०॥ के इहांरहि कोई देव
आराध्यो, पियुविण थयोजे पुत्र ॥ पी० ॥
॥ बो० ॥२ ॥जैनधर्मी कहेवाइजी॥ बो०॥ कर
णी भली कमाइजी ॥ बो० ॥ कुलने लाज
लगाइजी ॥ बो० ॥ हुं धन्यजे तुझपाइजी
॥ बो० ॥ मुझनेतें चरणें नलगाड्यो,
बोळीहती किणें मुख॥ पी० ॥ बो०॥ ३ ॥ तात
कवणछे एहनोजी॥ बो०॥ एअंगजछे केह नो
जी॥बो०॥सोंपो होवे जेहनोजी॥ बो०॥गृह प
ण सेवो तेहनोजी ॥ बो०॥पूरो तुमारो अमथी
नपडे, छो तुमे देवीसरूप ॥पी० ॥ बो०॥४

क्रोधेंकरी राय घास्योजी॥वो.॥ ऊंचे श
ह्द पुकास्योजी॥वो.॥नृप कहे इम अवि
चारयोजी॥वो.॥तू जीती हु हारयोजी॥
वो॥फिट कुलहिणा निर्लज्ज निगोडी, उ
भी सु मुखलेय॥पी.॥वो.॥५॥इ पिण
चूको पहेलीजी॥वो.॥जे योगण गई मेली
जो॥वो.॥तस सोंपत करी चेलीजी॥वो.॥
होत तदा तु सेलीनी॥वो.॥पिण योगण
ना पेटमा उभी, होत तु नारि निदान॥
पी०॥वो०॥६॥वोली नाइशुं नारीनी॥
वो०॥इम काकहो अविचारीनी॥वो०॥
जाउ तुम वलिहारीजी॥वो०॥मकहो व-
हतु भारीजी॥वो०॥ए अगजछे स्वामी
तुमारो, मतआणो विक्षेप॥पी०॥वो.॥
॥७॥हुछ राउली दासीजी॥वो॥छु तु
म ननमी विलासीजी॥वो॥तुम करुणा

अभ्यासीजी ॥ बो० ॥ थयो सुत एमुविला
सीजी ॥ बो०॥ आपण किहां मिल्याहता स्वा
मी, जुउ उघाडी नेंण ॥ पी० ॥ बो० ॥ ८ ॥
तुमे चूकोकां कामीजी ॥ बो० ॥ हुं किम चू
कुं स्वामीजी ॥ बो० ॥ मुझमां नांहि कांई खा
मीजी ॥ बो० ॥ सहि जाणो गुणधामीजी ॥
बो० ॥ कहोतो तुमारी दियुं सहिनाणी, ता
रे मानसो साच ॥ पी० ॥ बो० ॥ ९ ॥ भाखे
भूप भराडोजी ॥ बो० ॥ त्रिय मत बोलो
आडोजी ॥ बो० ॥ मुझ सहिनाणी सरा
होजी ॥ बो० ॥ होएतो कोई देखाडोजी ॥
बो० ॥ तव तिणे हार नामांकितमुद्रडी,
दीधी पिउडाने हाथ ॥ पी० ॥ बो० ॥ १० ॥
तव नृप विस्मय ग्रहियोजी ॥ बो० ॥ नी-
चो जोइने रहियोजी ॥ बो० ॥ पाछो फिरी
॥ बो० ॥ कांईक

जी॥वो०॥सा कहे जीवन ऊचो जूवों, लाजोका महाराज॥पी०॥वो०॥११॥जुउ मुद्रडी सारीजी॥वो॥निरखो हार निहा- रीजी॥वो॥होवे सहिनाणी तुमारीजी॥ वो०॥वोलो जाऊहु वारीजी॥वो०॥ नृप चिंते एधाणी माहरी, इहा किम एहने पा- स॥पी॥वो १२॥ एहने मुद्री नदीधी- जी॥वो॥तो इणे किहाथी लीधीजी॥वो ॥इणे कोई बुद्धि कीधीजी॥वो०॥रही नथी दीसती सीधीजी॥वो॥मोहनविजयें सुदर भाषी, बेतालीसमी ढाल॥पी॥वो॥१३॥

दूहा॥मानतुगकहे नारिने, प्रिया मा- पो निरधार॥तारेपासे किहा थकी, मुझ मुद्रीने हार॥१॥तुझ मुझ मेलो सुहणे, पिण नथयो एकवार॥तोसहिनाणी माहरी, कि- म पामी तंनार॥२॥एतो कौतुक वातडी

तैंकीधी सुजगीश॥ केह साचुं मुझ आग लें, गुनह कर्यो बगशीस॥ ३॥ तव सा मानवती सती, करी घुंघट पटलाज॥ कर जोडी पिउने कहे, वातसुणो महाराज॥४॥

॥ढाल अेतालीशमी॥ चंदनकी कटकी भली॥ए देशी॥ जे योगण मिलीहती, तु मने इण पुरमांह॥ पिउडाहोराज, तस च रणे तुमेंलागता, करीने अतिहि उच्छाह ॥पी०॥सुगुणसनेहा सुणो वातडी॥ १ ॥ तुमनेजे टुंबे मारती, पगपग देती गाल॥ पी०॥ ते योगण मत जाणजो, तेहुं हुंती महोपाल॥ पी०॥सु०॥ २॥ अने वलि दक्षि णपंथमां, आव्युंहतुं सरएक॥ पी०॥ खेच- री तिहां परण्या तुमे, एकाकी तजी टेक ।पी०॥सु०॥ ३॥ चरणोदक पीधुं तुमें, थई फेऱ्या वृषभसरूप॥ पी०॥ तोपिण खेचरी

हुहतो भूलाछो तुमे भूप॥पी.॥सु.॥४
रतनवतीने तुमे वलो, परण्या थई भरता
र॥पी.॥तस गुरुणियें तुमने, येठो स्व
ल्यो कसार॥पी.॥सु.॥५॥ गुरुणियें तु
मने मोकल्या, राख्या मास छमास॥पी.
॥तिहां तुमें माण्यो तेहशुं, विषयिक भो
ग विलास॥पी.॥सु.॥६॥ गुरुणियें ग
र्भ तुमारडो, धार्योहतो सुविचार॥पी.॥
तस सहिनाणी दीधी तुमें, यमुद्रडी ए
र॥पी.॥सु ॥७॥ तोंपण गुरुणी हु
ती, कोजीन हूती कोय॥पी.॥ जेतमे ि
हा दीधी हती, ते सहिनाणी जोय॥पी
॥८॥ जो खोटुं येहमा होवे, तो घाल
माहरे गोद॥पी ॥ हु तेहीज तेहीज त
मे, विसरी गयाशु विनोद॥पी.॥सु.॥९
पाल्यामें माहरा मोकल्या, साभलो खोल

राजायें तिणिवार ॥ विरह टल्या दंपति मिल्या, हुउ जयजयकार ॥ ७ ॥

॥ ढाल चंमालीशमी ॥ छेडोनांजी एदेशी ॥ मानतुंगने मानवतीनें, रंगरली थइ सारी ॥ मांहोमांहे वातां मांडी, कंते कपट निवारी ॥ १ ॥ अलगा रहोने, हांरे मुने शाने बोलावो ॥ अ० ॥ हांरे सा मानवती इम भाखे ॥ अ० ॥ एटेक ॥ पहिला लाड लडावी मुझनें, हिवे कां बोलावो वाहालां ॥ एकथंभो घरनां जे दुखडां, शालेछे थइ मालां ॥ अ० ॥ २ ॥ इजत माहेरी शोकयो माहें, सो पियुडा तुमे राखी ॥ काढी नाखी हूं ति अलगी, जिम घृतमांथी माखी ॥ अ० ॥ ॥ ३ ॥ हसी करी तव पीउडो बोले, गुही रे सादे गाढे ॥ हजी लगण तुं वांक अमारो, बेठो [illegible] काढे ॥ अ० ॥ ४ ॥ ए

ती मान मुकाव्यो, वलि कहोलो दावे ॥ कहे तो परगट पाए लागु, पिणका निपट कहावे ॥ अ० ॥ ५ ॥ मानवती तव पियुनें पाए, लागी हसीने ताम ॥ दोगंधक सुरनीपरें वेहु, विलसे सुख अभिराम ॥ अ० ॥ ६ ॥ हसे रमेगाए करे क्रीडा, वन उपवन जई खेले ॥ एक येकनें नयणथी अलगा, कोइ कोईनें नमेले ॥ अ ॥ ७ ॥ नित नित नौतन वेस बनावे, शोक्यो सवि अवटाये ॥ पिण कोईनुं वल नवि चाले, अणख करेसुं थाये ॥ अ ॥ ८ ॥ राजा मानवतीने नेहें, अहनिश रहे लपटाणो ॥ जिम पंकजनें फूलें लीनो, भमररहे लोभाणो ॥ अ० ॥ ९ ॥ बालकनुं पिण नाम समर्प्युं, मदनभ्रम सुखकारी ॥ अनुक्रमे सुतने भणवा मुक्यो, सिख्यो कला अतिसारी ॥ अ० ॥ १० ॥ मान

जोवो में इणेमींदर रह्यां, केहवां कीधांछे काज ॥ पी० ॥ सु० ॥ ११ ॥ ए अंगजछे राउलो, खोले लीउ साम ॥ पी० ॥ हिवे संदेह मत्तआंणजो, जेए भुंडोछे वाम ॥ पी० ॥ सु० ॥ १२ ॥ हुंछुं पगनी मोजडी, तुमेछो शिरनामोड ॥ पी० ॥ हुं कंटाली बावली, तुमेंछो सुरतरु छोड ॥ पी० ॥ सु० ॥ १३ ॥ हुंछुं रात्री जेहवी, तुमेंछो दीपक साफ ॥ पी० ॥ जे अविनय कीधो हुवे, तेकरजो पीयु माफ ॥ पी० ॥ १४ ॥ एक वचनने आमले, तुमथी में खेडीजोर ॥ पी० ॥ चाहोते मुझने करो, हुंलुं राउली चोर ॥ पी० ॥ सु० ॥ १५ ॥ तुमे तो जाण्याएं कामनी, केम छेतरसे मोय ॥ पी० ॥ होतांतो होये प्रभु, मतकरजो अंदोय ॥ पी० ॥ १६ ॥ मानवंतीनां बोलडां, सांभलिया भूपाल ॥ पी० ॥ मोहनविजयें ए

कही, अेतालीसमी ढाल॥सु०॥१७॥

दुहा॥कर्ते निज कातातणी, सुणी वा त सुविचार॥मुखमें घाली अगुली, धूणे शिर तिणिवार॥१॥महिपति चिंते चित्त मा, अहो अहो नारिचरित्त॥मुझने इणें धूल्योखरो, कठिन करीनें चित्त॥२॥हिवे नवि छेडु पहने, घर सरखी नहि जात॥जोहिवे छेडु एहने, तोवलि खेलें घात॥॥३॥जोजो वुद्धिसी केलवी, मुझने लगा व्यो पाय॥सुतपण सहेजें सापव्यो, थयो इहा धर्म सखाय॥४॥इम चिंती ऊठ्यो नृपति, आव्यो तव दरबार॥हयगयरथ सिणगारिया, सुभटादिक तिणिवार॥५॥इम आडवर करी घणो, मूक्यो सचिव तिणे गह॥तेडी आवो अतेंउरे, मानवती धरि नेह॥६॥इप महोच्छव वहु कस्यो,

षती जिनमंदिर सुंदर, खरचे दाम सुभा
वे ॥ जिनभाषित समकित आराधे, भावें
भावना भावे ॥ अ० ॥ ११॥इम दंपती-वि
षयालुं रमतां, केई दिवस गमाया ॥ एहवे
धर्मघोष गुरु फिरता, पुरनें परिसर आ-
या ॥ अ० ॥ १२ ॥ मानतुंगने मानवती
बेहु, पाम्या मंगलमाल ॥ मोहनविजयें रू
डी भाखी, चंमालीसमी ढाल॥ अ० ॥१३॥
दुहा ॥ पुरजनऋषिनें वांदवा, पोहोता
धन्नपझार ॥ भुपें कारण पुछिउं, तेह कहे
सुविचार ॥ १ स्वामी तुम वनमें सुभग,
श्रीधर्मघोष ऋषिराय ॥ तस पदपंकज प्र
णमवा, नागरिक तिहां जाय ॥ २ ॥ नृप
पिण मानवती प्रमुख, लेई निज परिवार॥
बहु आडंबरें वांदवा, आव्यो तिहां वसुधा
र ॥ ३ ॥ पंचाभिगम साचवी, प्रणम्या ऋ

पिने ताम॥ राजा मानवती प्रभृति बेठा उ
चिते ठाम॥ ४॥ धर्माशीष देइ करी, प्रार-
भे उपदेश ॥ भविक तरे ससार जिम, ते
उपदेश विशपे ॥ ५ ॥

॥ ढाल पचेतालीशमी ॥ भविजन ध-
र्मकरोरे, भविजन धर्मकरो॥ पापेका पिंड
भरोरे, ए हित शीखधरोरे॥ जेम शिवना
रवरोरे, भविजन धर्मकरोरे॥ धर्मकरो॥ए
आकणी॥ कूडी माया कूडी छाया, कूडा बां-
धव लोक, कूडी जेहवी वादल छाया॥ गते हो
ए फोकरे, भविजन धर्मकरो॥ १॥ पखीनीपरे
मेलोमिलिउ, उडता केही वार॥ तेम सगाइ
स्वारथ केरी, मिटता स्यो विचाररे॥ भ० ॥
॥ २ ॥ तात कहे कोइ मात कहेको, दास
कहेको स्वाम ॥ थोडे थोडे वेहेचो लोचो,
आतमने सुख आमरे॥ भ०॥ ३॥ प्रीत क

रीको वैर करोको, साच करोको कूड ॥ थासे सहुने अंते आखर, धूल भेली ए धूल रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ आणथी वालो जाणियें जेहने, राखीये नेह निग्रंथ ॥ ते पिण पूछवा नरहे ऊभो, जातां लांबे पंथरे ॥ भ० ॥ ५ ॥ केइ गयाने केइ जासे, केई जावणहार ॥ इणी वाटे पुंण्य विहुणा, मानवीया अणपाररे ॥ भ० ॥ ॥ ६ ॥ भूपतणी पिण रंकतणी पिण, आखर एकज वाट, साथें आवे सुकृत कीधुं, उतरतां भवघाटरे ॥ भ० ॥ ७ ॥ काचा कुंभतणो स्यो भरोसो, धननो केहो मद ॥ संध्याराग तणीपरें देखत, उवटी जाय असदरे ॥ भ० ॥ ८ ॥ दस दृष्टांतें मानवकेरो, पाम्यो जनम कदाय ॥ ए अवतार करी फिरी दुर्लभ, भ्रमराक्षरनें न्यायरे ॥ भ० ॥ ९ ॥ दान शीयल तप भाव प्रकाश्यो, चारे भे

दें धर्म॥तेहने आदरे जेभवि प्राणी, तो-
ह सघला कर्मरे॥भ०॥१०॥आप आप
नें तुव तरसो, इहां नाहि कोइ सखाइ॥
पाप करीतो जोइने करजो, ते अधिकार
कहाइरे ॥ भ० ॥ ११ ॥ इम उपदेश सु-
णीनें राजा, प्रतिबोध पाम्यो तिवार॥क
रजोडी आपिनें इम भाखे, वीनतडी अवधा
ररे॥भ ॥१२॥मानवतीयें मुझनें स्वामी,
पाय लगाड्या केम॥पाल्या बोल इणें मु
झसेंति, कारण कहो तस तेमरे॥भ ॥
॥१३॥माहरू चूक्यु काइ नचाल्यो, तेसा
माटे स्वामी॥एह कथानो आस घो मुझ
ने, कहुछु हु शिरनामीरे॥भ ॥१४॥गु
रुकहे तुम विहुनो पूरवभव, साभल वहुं
भूपाल॥ मोहनविजयें भापी रूडी, पें-
तालीसमी ढालरे॥भ०॥१५॥

दुहा॥ कहे गुरु जंवुद्वीपमां, क्षेत्र भरत कहेवाय॥ प्रथ्वीभूषणपुर तिहां, तिलकसेन तिहां राय॥ १ ॥ धनदत्तसेठ वसे तिहां, तुमे अंगज तसबाल॥ वड बंधव जिनदत्त जी, न्हानोते जिनपाल॥२॥अनुक्रमें जिनपालने, सद्गुरु मिल्या सुजाण॥ लीधो तेहना मुखथकी, मृषावाद पच्चखाण॥ ३ ॥ कूड न बोले वणजतां, हसतां नकहे कूड ॥ जाणे इम जिनपाल मन, जिहां कूड तिहां धूड ॥ ४ ॥ सत्यवदे व्यापारमां, लाभ, उपावे नांहि ॥ छानो धर्म्मकरे सदा, मुगन रहे मनमांहि॥ ५ ॥ वडबांधव जिनदत्त जई, बेठो नांभा जोट॥ अधिक लाभ देखे नांहि, देखे साह्मी खोट॥ ६ ॥ तेडीने जिनपालने, पूछे जिनदत्त एम॥ लाभ अधिक दूरें रह्यो, खोट गई पिण केम॥ ७॥

दें धर्म ॥ तेहने आदरे जेभवि प्राणी, तो-
ड सघला कर्मरे ॥ भ० ॥ १० ॥ आप आप
नें तुव तरसो, इहा नाहि कोइ सखाइ ॥
पाप करीतो जोइने करजो, ते अधिकार
कहाइरे ॥ भ० ॥ ११ ॥ इम उपदेश सु-
णीनें राजा, प्रतिबोध पाम्यो तिवार ॥ क
रजोडी ऋषिनें इम भाखे, वीनतडी अवधा
ररे ॥ भ ॥ १२ ॥ मानवतीयें मुझनें स्वामी,
पाय लगाड्या केम ॥ पाल्या बोल इणें मु
झसेंति, कारण कहो तस तेमरे ॥ भ० ॥
॥ १३ ॥ माहरु चूक्यु काइ नचाल्यो, तेसा
माटे स्वामी ॥ एह कथानो आस धो मुझ
ने, कहुंछु हु शिरनामीरे ॥ भ० ॥ १४ ॥ गु
रुकहे तुम विहुनो भूरवभव, सामल कहु
भूपाल ॥ मोहनविजयें भापी रूडी, पें-
तालीसमी ढालरे ॥ भ० ॥ १५ ॥

दुहा॥ केहे गुरु जंबुद्वीपमां, क्षेत्र भरत कहेवाय॥ पृथ्वीभूषणपुर तिहां, तिलकसेन तिहां राय॥१॥ धनदत्तसेठ वसे तिहां, तसु अंगज तसबाल॥ वड बंधव जिनदत्त जी, न्हानोते जिनपाल॥२॥ अनुक्रमें जिनपालने, सद्गुरु मिल्या सुजाण॥ लीधो तेहना सुखथकी, मृषावाद पच्चखाण॥३॥ कूड न बोले वणजतां, हसतां नकहे कूड॥ जाणे इम जिनपाल मन, जिहां कूड तिहां धूड॥४॥ सत्यवदे व्यापारमां, लाभ, उपावे नांहि॥ छानो धर्मकरे सदा, मुगन रहे मनमांहि॥५॥ वडबांधव जिनदत्त जई, बेठो नामा जोट॥ अधिक लाभ देखे नहि, देखे साहमी खोट॥६॥ तेडीने जिनपालने, पूछे जिनदत्त एम॥ लाभ अधिक दूरे रह्यो, खोट गई पिण केम॥७॥

॥ ढाल सेंतालीशमी ॥ जिनदत्त भा- खेरे एम जिनपालने, रेरे मुरख भाइरे ॥ व्यापार एहवोरे किहा तू शीखियो, किहां सिख्यो एह कमाईरे॥ जि०॥ १ ॥ ए व्या- पारेंरि पूरु पाडवु, करसो केमकरी वीररे ॥ केसु लुञ्च्योरे परदारायकी, इणे गुणे था सो फकीररे॥ जि० ॥ २ ॥ साचु कहे तूरे ध न किहा वावर्यो, तवबोल्यो जिनपालरे ॥ द्रव्य कुठामेरे में नथी वावरयो, खोटीकरे तू षकचालरे ॥जि ॥ ३ ॥ धननी तृष्णारे जो छे तुझने, तो तुमे करो रोजगाररे ॥ करसो सुं तुमे घर सोवनतणा, लेई जासो साथे एभाररे॥ जि० ॥ ४ ॥ धनते रहेसेरे व्यापीने धरा सगे काई नही आवेरे ॥ आवसे सा- थेरे अघने अनर्थ ए, लूणे जेहवो कण वे वे ॥ जि_ ॥ ५ ॥ मेंतो दीठोरे सघलो कार

मो, रे बांधव गुणवंतरे ॥ परने मुसवोरे मु जथी नवी होए, कहुंछु तुमनें एकंतरे ॥ जि॰ ॥६॥ इम बांधव जनपालनां बोलडा, जिनदत्त सांभली कोप्योरे ॥ भाईने माटेरे कहियें कोईने, तामस अतिघणो व्याप्योरे ॥ जि॰ ॥७॥ पांचसेरी जिनपालभणी तदा, पापी जिनदतें नांखीरे ॥ लागी तेहरे कोय कुठामनी, लघु बांधव रह्यो सांखीरे ॥ जि॰ ॥८॥ काल कस्यो जिनपाले प्रहारथी, कीधो लघुभव एकरे ॥ बीजे भवेंत जीव चवी थयो, मानवंतो सुविवेकरे ॥ जि॰ ॥ ॥९॥ हिवे जिनदत्तरे बांधव विरहथी, केते कालें विपन्नरे ॥ उपनो जीवते राजपणे इहां, नृप तूंहीज उत्पन्नरे ॥ जि॰ ॥ १० ॥ पूरव जन्मने वैर वसेकरी, तें एहने दुःख दीधोरे ॥ इणे पिण पूर्वेरे सत्यवचन थकी,

बोल सुबोलते कोधोरे ॥ ११ ॥ नृपकहे कू
ह वचन विरम्यातणो, एहवोछे फल स्वा
मीरे, तोपता दिन फोगट हु रहियो, भू
लो भम्यो भव कामोरे ॥ जि. ॥ १२॥ ऋषि
तव भाखेरे एहवा व्रतअछे, पच भला अ
ने वाररे ॥ अधिक फल तेहतणा अछे, द्वि
तीय एह व्रत साररे ॥ जि ॥ १३ ॥ बीजा
व्रतथीरे पिण कोईतरथा, पाम्या मुगती-
नो ठामरे ॥ गुरुना मुखथकी वचनसुणी इ
स्या. वीनवे नरपति तामरे ॥ जि. ॥ १४ ॥
स्वामी तारोरे मुझने ससारथी, दियो दी
क्षा सुविसालरे ॥ मोहनें भापीरे वैरागरग
नी, सेंतालीशमी ढालरे ॥ जि० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ राज्य समर्पी पुत्रने, मानतुग म
हिपाल ॥ सुदरी साथे सचरी, थयो दीक्षा
रजमाल ॥ १ ॥ मानवती नृपतिसहित,

परिहरे राज्य तिवार॥चरण ग्रहे मुनिवर कने, जाणी अथिरसंसार॥२॥ पंचमाहाव्रत परगडा, पाले निरतीचार॥ विनयादिक सवि अभ्यसे, करता उग्रविहार॥३॥ मानतुंग मुनिवर थयो, द्वादशअंगी जाण॥ मानवती साधवी भली, संजम वहे सुजाण॥४॥ पंचमाहाव्रतनें उभय, नविहुं लागडे दोष॥ शत्रु मित्र सरखा गिणे, धरे सदा संतोष॥५॥ पाठांतरे॥ सत्तर भेद संजमतणा,॥ पाले विरती चोख॥ शत्रु मित्र सरिखा गिणे, धरे दीस संतोष॥६॥

॥ढाल सत्ततालीशमी॥ वाथाना भाव सनीदेशी॥ शम दम खंति तणा गुणपूरा, संजमरंगे रंगाणा है॥ ससनेहा भ बीजुं व्रत चित्तलाइयें॥ एआंकणी॥ पूनो खप करता विचरे, पाले

आणाहे॥ १ ॥ स० ॥ राजऋद्धि गृहवासत
णा सुख, ते सुहणे नविचारेहे ॥स० ॥ जिम
आहिकचुकी विरमो अलगी, तिम फिरीने
न निहारेहे ॥ स० ॥ २ ॥ मानतुंग ऋपि मा
नवती तिम, मोहादिकने रोहेहे ॥ स० ॥क
रे विहार भलो जिनकल्पी, भवियणने प-
डिवोहेहे ॥ स० ॥ ३ ॥ अनुक्रमें मासतणी स
लेपण, करिने बिहु गहगहताहे ॥ स० ॥
अयर तेंत्रीसने आयु समूहे, सवठसिद्ध पो
होताहे ॥ स० ॥ ४ ॥ तिहाथी पिणते बेहु च
वसे, महाविदेहे अवतरसेहे ॥ स० ॥ मनुष्य
जनम लहेसेते रुडु, उत्तम करणी करसे-
हे ॥ स० ॥ ५ ॥ लेसे दीक्षा वरसे केवल, र
चसे सुरपति कमलाहे ॥ अंते मुगति लेसे
बिहुए, जेहें शास्त्रमा विमलाहे ॥ स० ॥६॥
नउ मानवतीयें पिउने, इणभवे पाय लगा

ध्योहे ॥स० ॥ एके वचन वृथा नवि हूउं, अंते शिवपद पाम्योहे ॥ स० ॥ ॥७॥ इहलोके परलोकें सुखनो, दायक व्र तेछे बीजोहे ॥स० ॥ सत्यवचनजे बोले प्रा णी, तेउपर मत खीजोहे ॥स०॥ ८ ॥ स- त्यवचननां एहवां फलछे, मनमानोते चा खोहे ॥स० ॥मृपावाद परहरवाकेरी, प्र- ज्ञा सहुको राखोहे ॥स०॥९॥ मानतुंगने मानवतीनो, रास रच्योमें रूडोहे ॥स० ॥ लेजो कविजन एह सुधारी, होयेजे अक्षर कूडोहे ॥स०॥ १०॥ मेंतो करीछे बालक क्रीडा, हुंसुं जाणुं जोडीहे ॥स० हासो कौ इ मकरसो कोविद, मतको नाखो विखो- डीहे ॥स०॥ ११॥चउविह संघना आग्र हथ की में, कीधो रास रसीलोहे ॥ स० ॥ जेकोइ भणसे सुणजे प्राणी, ते लहेसे शिवचेलो हे

॥स०॥१२॥समत सतरेसे साठ सुवर्षे, वृद्धिमास शुद्धपक्षेंहे॥स०॥ अष्टमी कर्म्म वाटी उदयिक, सौम्यावर सु प्रत्यक्षेंहे॥ स ॥१३॥ श्रीविजयसेनसुरिपाय सेवक, कीर्तिविजय उवजायाहे॥स०॥तास शीस सजम गुणलीना, मानविजय वुद्ध रायाहे ॥स ॥१४॥तास शिष्य पद्दित सुकुटम णि, रूप विजय कविरायाहे॥स० ॥तास चरण करुणाथी करीने, अक्षरगुण में गा याहे॥स०॥१५॥अणहिल्लपुर पाटणमा र हिने, मानवतीगुण गायाहे॥स ॥दुर्ग दास राठोडने राजे आणद अधिक उपा याहे॥ स ॥१६॥सडतालीसें ढालें करीने, कीधो राम रसालाहे ॥स ॥मोहनविजयकहे नि त होजो, घरघर मगल मालाहे॥ स०॥१७॥

इति मानतुग मानवती रास समाप्त ॥

अगाऊ सही देवण वाळानें किंमत.

पोथीया छपावणी छे तिणारो तपसील.

१ श्री जैनधर्म सिध्धात सार पुस्तक. ....किंमत १। रुपाया।.
१ श्रीपाळ राजाको चरीत्र अथ साहित किंमत ॥ १४ आणें.
२ श्रीपाळ राजाको रास च्यार खडको किंमत ॥१० आणें.
१ श्रीराम चारित्र ... ... किंमत १ रुपाया.
४ चंद राजाकी चोपाई .... किंमत ॥ १४ आणें.
५ करकंडू आदिकच्यार राजाको रास किंमत ॥५ आणें.
५ मकतावर ... ... किंमत ॥६ आणें.
६ चंद्रगुप्त राजाकी चोपाई ... . किंमत ॥४ आणें.
७ रतन कवरकी चोपाई .... किंमत ॥४ आणें.
८ केवली नाथजी कयवन्नाशेठकी चोपाई किंमत ॥४ आणें.
९ एलापुत्रकी चोपाई तथा विजय शेठ विजया रे ाणीका चोढाळीया . ... किंमत ॥४ आणें.
१० उत्तम चारित्र कुमारकी चोपाई किंमत ॥४ आणें.
११ विविधपूजा छोटी तथा विसस्थानकजी पुजा किंमत ॥४ आणें.
१२ सिलोका सग्रह भाग १ ला .... किंमत ॥५ आणें.
१३ स्तवन मझाय सग्रह भाग २ जो किंमत ॥४ आणें.

फेर नवा नवा पुस्तक छपावेना छे.

मारवाडी तथा गुजराथी हस्त अक्षरका कीत्ता.

एकमतकी किंमत ॥— आणा.

इण रातसु पुस्तक छपावणाछेसु आगाऊ सही सुमार १०० चाहे. जे सही आयासु छापणने सुरवात हुसी पुस्तक तयार हुया पछे लेवणारन पुस्तगरी किमत उपर लिख्या किमतसुं दिढपट ज्यास्त पडसी.

नाना दादाजी गुंड पुणें.